अंक-विद्या (ज्योतिष)

(NUMEROLOGY)

लेखक

ज्योतिष कला-निधि, दैवज्ञशिरोमणि

पण्डित गोपेश कुमार ओझा

एम.ए., एलएल. बी.

(हस्तरेखा-विज्ञान, वर्ष-फल, सुगम ज्योतिष प्रवेशिका, 1000 Aphorisms on Love and Marriage (Part I Western Astrology, Part II Hindu Astrology), व्यापार रत्न (भाग २), फल दीपिका आदि पुस्तको के रचयिता)

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: पटना :: वाराणसी

प्राक्कथन

"वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः ।
अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गतिकोविदम् ॥"

जो सर्वसग परित्याग कर वन का समाश्रय ले चुके है, ऐसे रागद्वेष-शून्य, निष्परिग्रह मुनिजन-सत-महात्मा भी ज्योतिप शास्त्र वेत्ताओ से भविष्य ज्ञात करने के लिये उत्सुक रहते है, तव साधारण ससारी प्राणी की तो चर्चा ही क्या ?

प्राय इस भविष्य ज्ञान की प्राप्ति ज्योतिप शास्त्र के द्वारा होती है। ज्योतिप शास्त्र अथाह सागर है। जन्म-कुण्डली निर्माण के लिये, जन्म का स्थान, ठीक समय का ज्ञान आदि परमावश्यक है। शुद्ध लग्न, भाव-स्पष्ट, ग्रह स्पष्ट, मान्दि स्पष्ट, मित्रामित्रचक्र, सप्तवर्गी चक्र, दशवर्ग, दशा, अन्तर्दशा, अष्टक वर्ग, सर्वाष्टक वर्ग आदि वनाने में बहुत गणित करना पडता है, और परिश्रम साध्य है। फलादेश मे भी अनेक विचारो का सामञ्जस्य करना पडता है। वृहत् ज्योतिष शास्त्र की परिक्रमा लगाना वैसा ही कठिन है जैसा पृथ्वी की परिक्रमा लगाना।

पृथ्वी की परिक्रमा के सम्वन्ध में पुराणो मे एक कथा[1] है कि एक वार स्वामी कार्तिक तथा गणेश जी दोनो ने आग्रह किया कि उनका विवाह हो। स्वामी कार्तिक चाहते थे पहिले उनका विवाह हो तथा गणेश जी चाहते थे पहिले उनका विवाह। तव उनके माता-पिता ने कहा कि जो पहिले पृथ्वी की परिक्रमा पूर्ण कर आवेगा उसी का विवाह पहिले किया जावेगा। स्वामी

---

१. देखिये शिव पुराण (रुद्र सहिता), कुमार खण्ड १९वॉं अध्याय।

कार्तिक अपने वाहन मयूर पर चढ कर द्रुतगति से चले और देखते-देखते आँखो से ओझल हो गये। गणेश जी का शरीर भारी और वाहन छोटा-सा 'मूषक'। सो विचार मे पड गये कि कैसे परिक्रमा पूर्ण करूँ ? उन्होंने अपने माता-पिता को बैठाया, उनके चरणो का पूजन कर ७ बार माता-पिता की परिक्रमा की और प्रणाम कर कहा कि "मैने पृथ्वी की परिक्रमा कर ली—भाई एक बार भी परिक्रमा करके नही आये। अव पहिले मेरा विवाह कीजिए"। शास्त्रो मे माता-पिता का पूजन और परिक्रमा पृथ्वी-परिक्रमा के समान हैं। इस युक्ति से गणेश जी का विवाह हो गया और उन्हें ऋद्धि, वुद्धि—यह दोनो विश्वरूप प्रजापति की दो सुन्दरी कन्याएँ—पत्नी रूप मे प्राप्त हुई।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो सज्जन ज्योतिष शास्त्र की वृहत् परिक्रमा मे अक्षम है, वह गणेश जी के उपर्युक्त उदाहरण को लेकर "अङ्क विद्या" का अभ्यास करें तो थोडे परिश्रम से —केवल अगरेजी की जन्म तारीख, नाम, किंवा प्रश्न से भविष्य का बहुत-कुछ शुभाशुभ जान सकते हैं। अगरेजी मे Numerology की अनेक पुस्तकें हैं किन्तु हिन्दी मे अङ्क-विद्या (ज्योतिष) की कोई पुस्तक मेरे देखने मे नही आई। अनेक ग्रन्थो का अध्ययन तथा अनुशीलन कर यह पुस्तक पाठको के सम्मुख रखी जा रही है।

"शरणं करवाणि कामदं ते चरणं वाणि चराचरोपजीव्यम्।
करुणामसृणैः कटाक्षपातैः कुरु मामम्ब कृतार्थसार्थवाहम् ॥"

विजया दशमी २०१४
९३ दरियागज, दिल्ली
टेलीफोन न. २७१७२८

विनीत
गोपेशकुमार ओझा

विषय सूची

पहला प्रकरण

दूसरा प्रकरण

अंक-विद्या (ज्योतिष)

पहला प्रकरण

अंक-विद्या रहस्य

संसार में हम जो भिन्न-भिन्न वस्तुएँ देखते हैं, उनके अनेक रूप हैं। विविध रंगों के मिलने से नये रंग बन जाते हैं। लाल और पीला मिलाने से नारंगी का रंग बन जाता है। पीला और नीला मिलाने से हरा। इस प्रकार सैकड़ों, हज़ारों रंग बन सकते हैं, परन्तु इनके मूल में वही सात रंग है जो इन्द्र धनुष में दिखाई देते है। इन सात रंगों के मूल में भी एक ही रंग रह जाता है जो सफ़ेद, किंवा रंगरहित शुद्ध प्रकाश है। सूर्य की प्रकाश रेखा को 'प्रिज्म' में पार करने से सात रंग स्पष्ट दिखाई देते हैं। वैसे, सूर्य की किरण शुद्ध उज्ज्वल बिना रंग के प्रतीत होती है।

इसी प्रकार संसार की जो विविध वस्तुएँ हमें दिखाई देती हैं उनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्त्व है। उनमे तत्वों का सम्मिश्रण भिन्न-भिन्न अनुपात और भिन्न-भिन्न प्रकार से है। किसी मे कोई तत्व कम है, किसी में कोई अधिक। परन्तु यह समस्त जगत् केवल पांच तत्वों का प्रपंच है। यह पाच तत्व भी केवल आकाश से उत्पन्न हुए हैं। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी। पृथ्वी का गुण 'गन्ध', जल का

---

१. त्रिकोण धरातलों का एक घन क्षेत्र।

'रस', अग्नि का 'तेज' (रूप), वायु का 'स्पर्श' और आकाश का गुरण 'शब्द' है। जैसे ससार के सभी पदार्थों के मूल में आकाश तत्व है उसी प्रकार, हम यह कह सकते है कि ससार के सभी पदार्थों का मूल गुरण 'शब्द' है। इसी कारण शब्द को 'शब्द-ब्रह्म'—अर्थात् परम प्रभु परमेश्वर का प्रतीक माना गया है।

परिणामतः तो सब शब्द ब्रह्म के रूप ही हैं किन्तु भिन्न-भिन्न शब्दो का गुरण और प्रभाव भी भिन्न-भिन्न है और प्रत्येक शब्द को अक या सख्या मे परिवर्तित कर उसकी माप की जा सकती है। कोई शब्द (या शब्दावली) ७००० बार आवृत्ति करने पर पूर्णता को प्राप्त होता है तो किसी का १७००० बार आवृत्ति करने पर परिपाक होता है। 'सख्या' और 'शब्द' के सम्बन्ध से हमारे ऋषि-महर्षि पूर्ण परिचित थे, इसी कारण सूर्य के मत्र का जप ७०००, चन्द्रमा का ११०००, मगल का १००००, बुध का ९०००, बृहस्पति का १९०००, शुक्र का १६०००, शनि का २३०००, राहु का १८००० और केतु का १७००० जप निर्धारित किया है। किसी देवता के मत्र मे २२ अक्षर[1] होते हैं तो किसी के मत्र मे ३६। 'शब्द' और 'सख्या' का घनिष्ठ वैज्ञानिक सम्बन्ध है।

इसी प्रकार सख्या और क्रिया का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शून्य संख्या (०), निष्क्रिय, निराकार, निर्विकार 'ब्रह्म' का द्योतक है और '१' पूर्ण ब्रह्म की उस स्थिति का द्योतक है, जब वह अद्वैत रूप से रहता है। कहने का तात्पर्य यह कि 'शब्द' और 'सख्या (अक) मे सम्बन्ध होने के कारण—समस्त पदार्थों के मूल मे जैसे 'शब्द' है—

---

१. देखिये 'मंत्र महोदधि' तृतीय तथा एकादशतरंग; पुरश्चर्यार्णव तृतीय भाग

वैसे ही 'अंक' भी। शब्द के मूल—आकाश को—'शून्य' कहते हैं और अंक के मूल को भी 'शून्य'। 'शून्य' से ही शब्द और अंक का प्रादुर्भाव होता है। यदि 'अंक' (संख्या) का किसी वस्तु या क्रिया से सम्बन्ध नही होता तो हमारे शास्त्र १०८ मणियों की माला बनाने का विधान नही करते। प्रत्येक संख्या का एक महत्व है। २५ मणियों की माला पर जप करने से मोक्ष, ३० की माला से धन सिद्धि, २७ की माला से सर्वार्थ सिद्धि, ५४ से सर्वकामावाप्ति और १०८ से सर्व प्रकार की सिद्धियाँ हो सकती हैं। किन्तु अभिचार कर्म में १५ मणियों की माला प्रशस्त है।[१]

१०८ की संख्या का क्या रहस्य है ? सूर्य राशिभ्रमण में जब एक पूरा चक्र लगा लेता है तो एक वृत्त पूरा करता है। एक वृत्त में ३६० अंश होते हैं। इस प्रकार सूर्य की एक प्रदक्षिणा के अंशों की यदि कला बनाई जावे तो ३६०×६०=२१६०० कला हुई। सूर्य छः मास उत्तर अयन में रहता है और छ मास दक्षिण अयन मे। इस हिसाब से २१६०० को दो भागों मे विभक्त करने से १०८०० संख्या प्राप्त हुई।

अब दूसरे प्रकार से विचार कीजिये। प्रत्येक दिन में सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक 'काल' का परिमाण ६० घड़ी माना है। १ घड़ी के ६० पल और १ पल के ६० विपल। इस प्रकार एक अहोरात्र में ६०×६०×६०=२१६००० विपल हुए। इसके आधे दिन में १०८००० और इतने ही रात्रि मे।

जैसे आजकल की नवीन वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार रुपये,

---

१. देखिये शारदातिलक का २३वाँ पटल—राघवभट्ट कृत पदार्थादर्श व्याख्या।

पैसे, तोल, माप, थर्मामीटर आदि एक ही दशमलव के आधार पर बनाये जा रहे हैं, वैसे ही हमारे प्राचीन ऋषियो ने 'काल' और 'संख्या' का समन्वय किया था। इसी के समीकरण और सामञ्जस्य स्वरूप १०८००० की सख्या उपलब्ध हुई और दशमलव की प्रणाली के अनुसार बिन्दु छोड़ देने से १०८ की सख्या प्राप्त हुई। हमारे प्राचीन ऋषियो ने 'शब्द', काल, संख्या आदि सभी का इस प्रकार सामञ्जस्य कर दिया था कि प्रत्येक नामका—नाम के अक्षरो का संख्या पिंड, बनाने से उसके सब गुण उस सख्या से प्रकट हो जाते थे। इसी आधार पर जय-पराजय चक्र आगे ६ वें प्रकरण मे दिये गये हैं। ऋरिण और धनी—कौन किसका कर्ज़दार है अक-विद्या, मंत्र-विद्या, आदि से सम्बन्ध रखता है, क्योकि देना-पावना संख्या मे ही होता है।[१]

नाम को 'सख्या मे परिवर्तित करना—एक बहुत गभीर विद्या है। आजकल के वैज्ञानिक प्रत्येक भोज्य पदार्थ को "कैलोरी" मे परिवर्तित कर यह बताते हैं कि किस भोजन मे कितना शक्ति-वर्धक साधन है। इसी प्रकार किसी नाम को सख्या मे परिवर्तित करके यह बताया जा सकता है कि कौन से नाम का व्यक्ति, किससे अधिक शक्तिशाली होगा। प्रत्येक व्यक्ति का नाम उस व्यक्ति का प्रतीक है। विद्वानो के मत से मनुष्य जब सोया हुआ रहता है—तब भी उसके चैतन्य की एक कला जगी हुई रहती है। और उसे सावधान या सतर्क किये रहती है। यदि २० मनुष्य एक ही स्थान पर सोये हुए हो तो प्राय' जिसका नाम लेकर आवाज़ दी

१. देखिये "तंत्रसार" तथा "चंडी" अंक ४-वर्ष १२-पृष्ठ ११४

जाती है—वही जग जाता है। 'नरपति जय-चर्चा'[१] नामक ग्रंथ में लिखा है कि मनुष्य के उसी नाम का विचार करना चाहिये जिस से उसे, आवाज़ दी जावे तो वह सोता हुआ जग जावे। 'नाम' और नाम की प्रतीक 'संख्या' अनादिकाल से, फलादेश में उपयुक्त होते रहे हैं।

जिस प्रकार रेडियो की सूई जिस 'संख्या' पर स्थिर कर दीजिये उसी 'संख्या' पर प्रवाहित शब्द रेडियो पर सुनाई देने लगते हैं—उसी प्रकार 'संख्या' विशेष और उस 'संख्या' के प्रतीक 'वस्तु' या व्यक्ति में आकर्षण होता है।

अमेरिका मे नवीन अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि बहुत-से प्रकार के कीड़े, अपने सजातीय कीड़ों को सन्देश या संवाद भेज सकते है—इसका कारण यह है कि जिस प्रकार एक खास संख्या पर सूई स्थिर करने से रेडियो में आवाज़ आने लगती है उसी प्रकार यह कीड़े भी, जो संवाद प्रेषित करते हैं उनको उनके सजातीय कीड़े ग्रहण कर सकते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के कीड़ों को एक बडे बाग़ के अलग-अलग कोनों पर छोड़ा गया है—वह एक ही केन्द्र स्थल पर जाकर मिल जाते है। एक खास प्रकार की मक्खी के झुंड को दो स्थानों पर—परस्पर एक दूसरे से कई मील दूर—छोड़ कर देखा गया है कि वे एक ही स्थान पर आकर मिल जाती है।[२]

या जुगनू को लीजिये। मादा जुगनू के पर नही होते, नर के होते हैं। दोनों के शरीर से प्रकाश निकलता है किन्तु मादा जुगनू के शरीर से अधिक तेज़ रोशनी निकलती है और इस चमक से

---

१. नरपति चर्चा अध्याय २ पृ० १५

जन्म-पत्रिका विधान पृ० २२५

2. "Number Please" by Dr. United Cross पृ० १४, १५

आकृष्ट होकर नर-जुगनू उसके पास आता है। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में परस्पर क्यो आकर्षण या घृणा का प्रादुर्भाव होता है—यह स्थूल दृष्टि से नही जाना जा सकता। किन्तु सब के मूल मे वैज्ञानिक रहस्य है।

जगल मे दाना डाल दीजिये। चिड़िया और कबूतर आजावेगे। चीनी फैला दीजिये, चीटियाँ इकठ्ठी हो जावेंगी। मरा हुआ जानवर डाल दीजिये, गृद्ध और चील आकाश को आच्छादित्त कर लेगी। और कही रात्रि मे बकरा, या पाडा बाँध दीजिये तो शेर, शिकार के लिये आजावेगा। चीनी पर शेर नही आता। बँधे हुए बकरे की खुशबू से चिडियां नही आती। इसी प्रकार '१' द्योतक की सख्या या वस्तु की ओर उसके सहधर्मी आकृष्ट होते हैं। '६' द्योतक संख्या या वस्तु या व्यवित की ओर '६' के सहधर्मी आकृष्ट होगे, अन्य वर्ग के नही। जिन व्यक्तियो या वस्तुओ मे साधर्म्य होता है उनमे परस्पर आकर्षरण भी होता है, यह सामान्य नियम है। एक बच्चा यह नही समझता कि भिन्न-भिन्न ऋतुओ का भिन्न-भिन्न वस्तुओं और व्यक्तियो से क्या सम्बन्ध है, परन्तु जानने वाले जानते ही हैं कि आम गर्मी मे पकते हैं और सतरे जाडे मे।

कम उम्र का बच्चा, चिड़िया, कमेड़ी, कबूतर सब को 'चिडिया' कहता है; परन्तु चिड़िया चिड़े के साथ ही जाकर रहेगी, कबूतर कबूतरी के साथ ही। इसी प्रकार अक-ज्योतिष से अनभिज्ञ सब अको को एक-सा समझते हैं, परन्तु इस विद्या को जानने वाले यह जानते है कि '१' मूल-अंक वाले व्यक्ति को '१' मूल-अक शुभ जावेगा और उसकी विशेष मित्रता भी '१' मूल अंक वाले व्यक्ति से होगी तथा '६' मूल अक वाले व्यक्ति को '६'

मूल-अक की सख्या शुभ जावेगी और उसकी विशेष मित्रता भी '६' मूल-अक वाले व्यक्ति से होगी ।

नाम और 'संख्या'—नाम और 'जन्म-तारीख' या यह कहिये कि व्यक्ति, वस्तु और सख्या में जो सामञ्जस्य है उसी कारण किसी व्यक्ति के जीवन मे या यो कहिये किसी राष्ट्र के जीवन में किसी 'सख्या' विशेष का महत्व हो जाता है। इसको हम केवल 'कल्पना' या 'सयोग' कह कर नही टाल सकते। आगे के प्रकरणों मे इसके अनेक उदाहरण दिये गये है।

मकड़ी जाला बुनती है—बुनते समय कोई क्रम दिखाई नही देता, परन्तु बनने पर क्रम नजर आता है। मधु मक्खियाँ छत्ता बनाती है, वाहर से कोई क्रम नज़र नहीं आता परन्तु भीतर कितना अधिक और सूक्ष्म क्रम रहता है, यह केवल इस विषय की पुस्तको को पढने से ही मनुष्य जान सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे एक बच्चे की दृष्टि मे—डाकिये के हाथ की सब चिठ्ठियाँ एक सी मालूम होती हैं, परन्तु डाकिया उन्हे मकान के नम्बर और नाम के क्रम से बॉट देता है, उसी प्रकार हमारा जीवन—प्रत्येक का भिन्न-भिन्न 'अंकों' के क्रम से चलता है और जब वह 'सख्या'—उस 'सख्या' का द्योतक वर्ष या दिन आता है, तो हमारे जीवन मे महत्त्व पूर्ण घटना होती है। इस अंक-विद्या का पूरी तरह उद्घाटन करना सभव नही। भगवत् गीता में १८ अध्याय ही क्यों है ? महाभारत मे १८ पर्व ही क्यों ? १८ पुराणों की-सख्या का वैज्ञानिक आधार क्या है ? इस '१८' की योग संख्या १+८=९ है। यह क्यों ? हमारे ऋषि मुनि दिव्य ज्ञान और ऋतम्भरा प्रज्ञा के कारण जो पद-चिह्न छोड़ गये हैं, हम तो केवल

उनका अनुसरण मात्र ही कर सकते हैं। श्रीमद् भागवत मे १२ स्कन्ध ही क्यो हैं ? दशम स्कन्ध इतना बडा होगया कि उसे 'पूर्वार्ध' और 'उत्तरार्ध—इन दो खडों मे विभाजित करना पड़ा। ऐसा न करके १३ स्कन्ध ही क्यो न कर दिये ? रामायण का नवाह (९ दिन मे पारायण) तथा भागवत का सप्ताह (७ दिन मे पारायण) क्यो ? गायत्री मे २४ अक्षर ही क्यो हैं ? विवाह के समय 'सप्त-पदी' ही क्यो होती है। गणेश की चतुर्थी, दुर्गा की अष्टमी, सूर्य की सप्तमी, विष्णु की एकादशी तथा रुद्र की प्रदोष-व्यापिनी त्रयोदशी ही क्यो ?—आदि अनेक ऐसे अक-विद्या सम्बधी वैज्ञानिक विषय हैं जिनका विवेचन करना, इस छोटी सी पुस्तक मे सभव नहीं। अक-विद्या का रहस्य इतना गभीर है कि इसमे जितना अधिक नीचे उतरेंगे उतने ही बहुमूल्य रत्न हाथ लगेंगे। यदि आप इसके नियमो का अध्ययन कर, अपने स्वय की जीवन की घटनाओ से यह नतीजा निकाल सके कि कौन से दिन, और तारीख़ आप को 'शुभ' या 'अशुभ' जाती हैं तो केवल इस ज्ञान से आप अपने को बहुत लाभ पहुँचा सकते हैं। हाँ, यह कह देना आवश्यक है कि जिस प्रकार एक साधारण नियम होता है और उसका अपवाद होता है, उसी प्रकार अक-विद्या के जो साधारण नियम बताये गये हैं उनके अप-वाद भी होते हैं। कभी-कभी उस अक वाले दिन या वर्ष मे, वह 'अक' तो शुभ फ़ल दिखाने की चेष्टा करता है किन्तु किसी अन्य ग्रह के प्रभाव के कारण फल ठीक नही बैठता। इससे अनुत्साहित नही होना चाहिये। गभीर अध्ययन तथा धैर्य पूर्वक लम्बे समय तक फल मिलाने से—कौनसा 'अक' शुभ है कौन सा अशुभ—यह अनुभवसिद्ध हो जाता है।

दूसरा प्रकरण

क्या अंक-विद्या में कुछ सत्यता है ?

बहुत से लोग इस बात मे विश्वास नही करते कि कुछ समय के बाद एक-सी घटना घटित होती है। परन्तु बहुत बार ऐसा देखा गया है कि आज जो घटना घटित हुई ठीक वैसी ही कुछ वर्ष पूर्व हुई थी। बहुत से लोग यह तर्क करते है कि ऐसा केवल संयोगवश हो गया। परन्तु बहुत बार जब उतने ही वर्ष के फासले पर बारंबार एक-सी घटना घटित हो तो उसे हम केवल 'संयोगवश' कह कर नही टाल सकते। नीचे इसी प्रकार के एक घटनाचक्र की कुछ प्रधान-प्रधान घटनाओं का विवरण दिया जाता है। इसको देखने से विदित होगा कि एक या दो नहीं परन्तु एक के बाद दूसरी—दसो घटनाएँ ५३९ वर्ष के अन्तर पर घटित हुई।

(क) सेंट लूई का जन्म (२३ अप्रैल २+३=५)	सन्	१२१५
		५३९
लूई XVI का जन्म (२३ अगस्त २+३=५)	सन्	१७५४
(ख) सेंट लूई की बहिन 'ईसा बेला' का जन्म	सन्	१२२५
		५३९
लूई XVI की बहिन 'ईसा बेला' का जन्म	सन्	१७६४
(ग) सेंट लूई के पिता की मृत्यु	सन्	१२२६
		५३९
लूई XVI के पिता 'डाफ़िन' की मृत्यु	सन्	१७६५

(घ) सेंट लूई की बादशाहत का प्रारंभिक काल	सन् १२२६
	५३९
लूई XVI की बादशाहत का प्रारंभिक काल	सन् १७६५
(ङ) सट लूई का विवाह	सन् १२३१
	५३९
लूई XVI का विवाह	सन् १७७०
(च) सेट लूई को वयस्काधिकार प्राप्त हुए	सन् १२३५
	५३९
लूई XVI गद्दी नशीन हुए	सन् १७७४
(छ) विजेता सेट लूई और इग्लैण्ड के बादशाह हेनरी III मे परस्पर युद्ध के बाद सन्धि	सन् १२४३
	५३९
विजेता लूई और इग्लैण्ड के बादशाह जार्ज III मे सन्धि	सन् १७८२
(ज) एक पूर्व देशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिये सेट लूई के पास आया	सन् १२४९
	५३९
एक पूर्व देशीय राजकुमार ने उपर्युक्त कार्य के लिये अपना राजदूत लूई XVI के पास भेजा।	सन् १७८८
(झ) सेट लूई की हार। उसके साथियों का उसे छोड देना और उसका बन्दी होना	सन् १२५०
	५३९
लूई XVI का उसके दल ने परित्याग कर	सन् १७८९

दिया, वह स्वय भागा किन्तु गिरफ्तार कर
लिया गया ।

(ञ) नवीन धर्मवादियों द्वारा क्रान्ति सन् १२५०
५३९

'जेकब' धर्मवादियों द्वारा धार्मिक क्रांति सन् १७८९

(ट) सेंट लूई की माता (राजमाता) का देहान्त सन् १२५३
५३९

फ्रांस से 'सफेद लिली' का अत सन् १७९२

(ठ) सेंट लूई ने 'जेकोबियन' (मत-परिवर्तन)
कर विश्राम चाहा सन् १२५४
५३९

'जेकोबियन' लोगो द्वारा लूई XVI का अत सन् १७९३

उपर्युक्त विवरण अग्रेजी की पुस्तक से लिया गया है * और यह स्पष्टतया प्रतिपादित करता है कि फ्रांस के दो बादशाहो के जीवन मे—५३९ वर्ष के अन्तर पर बिल्कुल एक सी घटनाएँ घटित हुई ।

सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक विक्टर ह्यूगो ने इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया है कि कई बार एक सा घटनाक्रम कुछ वर्षों के बाद दोहराया जाता है और अपने इस कथन की पुष्टि मे उसने निम्नलिखित वृत्त लिखा है :—

(क) ड्यूक दी बेरी चार्ल्स दशम का पुत्र था। इसने एक विदेश की राजकुमारी से विवाह किया और १३ फरवरी सन्

* Complete Book of the Occult and Fortune Telling by M. C. Poinsot, पृष्ठ ४१४-४१५ ।

१८२० को ड्यूक का कत्ल हुआ (इसी फरवरी महीने मे लूई फिलिप का पतन हुआ था)। ड्यूक दी बेरी ने यह चाहा था कि वह सिहासन छोड दे और उसका पौत्र, जिसकी १० वर्ष की अवस्था थी, बादशाह मान लिया जाय। परन्तु उसने यह निर्णय इतनी देर से किया कि वह कामयाब न हो सका। सन् १८३० की रक्त-क्रान्ति ३ दिन तक रही। इसका पिता चार्ल्स दशम ७४ वर्ष की अवस्था मे सिहासन च्युत हुआ—इग्लैण्ड चला गया और वहाँ देश निकाले की हालत मे मारा गया।

(ख) ड्यूक दी ओरलिअन्स, लूई फिलिप का लडका था। उसने एक विदेश की राजकुमारी से विवाह किया और १३ फरवरी १८५२ को दुर्घटना से मरा। इसी फरवरी महीने मे लूई फिलिप का पतन हुआ था। ड्यूक ऑफ ऑरलियन्स ने चाहा कि वह सिहासन छोड़ दे और उसका पौत्र, जिसकी आयु १० वर्ष की थी, बादशाह मान लिया जाय। परन्तु उसने यह निर्णय इतनी देर से किया कि वह कामयाब न हो सका। सन् १८४८ की रक्त क्रान्ति ३ दिन तक रही। इसके पिता लूई फिलिप ७४ वर्ष की अवस्था मे सिहासनच्युत हुआ—इगलैड चला गया और वहाँ देश निकाले की हालत मे मारा गया।

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि ३२ वर्ष के अन्तर पर बिल्कुल एक-सा घटना क्रम हुआ। यहूदियो के प्रारम्भिक इतिहास का आधार '७' की सख्या मानी गई है। उनके धार्मिक इतिहास मे ७, तथा ७×७ (=४९) तथा, ७×७० (=४९०) इन सख्याओ का विशेष महत्व है। 'बेबीलोन' मे इनकी परतत्र स्थिति ७० वर्ष रहेगी—यह घटना से बहुत पूर्व ही भविष्यवाणी कर दी गई थी।

और 'जेरूसेलम' का ध्वंस तथा उनके वहाँ पुनः जमने मे ७×७०= ४९० वर्ष लगेंगे इसकी भविष्यवाणी भी डेनियल ने कर दी थी। हेब्रू जाति के जन्म से 'कनान देश' प्रवेश में उन्हें ४९० वर्ष लगे। जोशुआ ने जब 'कनान देश' पर विजय की, उसके ४९० वर्ष बाद 'सॉल' के अधीन प्रथम यहूदी राज्य स्थापित हुआ। 'सॉल' इनका प्रथम बादशाह था। इसके समय से ठीक ४९० वर्ष बाद, नेबूचद्नेजार ने जेरुसेलम पर विजय प्राप्त की। और इस तिथि के ठीक ४९० वर्ष बाद रोमवासियों ने जेरुसेलम को नष्ट किया। '४९०' वर्ष के 'काल चक्र' के आधार पर—यह घटना कब घटित होंगी। इनकी भविष्यवाणी बहुत पूर्व की जा चुकी थी।

सन् ७० ईस्वी में टिटस ने इनका मन्दिर नष्ट किया। ७० वर्ष बाद रोमवासियो के विरुद्ध इनका द्वितीय विप्लव हुआ। यहूदी जाति छिन्न-भिन्न हो गई। ७०×७=४९० वर्ष तक यह लोग मारे मारे फिरते रहे। दूसरे ४९० वर्ष का 'काल चक्र' भी इनके लिये प्रतिकूल रहा और इन पर जगह जगह अत्याचार ही होता रहा। ९८० वर्ष (४९०+४९०=९८०) व्यतीत हो जाने पर मुस्लिम सत्ता और शक्ति ह्रासोन्मुख हुई और यहूदियों का प्रभुत्व मध्य एशिया में बढने लगा। इसके ४९० वर्ष बाद 'अमेरिका का पता लगा। अमेरिका का पता सन् १४९२ में लगा और इस तारीख से अग्रिम ४९० वर्ष में अर्थात् सन् १९८० तक यहूदी लोग पुनः अपना राज्य स्थापित कर पुनः अत्यन्त शक्तिशाली हो जावेगे यह भविष्यवाणी 'कीरो' ने की थी। 'कीरो' की भविष्यवाणी के आधार पर पेलिस्टाइन (फिलिस्तीन) तथा मिश्र देश दोनों में आर्थिक उन्नति और औद्योगिक तथा व्यावसायिक समृद्धि—यहूदियों तथा

उनके सहयोगियो द्वारा होगी । 'कीरो' ने यह भी भविष्यवाणी की है कि जर्मनी और इगलैण्ड एक दूसरे के मित्र हो जावेगे और फिलिस्तीन तथा मिश्र मे बहुत अधिक तादाद मे अपनी अपनी फौजें भेजेंगे । रूस, चीनी तथा तारतारी फौजो को काम मे लावेगा और सब मुस्लिम जातियाँ इस सघर्ष मे सम्मिलित होगी । अस्तु[१]

यहाँ हमारा मुख्य विषय है 'काल चक्र' । जिस प्रकार सूर्योदय के बाद बारह घण्टे दिन रहता है और फिर बारह घण्टे रात्रि; इसके बाद पुन दिन और रात्रि । उसी प्रकार देशो तथा जातियों के विकास अभ्युदय, उत्थान और पतन मे भी कभी कभी हम 'काल चक्र' का पता लगा सकते है और उसके आधार पर भविष्य मे होने वाली घटनाओ का पता लगा सकते है—प्रस्तुत पुस्तक का प्रधान विषय यही है । प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे—इस क्रम का—"अको" या सख्या द्वारा पता कैसे लगाया जावे ।

कभी-कभी यह देखा गया है कि कोई सख्याविशेष या अंक-विशेष, किसी व्यक्ति या राष्ट्र-विशेष के जीवन से इतना सम्बद्ध रहता है कि उसे केवल 'सयोग' कह कर नही टाल सकते । बहुत से लोग १३ को अशुभ अक मानते हैं । इसका कारण यह है कि ईसा मसीह की मृत्यु के पहले जो खाना हुआ उसमे १३ व्यक्ति थे । ईसाइयो मे यह बहम बहुत प्रचलित है । बहुत से होटल के मालिक अपने होटल के कमरो पर न० डालते समय १२ के बाद

---

१. विशेष विवरण के लिए देखिये Hebrew Astrolojy by Sepharial, पृष्ठ ६२-६३ ।

१. Cheiro's World Predictions Future of Jews foreshadowed पृष्ठ १६१

१२ A फिर १४, १५—इस क्रम से आगे के कमरों पर नम्बर डालते हैं। १३ का नम्बर इस कारण नही डालते कि बहुत से मेहमान १३ न० के कमरे से घबराते है।

आगे के प्रकरण में (देखिये प्रकरण ३) बताया गया है कि अंक-विद्या मे यदि कोई अंक ६ से अधिक हो तो उसके विविध अकों को जोड़ कर जो अंक बने वह मूल-अंक कहलाता है। इस पद्धति के अनुसार अमेरिका का मूल-अंक १३=१+३=४ प्रतीत होता है क्योंकि '१३' की संख्या का अमेरिका से घनिष्ठ सम्बन्ध है। '१३' के दोनो अंक '१' तथा '३' को जोडने से १+३=४ चार बनता है। ४ का सम्बन्ध आधुनिक वैज्ञानिकों ने 'हर्शल' ग्रह से माना है। 'हर्शल' का बिजली, नवीन आविष्कारो तथा द्रुत प्रगति से विशेष सम्बन्ध है और अमेरिका इन बातो के लिए प्रसिद्ध है ही। यह भी आगे तीसरे प्रकरण मे बतलाया गया है कि १ तथा ४ अंकों की '२' तथा '७' अंकों से भी सहानुभूति है।

(क) वाशिंगटन प्रथम अमेरिकन प्रेसीडेन्ट का जन्म दिवस	२२	फरवरी	(२+२=४)
(ख) स्वतन्त्रता का ऐलान	४	जुलाई	=४
(ग) जार्ज तृतीय (जिसके राज्य काल में अमेरिका से युद्ध हुआ) का जन्म दिन	४	जून	=४
(घ) कॉन्टिनेन्टल कॉग्रेस	१०	मई	=१
(ङ) सिविल महायुद्ध की प्रथम आज्ञा	१३	अप्रैल	=४
(च) समतर किले का पतन	१३	अप्रैल	=४

(छ)	डोनाल्डसन किले का युद्ध	१३	फरवरी	=४
(ज)	फ्रेडरिक्सवर्ग का युद्ध	१३	दिसम्बर	=४
(झ)	एडमिरल डेवी का मनीला खाडी मे प्रवेश	१	मई	=१
(ञ)	'मनीला' पर विजय और कब्ज़ा	१३	अगस्त	=४
(ट)	प्रेसीडेन्ट वुडरो विल्सन का जन्म दिन	२८	दिसम्बर	=१
(ठ)	प्रेसीडेट विलसन का फ्रांस मे आगमन	१३	दिसम्बर	=४
(ड)	प्रथम महायुद्ध के समय जहाज़ी बेड़े की प्रारम्भिक यात्रा	१३	जून	=४
(ढ)	जनरल पार्शिग का जन्म दिन	१३	सितम्बर	=४
(ण)	सेंट मितेल का निर्णयात्मक युद्ध	१३	सितम्बर	=४
(त)	'स्वतन्त्रता' ऐलान करने वाले नेता जोसेफ जेफरसन का जन्म	२	अप्रैल	=२
(थ)	जोसेफ जेरफसन की निधन तिथि	४	जुलाई	=४
(द)	प्रेसीडेन्ट मेक्किनले का जन्म दिन	२९	जनवरी	=२
(ध)	स्पेन से महायुद्ध की घोषणा	२०	अप्रैल	=२

(न) प्रेसीडेन्ट मोनरो (जिसके नाम से 'मोनरो-
सिद्धान्त' सुविख्यात है) का जन्म दिन २८ अप्रैल =१
(प) प्रेसीडेन्ट मोनरो की निधन तिथि ४ जुलाई=४

'१३' की संख्या 'नवीनता' की प्रतीक है। अमेरिका 'नई दुनिया' नाम से ही नही—कार्य क्रम से भी नवीन प्रगति वाला है। इसका आदर्श वाक्य भी नवीनता का प्रतिपादक 'Novus Ordo Seclorum' है।[1]

जॉर्ज वाशिगटन का प्रारम्भिक सत्कार १३ तोपों की सलामी से किया गया। अमेरिका की जो राष्ट्रीय ध्वजा है उसमे १३ पत्तियाँ है, १३ बाण है, 'ईगल' के ऊपर १३ सितारे है और 'ईगल' के प्रत्येक डैने मे १३ पख है। जब अमेरिका सर्वप्रथम राष्ट्र हुआ, तव उसमे १३ राज्य थे और १३ प्रतिनिधियो ने स्वतन्त्रता-घोषणा के राज्य-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। अमेरिकन झडे मे १३ ही धारियाँ है।

'कीरो' विश्व-विख्यात ज्योतिषी, हस्तरेखा विशारद तथा अक-विद्या का पारगत विद्वान् था। उसने श्री एच सी. शेर्मन नामक व्यक्ति के जीवन की घटनाओ का उल्लेख करते हुए लिखा है कि श्री शेर्मन की अपनी भावी पत्नी मिस वीक्स से प्रारम्भिक मुलाकात १३ तारीख़ को हुई, उसने विवाह का प्रस्ताव १३ तारीख को किया और मिस वीक्स ने विवाह की स्वीकृति भी १३ तारीख को ही दी। १३ जून सन् १९१३ को दिन के दस बजकर १३ मिनट पर वे विवाह-वेदी पर बैठे। पति-पत्नी दोनों की जन्म तारीखे भी १३ ही थी। विवाह मे १३ मेहमान आये और वधू के हाथ में जो गुलदस्ता था, उसमे १३ गुलाब के फूल थे।

---

१. Cheiro's World Predictions, पृष्ठ ११२।

एक अन्य सज्जन सेमुअल स्टोरे ने लिखा है कि उसके जीवन मे '१३' की सख्या का बहुत महत्व रहा। वह १३ जनवरी १८४० (१+८+४+०=१३) को पैदा हुआ। वह १३ वर्ष की आयु से कमाने लगा और उसने प्रथम बार २६ जनवरी (१३×२) को राजनैतिक भाषण दिया। राजनीतिक क्षेत्र मे प्रवेश करने के १३ वर्ष बाद वह पार्लियामेण्ट का सदस्य चुना गया। १३ वर्ष तक प्रथम पत्नी के साथ वैवाहिक जीवन रहा। उसकी पत्नी २६ तारीख (१३×२) को मरी। वह ३ वर्ष तक 'मेयर' पद पर तथा १० वर्ष 'चेअरमैन' पद पर—इस प्रकार कुल १३ वर्ष पदाधिकारी रहा। ५८ वर्ष की अवस्था मे (५+८=१३) उसने द्वितीय विवाह किया। विवाह के समय सन् भी १८६८=(१+८+६+८=२६ =१३×२) था। वह लिबरल दल का सदस्य १३×३=३६ वर्ष तक रहा। सन्डरलैण्ड के चुनाव मे उसे १२३३४ वोट (१+२+३ +३+४=१३) प्राप्त हुई। उसके जीवन मे महत्वपूर्ण वर्ष वही थे जिनमे १३ का भाग पूरा पूरा लग सके (अर्थात् १३, १३×२=२६ १३×३= ३६, १३×४=५२)।

इस प्रकार '१३' की सख्या के अनेक उदाहरण अनेक पुस्तको मे भरे पडे हैं। सुप्रसिद्ध लेखक एम सी पोइनसोट[१] ने लिखा है कि Paul Des Chanel १३ तारीख को पैदा हुआ। उसका विवाह १३ तारीख शुक्रवार को हुआ। १३ तारीख को चेम्बर ने इन्हे प्रेसीडेन्ट के पद के लिए चुना। इनके नाम मे १३ ही अक्षर थे।[१]

हेनरी क्रिस्टेमे कर्स के नाम मे अग्रेजी वर्णमाला के १३ अक्षर थे। वह १३ अक्तूबर को पैदा हुए और उन्हे विश्व-विद्यालय से साहित्य

१. The Complete Book of the Occult पृष्ठ ४१२।

की उपाधि १३ तारीख को प्राप्त हुई। उनकी कृति 'मार्था' १३ तारीख को स्वीकृत हुई और उसका रिहर्सल भी १३ तारीख को हुआ। उनकी एक अन्य कृति १३ तारीख को पेरिस मे दिखाई गई और पुनः ब्रूसेल्स नामक नगर में उसकी पुनरावृत्ति १३ तारीख को की गई। उनकी अन्य कृतिया भी--प्रत्येक--१३ तारीख को ही स्वीकृत हुई और १३ तारीख को ही उन्हे विशिष्ट सम्मान की उपाधि से विभूषित किया गया।

अब १३ तारीख के सम्बन्ध मे एक उदाहरण ऐसा दिया जाता है जहाँ १३ ने अशुभ प्रभाव दिखाया हो। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो ने लिखा है कि जब सन् १८७१ में वह फ्रॉस की राष्ट्रीय असेम्बली के लिये रवाना हुए तो १३ (फरवरी) तारीख थी। जिस डब्बे मे वह गये उसमें १३ व्यक्ति थे और जब वह 'वोरदू' नगर में पहुँचे तब न० १३ के मकान मे उन्हे ठहराया गया। १३ मार्च की रात्रि को उन्हे बिलकुल नीद नही आयी। वह बेचैनी से करवटे बदलते रहे और विचार करते रहे कि जनवरी से--लगातार--'१३' की सख्या उनका पीछा कर रही है। उसी समय उन्हें होटल के अध्यक्ष ने बुलाया और विक्टर ह्यूगोसे कहा कि "दिल को कड़ा कर लीजिये। जिस चार्ल्स ह्यूगो की प्रतीक्षा में आप ठहरे हैं, उसकी मृत्यु का समाचार आया है !"

कहने का तात्पर्य यह है कि कोई सख्या सर्वथा शुभ या सर्वथा अशुभ नही होती--

किसी का कन्दे नगीने में नाम होता है
किसी की उम्र का लबरेज़ जाम होता है।

इस दुनिया में शामो सहर
किसी का कूच किसी का कयाम होता है।

किसी व्यक्ति के लिये कोई दिन बहुत शुभ होता है—वह शासन सत्तारूढ होता है, परन्तु उसी दिन उसके प्रतिद्वन्द्वी को फाँसी लगाई जाती है। जो किसी एक के लिये 'शुभ' वही किसी दूसरे के लिये 'अशुभ' अंक हो जाता है। अंग्रेजी इतिहासकारो ने तारीख की 'संख्या' पर बहुत गवेषणात्मक अध्ययन किया है। हमारे भारतीय इतिहास तथा महापुरुषो की जीवनी मे इस प्रकार की गवेषणा नही की गई है। अस्तु कोई वैज्ञानिक सिद्धान्त चाहे यूरुप मे प्रतिपादित किया जावे चाहे भारत मे, उसकी वैज्ञानिकता मे अन्तर नही आता। यूरुप के इतिहास से, १४ की संख्या की पुनरावृत्ति का एक घटना-क्रम संक्षेप मे यहाँ दिया जाता है —[१]

(क) फ्रॉस के प्रथम बादशाह का राज्याभिषेक १४ मई सन् १०२९ को हुआ और फ्राँस का अन्तिम बादशाह हेनरी १४ मई १६१० को मारा गया। फ्रांस तथा नवारे के १४ वे बादशाह Henri de Bourbon के नाम मे १४ अक्षर थे। फ्राँस का बादशाह हेनरी १४ दिसम्बर सन् १५५३ को पैदा हुआ। ईसामसीह के जन्म के १४००+१४ दशक (१४०)+१४ वें साल में·

१४×१०० = १४००
१४×१० = १४०
१४×१ = १४
१५५४

1. "Research in the Efficiency of Dates and Names in the Annals of Nations"

अर्थात् १५५३ वर्ष पूरे हो गये थे और १५५४ वा वर्ष चल रहा था।

१५५३ वर्ष का मूल अक भी १४ ही होता है : १+५+५+३=१४।

१४ मई १५५४ को बादशाह हेनरी ने एक आज्ञापत्र निकाला। इसी कारण-परम्परा से १४×४=५६ वे वर्ष मे वह वह कत्ल किया गया।

(स्थानाभाव के कारण इस विषय का पूर्ण विवरण यहाँ नही दिया जा रहा है।)

१४ मई १५५२ को हेनरी चतुर्थ की प्रथम पत्नी पैदा हुई थी। १४ मई १५८८ को ड्यूक आव गाइज ने हैनरी तृतीय के विरुद्ध बग़ावत की। १४ मार्च १५९० को हैनरी ने ईवरी के प्रसिद्ध युद्ध मे विजय प्राप्त की। १४ मई १५९० को हेनरी चतुर्थ पेरिस की लड़ाई में हारा। १४ नवम्बर १५९२ को फ्रेंच पार्लियामेंट ने क़ानून पास किया। इसके अनुसार भविष्य के लिये उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार हेनरी चतुर्थ से लेकर रोम के पादरियों को दे दिया गया। १४ दिसम्बर को ड्यूक आव सेवोय ने हेनरी चतुर्थ को आत्म समपर्ण किया। १४ सितम्बर को डाफिन (जो बाद में लूई XIII के नाम से प्रसिद्ध हुआ) का ईसाई मतानुसार नामकरण सस्कार किया गया। १४ मई १६१० को बादशाह का कत्ल किया गया।[१]

इस प्रकार और बहुत सी घटनाएँ दी गई है जिनमें १४ की संख्या बारंबार आती हैं। वास्तव में जो फ्रेंच इतिहास से जानकारी रखते हैं वही उपर्युक्त घटनाओं के महत्व का असली मूल्याकन कर

१ Complete Book of the Occult, पृष्ठ ४१३।

सकते हैं। उन समस्त घटनाओ के महत्व पर प्रकाश डालना इस छोटीसी पुस्तक मे सम्भव नही। पुस्तको मे अक-विद्या के प्रमाणमे सैंकडो उदाहरण भिन्न-भिन्न व्यक्तियो के जीवन से सकलित कर अग्रेज ज्योतिषियो ने दिये हैं। यहाँ केवल बानगी के तौर पर कुछ उदाहरण दिये गये हैं।

इस विषय मे कहना केवल यह है कि बहुत बार किसी-किसी के जीवन मे किसी तारीख-विशेष या अक-विशेष का महत्व पाया जाता है। यदि हम अपने-अपने जीवन की गत घटनाओ का अध्ययन कर, उस अनुभव तथा अकविद्या के मूल नियमों के आधार पर अपने भविष्य के विषय मे कुछ जान सके तो हमे कितना लाभ हो ?

साधारण जनता ज्योतिष-शास्त्र पारगत नही हो सकती परन्तु अक-विद्या के नियम इतने सरल हैं कि साधारण पढा लिखा मनुष्य भी इसे अपने जीवन मे लागू कर लाभ उठा सकता है। बहुत बार जन्म-कुण्डली के अन्य-ग्रहो के प्रभाव के कारण अक-विद्या के नियम सर्वथा लागू न हो—या किसी-किसी के जीवन मे अनेक ग्रहो के प्रबल प्रभाव के कारण—कई अको की प्रधानता हो और किसी 'अक'-विशेष का नियम दिखाई न दे, किंतु इससे अक-विद्या के मूल सिद्धान्त मे कोई त्रुटि नही होती। नियम होते है और उनके अपवाद भी होते है। इस पुस्तक को पढ कर इसके नियमो को अपने तथा अपने परिचित व्यक्तियो के जीवन मे लागू कर देखिये कि कितनी अधिक मात्रा मे यह अ क-विद्या आपको लाभ पहुँचाती है।

---

१. Curious Myths of the Middle Ages by Sabine Baring Gould

३ रा प्रकरण

'मूल अंक' बनाने की विधि और उनका प्रभाव

अब अंग्रेजी ज्योतिष के आधार पर यह बताया जाता है कि यदि किसी तारीख मे एक से अधिक अक हों तो उनको जोड कर मूल अक कैसे बनाया जाए। १ से लेकर ६ तक तो मूल अंक कहलाते है। इसके बाद के अको को निम्नलिखित प्रकार से जोडकर मूल अक बनाने चाहिएं —

१० = १ + ० = १	२० = २ + ० = २
११ = १ + १ = २	२१ = २ + १ = ३
१२ = १ + २ = ३	२२ = २ + २ = ४
१३ = १ + ३ = ४	२३ = २ + ३ = ५
१४ = १ + ४ = ५	२४ = २ + ४ = ६
१५ = १ + ५ = ६	२५ = २ + ५ = ७
१६ = १ + ६ = ७	२६ = २ + ६ = ८
१७ = १ + ७ = ८	२७ = २ + ७ = ९
१८ = १ + ८ = ९	२८ = २ + ८ = १०
१९ = १ + ९ = १०	

यदि हमें २९ का मूल अक निकालना हो तो २९=२+९=११ इस प्रकार दो अको की सख्या ११ आ जाती है। इसे उपर्युक्त क्रम से फिर जोड़ना चाहिए, १+१=२; इस प्रकार २९ का मूल अक २

हुआ। ३० का ३+०=३ तथा ३१ का ३+१=४ हुआ। किसी भी तारीख़ का या किसी भी सख्या का मूल अक ज्ञात करने का तरीका यह है कि उसमे ९ का भाग दीजिए। जो शेष बचे वही मूल अक है। यदि शेष ० बचे तो मूल अक ९ होगा।

अंक १

किसी भी महीने मे ३१ से अधिक तारीख़ नही होती, इस कारण ३१ तक की सख्या के मूल अक बनाना यहाँ बता दिया गया है। अब सब से पहले '१' मूल अक के विषय मे बताया जाता है। जिसकी जन्म-तारीख का मूल अक १ होना है वह व्यक्ति क्रियात्मक, अपनी विचार-धारा मे स्थिर तथा निश्चित स्वभाव का होता है। अर्थात् उसकी प्रकृति मे अस्थिरता नही होती। जिस बात पर अपनी राय कायम कर लेता है उस पर स्थिर रहता है। ऊपर जो १ से लेकर ३१ तारीख़ तक के मूल अक दिए गए है उनको देखने से पता चलेगा कि १०, १९ तथा २८ तारीख़ को जो व्यक्ति उत्पन्न हुये है उनका मूल अक १ है। ऐसे व्यक्तियो को किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीखे महत्व-पूर्ण जावेगी —

१, १०, १९, २८

इन तारीख़ो के अतिरिक्त उनके जीवन के निम्नलिखित वर्ष भी महत्वपूर्ण होगे।

१ ला वर्ष, १० वॉ वर्ष, १९ वाँ वर्ष, २८ वॉ वर्ष, ३७ वाँ वर्ष, ४६ वाँ वर्ष, ५५ वाँ वर्ष, ६४ वाँ वर्ष, ७३ वाँ वर्ष, इत्यादि। इसका कारण यह है कि ऊपर जो-जो वर्ष गिनाये गए है उनको

---

१ देखिये "The Magic of Numbers by Leo Markun.

जोडने से मूल अंक १ ही बन जाता है। यथा ६४=६+४=१०=१+०=१। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये। '१' संख्या पर सूर्य का प्रभाव विशेष माना गया है और अगरेज ज्योतिषियो के मतानुसार जो व्यक्ति २१ जुलाई से २८ अगस्त तक के समय मे पैदा होते है उन पर सूर्य का प्रभाव विशेष होने के कारण यदि कोई मनुष्य उपर्युक्त समय मे भी पैदा हुआ हो और १, १०, १९ या २८ तारीख को पैदा हो तो, उस पर सूर्य का प्रभाव और भी अधिक होगा।

जिन लोगो की जन्म-तारीख का मूल अक १ होता है, वह अनुशासन पसन्द नही करते। वह स्वय अपनी संस्था के सचालक या अपने विभाग के अध्यक्ष होना चाहते है। इन लोगो को चाहिये कि अपने किसी भी नए काम की बुनियाद १, १०, १९ या २८ तारीख को डाले। यदि साथ ही २१ जुलाई से २८ अगस्त के बीच वाले काल में वह कोई नया कार्य करे तो इन्हे विशेष सफलता होगी। '१' अक तो इनका अपना अक हुआ, इस कारण शुभ होगा ही, किन्तु १ के अतिरिक्त २, ४ तथा ७ का अंक भी इन्हे शुभ होता है।

इस कारण २, ११ (१+१=२), २० (२+०=२) तथा २९ (२+९=११=१+१=२) तारीख भी इन्हे अच्छी जावेगी। ४, १३ (१+३=४), २२ (२+२=४), तथा ३१ (३+१=४) तारीखें भी शुभ जावेगी। ७, १६ (१+६=७), तथा २५ (२+५=७) तारीख भी इन्हे शुभ होगी।

ऊपर साधारण नियम बताया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के वर्षों मे यह विचार करना चाहिये कि १, २, ४

तथा ७ अक वाले वर्ष उसे कैसे गये। उदाहरण के लिए यदि कोई मनुष्य अपने गत जीवन के अनुभव से इस नतीजे पर पहुँचे कि, १, १०, १६, २८, ३७, वर्ष तो अच्छे गये किन्तु ७, १६, २५, ३४ या ४३ वाँ वर्ष अच्छा नही गया और महीने की ७, १६ या २५ वी तारीख उसे अच्छी नही जाती तो भविष्य मे किसी महत्वपूर्ण काम के लिये उसे ७, १६ या २५ वी तारीख नही चुननी चाहिए।

'१' अक वाले मनुष्य को रविवार तथा सोमवार शुभ होता है। इसलिए यदि १ ता० को या १० ता०को या १६ ता० को या २८ ता० को रविवार पडे तो उसे विशेष अच्छा जावेगा। इसी प्रकार यदि ४ या १३ या २२ तारीख को रविवार पडे तो भी उसे विशेष शुभ होगा। गहरा या हल्का भूरा रग या पीला अथवा सुनहरी रग इनके लिये विशेष अनुकूल होता है। पुरुष गहरे या हल्के भूरे रग के कपडे पहिने तो उन्हे शुभ प्रभाव दिखावेगे। कपडे का रग पसन्द करते समय हमे लोक-रुचि का भी ध्यान रखना पडता है। पुरुष गहरे पीले या सुनहरी रग के कपडे नही पहन सकते किन्तु जिन स्त्रियो की जन्म तारीख का मूल अक १ हो वे पीली या सुनहरी रग की साडी या ब्लाउज पहन सकती हैं।[1]

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

१ मूल अक वालो के जीवन के निम्नलिखित वर्ष महत्व पूर्ण होगे ?

(क) १, १०, १६, २८, ३७, ४६, ५५, ६४।

(ख) ४, १३, २२, ३१, ४०, ४६, ५८, ६७।

---

१. देखिये Harmony in Number, Name & Colour by Prof. Kelland.

(ग) २, ११, २०, २६, ३८, ४७, ५६, ६५।

(घ) ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१।[१]

अंक २

'२' अक का अधिष्ठाता चन्द्रमा है। सूर्य और चन्द्रमा मित्र है। इस कारण '१' अंक वाले व्यक्तियों को २ का अंक भी शुभ बताया गया है। परन्तु सूर्य मे तेज होता है. चन्द्रमा में शीतलता। इस कारण जिनका मूल अंक २ हो, वे व्यक्ति कल्पनाशक्ति वाले, कलाप्रिय तथा प्रेमी होते हैं। शारीरिक शक्ति उनमे उतनी अधिक नही होती किन्तु मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य मे बाजी मार ले जाते है।

महीने की निम्नलिखित किसी भी तारीख़ को जिनका जन्म हुआ हो, उन सब का मूल अक २ होगा।

२

११=१+१=२

२०=२+०=२

२६=२+६=११=१+१=२

अंगरेज ज्योतिषियो[२] के मतानुसार जिनका जन्म २० जून से २५ जुलाई तक हुआ हो उन पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण जिन व्यक्तियो का जन्म उपर्युक्त काल में हुआ हो और जन्म-तारीख का मूल अंक भी २ हो तो उन पर चन्द्रमा

---

१. इस विषय के विशेष जिज्ञासु कृपया देखे :—

"The Science of Numerology : What Numbers Mean to You" by Walter B. Gibson. तथा

२. Numerlogy : Its Practical Application to Life by Clifford W. Cheasley.

का विशेष प्रभाव रहेगा। जिनका मूल अक २ हो उन्हे कोई भी महत्वपूर्ण कार्य महीने की २ री, ११ वी, २० वी या २९वी तारीख को करना चाहिए। यदि यह लोग नवीन कार्य २० जून से लेकर २५ जुलाई तक—इस बीच मे करे और नवीन कार्य का प्रारभ भी २ अक वाली तारीख को हो तो विशेष सफलता की सभावना है।

जिन व्यक्तियो का मूल अक २ है, उन्हें १,४ तथा ७ की सख्या भी शुभ होती है। इस कारण २ अक वाले व्यक्तियो को उचित है कि अपने गत जीवन की घटनाओ से यह नतीजा निकालें कि जीवन का १ ला, १० वाँ, १९ वाँ तथा २८ वाँ वर्ष उन्हे कैसा गया और प्रत्येक महीने की १ अक वाली तारीखे इन्हे कैसी जाती हैं। यदि यह शुभ जाती हो तो इन तारीखो को भी वह नवीन कार्य प्रारभ कर सकते हैं, तथा ३७, ४६, ५५, ६४ वां वर्ष भी अच्छा जावेगा। इसी प्रकार ४ अक की परीक्षा करनी चाहिए कि जीवन का ४ था, १३ वाँ २२ वाँ तथा ३१ वाँ वर्ष कैसा गया और महीने की यह तारीखे कैसी जाती हैं। ७ का अ क, २ का मित्र समझा जाता है। इस कारण जिन व्यक्तियो की जन्म-तारीख का मूल अ क २ हो उन्हे प्रत्येक महीने की ७, १६ तथा २५ वी तारीख भी उत्तम जानी चाहिए। और इनके जीवन का ७ वाँ, १६ वाँ, २५ वाँ, ३४ वाँ, ४३ वां, ५२ वाँ, ६१ वाँ तथा ७० वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा।

जिनका मूल अ क २ है, उनके लिये रविवार, सोमवार तथा शुक्रवार शुभ होता है। इसलिये यदि २ या ११ या २० या २९ तारीख को सोमवार भी हो तो इन्हे विशेष शुभ होगा।

जिनकी जन्म-तारीख का मूल अक २ हो उन्हें इस बात के

लिए प्रयत्नशील होना चाहिए कि अपने मस्तिष्क की बेचैनी और उलझन को कम कर, जिस बात का विचार पक्का किया हो उसे कार्यान्वित करने मे जी-जान से जुट जावे। यह लोग प्रायः मुस्त-किल मिजाज नही होते, एक बात के विषय में विचार पक्का करते है और फिर उसमे तब्दीली या तरमीम करते रहते है और फिर दूसरी कोई नई योजना बनाने लगते है। धैर्य और अध्यवसाय की कमी के कारण जिस बात का विचार करते है उसे पूरा नही करते। अपने स्वभाव की इस कमजोरी के कारण इन्हे सफलता मे बाधा होती है। इनमे आत्म-विश्वास की कमी होती है, थोडी सी निराशा से उदासीन हो जाते है। यदि अपनी इस भावुकता पर विजय पा ले तो बहुत सी बातों मे सफल हो सकते है।

इन्हे सफ़ेद, काफ़ूरी (चन्द्रमा के रग का), हरा या अंगूरी रंग विशेष शुभ है। इस लिए इस रग की पोशाक पहनना चाहिए। काला, लाल या गहरा रग इनके लिये अनुकूल नही है।

अंक ३

इस अंक का अधिष्ठाता बृहस्पति है। जिन व्यक्तियो का जन्म निम्नलिखित किसी भी तारीख को हुआ हो उनका मूल अक ३ होगा :—

३ = ३

१२ = १ + २ = ३

२१ = २ + १ = ३

३० = ३ + ० = ३

अगरेज ज्योतिषियो के मतानुसार[१] १९ फरवरी से २१ मार्च

१ देखिए The Science of Nnmerology : What Numbers Mean to you; by Walter B. Gibson.

तक तथा २१ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक—इन कालो में जिनका जन्म हुआ हो उन पर बृहस्पति का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि किसी व्यक्ति का जन्म उपर्युक्त काल मे हुआ हो और जन्म की तारीख़ का मूल अ क भी ३ हो तो उस पर बृहस्पति का प्रभाव विशेष मात्रा मे होगा।

३ अक वाले व्यक्ति महत्वाकाक्षी, शासन की इच्छा रखने वाले तथा अनुशासन मे कठोर होते है। यदि फौज या सरकारी किसी विभाग के अध्यक्ष हो तो अपने अधीनस्थ कर्मचारियो के कार्य मे शिथिलता नही होने देते। यह इतनी सख्ती से हुकूमत करते है कि इनके बहुत से अधीनस्थ व्यक्ति इनके शत्रु हो जाते है।

३ अक वाले व्यक्तियो को उचित है कि महत्वपूर्ण कार्य, किसी भी महीने की ३ री, १२ वी, २१ वी या ३० वी तारीख को करे। यदि साथ ही १९ फरवरी से २१ मार्च तक के समय मे या २१ नवम्बर से २१ दिसम्बर वाले काल मे ३ मूल अ क वाली ता० को, नये काम की बुनियाद डाले तो विशेष सफलता की सभावना है। इस अ क वालो का ३ रा, १२ वॉ, २१ वाँ, ३० वाँ, ३९ वाँ, ४८ वॉ, ५७ वॉ तथा ६६ वॉ वर्ष अच्छा जावेगा।

३ अ क की ६ के अ क तथा ९ के अ क से भी सहानुभूति है। इसलिए जिन व्यक्तियो की जन्म-तारीख ३, १२, २१ या ३० हो उन्हें अपने गत जीवन के अनुभव से यह देखना चाहिए कि उनके जीवन का ६ ठा, १५ वाँ, २४ वा वर्ष कैसा गया तथा प्रत्येक महीने की यह तारीख़ कैसी जाती है। यदि विशेष अनुकूल जाती हो तो इन तारीखो को भी महत्वपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग मे ला सकते है। यदि ६ ठा, १५ वाँ आदि ६ मूल अ क वाले वर्ष गत जीवन मे

शुभ गए हों तो भविष्य में भी ३३ वाँ, ४२ वाँ, ५१ वाँ, ६० वाँ वर्ष शुभ जावेगा। इसी प्रकार यदि उनके जीवन का ९ वाँ वर्ष, १८ वाँ वर्ष तथा २७ वाँ वर्ष अनुकूल गया हो और प्रत्येक मास की ९, १८ तथा २७ वी तारीख भी शुभ जाती हो तो इन्हे भी अपनी शुभ तारीखों मे सम्मिलित कर सकते है। जीवन मे ९ मूल अंक वाले—३६ वाँ, ४५ वाँ ५४ वाँ, वर्ष भी शुभ जावेगा।

३ अंक वाले व्यक्तियो को बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा मगलवार शुभ होता है। इसलिए यदि ३, १२, २१ या ३० ता० को बृहस्पतिवार भी हो तो उनके लिए विशेष शुभ होगा। यदि ६ का मूल अ क शुभ जाता हो तो ६, १५ या २४ ता० को शुक्रवार भी पडे तो विशेष शुभ होगा। ९, १८ या २७ ता० को मगलवार हो तो और भी अनुकूल होगा। ३, १२, २१, ३०—इन सब अ कों का मूल अ क '३' ही है। जिनकी जन्म-तारीख का मूल अ क '३' हो, उनमें परस्पर विशेष आकर्षण होता है। भिन्न-भिन्न जाति, कुल, शील, राजनीति, आर्थिक या सामाजिक परिस्थिति वश आकर्षण मे भेद अवश्य होगा परन्तु उनकी मानसिक वृत्तियो मे एक-सूत्रता अवश्य होगी और ३ मूल अ क वाले, ३ मूल अंक वालो के अच्छे मित्र हो सकते हैं। देखिये प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट की जन्म-तिथि ३० जनवरी थी, चर्चिल की ३० नवम्बर 'तथा स्तालिन की २१ दिसम्बर। तीनो की जन्म-तारीख का मूल अ क ३ था। इसी कारण सभवत. लड़ाई के समय भिन्न-भिन्न राजनीति के पोषक होने पर भी, '३' मूल अंक होने के कारण, ३ राष्ट्रों के ३ कर्णधार द्वितीय महायुद्ध के समय अपने-अपने देश से आकर योरूप के एक स्थान पर गुप्त मंत्रणा के लिए एकत्र हो सके और शत्रु को

अपनी सम्मिलित योजना के कारण परास्त कर सके। मेरा विचार है कि यदि स्तालिन, चर्चिल तथा प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट तीनो की ही जन्म तारीख का मूल अक ३ नही होता तो यहतीनो एक स्थान पर सौमनस्यपूर्ण विचार-विनिमय के लिये एकत्रित नही होते।

३ मूल अ क वाले व्यक्तियो को चमकीला गुलाबी रग, या हल्का जामुनीरग विशेष शुभ होता है। स्त्रियाँ इस रग की पोशाक पहिने तो उन्हें विशेष अनुकूल होगी। पुरुष वर्ग अपने कमरे की दीवालो पर यह रग करावे या इस रग का फरनीचर, परदे आदि अपने कमरे मे लगावे तो शुभ होगा।

अंक ४

अगरेजी ज्योतिप के अनुसार '४' का मुख्य अधिष्ठाता हर्शल नामक ग्रह है। 'हर्शल' नामक अगरेज वैज्ञानिक ने सर्व प्रथम इसका पता लगाया। उसी के नाम से इसे 'हर्शल' कहा जाता है। हर्शल का मुख्य प्रभाव है सहसा प्रगति, विस्फोट, आश्चर्यजनक कार्य, असभावित घटनाएँ आदि। इसलिए जिस व्यक्ति की जन्म-तारीख का मूल अक ४ होता है वह प्राय औरो से सघर्ष करता है। जो अन्य लोगो की राय या विचारधारा होगी उसके विरुद्ध '४' अक वाला व्यक्ति अपना विचार प्रदर्शन करेगा, इस कारण उसके बहुत से विरोधी और शत्रु हो जाते है। किसी भी महीने मे निम्नलिखित किसी भी तारीख को जिन व्यक्तियो का जन्म हुआ होगा, उनका मूल अक '४' होगा —

४=४

१३=१+३=४

२२=२+२=४

३१=३+१=४

अंगरेज़ ज्योतिषियों का मत है कि यदि जन्म की तारीख का मूल अंक '४' हो और यदि जातक का जन्म भी २१ जून से ३१ अगस्त तक के काल मे हुआ हो तो उस पर '४' का प्रभाव विशेष मात्रा में रहेगा। यह लोग सुधारक, पुरानी प्रथा के उन्मूलक और नवीन प्रथा के संस्थापक होते है। सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र-किसी में भी पुरानी पद्धति को हटा कर नवीन पद्धति बैठाना इनके स्वभाव के अनुकूल होता है। यह लोग आसानी से औरों से मित्रता स्थापित नही करते। तथापि जिन व्यक्तियों की जन्म तारीख का मूल अंक, १, २, ७ या ८ हो उनसे इनका सौहार्द हो सकता है।

'४' अंक वाले व्यक्ति रुपये जोड़ने पर इतना जोर नही देते जितना मौज उड़ाने पर। इन व्यक्तियों को उचित है कि संग्रहशीलता की ओर विशेष ध्यान दे। इन लोगों को रविवार, सोमवार तथा शनिवार शुभ होते हैं। यदि कोई नवीन या महत्वपूर्ण कार्य करना हो तो किसी भी महीने की अग्रेजी ता० ४ या १३ या २२ या ३१ को करें तो सफलता होगी। यदि २१ जून से ३१ अगस्त के बीच में नवीन कार्य की बुनियाद डालें और साथ ही तारीख भी ४, १३, २२ या ३१ हो तो विशेष सफलता की आशा है। यदि '४' मूल अंक वाली तारीख़ को रविवार भी हो तो और भी शुभ होगा। यदि २, ११, २० या २९ तारीख हो और उस दिन सोमवार भी हो तो यह '२' का मूल अंक तथा सोमवार दोनों '४' अंक वालों के लिए शुभद होने के कारण और भी सत्प्रभाव दिखावेगे।

यदि '४' अंक वाले व्यक्ति सहिष्णु बनने के अभ्यासी बने और अन्य व्यक्तियों से व्यर्थ संघर्ष कर अपने प्रतिद्वन्द्वी और शत्रु न

बनावे तो विशेष सफल हो सकते हैं। 'धूप-छाँह' का रग, नीला तथा खाकी (भूरा) रग इन्हे विशेष अनुकूल होगा। 'धूप-छाँह' से तात्पर्य है दो प्रकार के रगो का सम्मिश्रण—कही गहरा मालूम हो कही हल्का—ऐसा वस्त्र या कमरे, फरनीचर और परदो आदि का रग इनके लिए शुभ है।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

४ अक वाले व्यक्तियो को ४ था, १३ वाँ, २२ वाँ, ३१ वाँ ४० वाँ, ४९ वाँ ५८ वाँ और ६७ वाँ वर्ष महत्व पूर्ण जावेगा। साथ ही १ ला, १० वाँ, १९ वाँ, २८ वाँ, ३७ वाँ, ४६ वाँ ५५ वाँ तथा ६४ वाँ वर्ष भी महत्व पूर्ण होगा। ४ अक वाले व्यक्ति को यदि २, ११, २०, २९ तारीखे शुभ जाती हैं तो, २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५ और ७४ वाँ वर्ष भी शुभ जावेगा तथा '७' का मूल अक अनुभव से शुभ सिद्ध हुआ हो तो ७ मूल अक वाले जीवन के वर्ष भी शुभ जावेंगे।

अंक ५

इस अक का अधिष्ठाता 'बुध' ग्रह है। जिन लोगो का जन्म नीचे लिखी किसी भी तारीख को हुआ हो उनका मूल अक ५ होगा।

टिप्पणी—इस सम्बन्ध में २२ वें वर्ष के विषय में यह स्मरण रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के जीवन के २२ वें वर्ष का अधिष्ठात सूर्य होता है—इस कारण जिन लोगो की जन्म कुण्डली में सूर्य बलवान् शुभ राशि तथा शुभ भाव में शुभ ग्रहों से युक्त वीक्षित है उन्हें २२ वाँ वर्ष अवश्य अच्छा जावेगा और जिनकी जन्म कुण्डली में सूर्य अनिष्ट स्थान में स्थित है या नीच राशि या शत्रु गृह में है उन्हें २२ वाँ वर्ष अनिष्ट जावेगा। इसी प्रकार २८ वें वर्ष के विचार में—भारतीय ज्योतिष के अनुसार मंगल की प्रधानता है।

५=५

१४=१+४=५

२३=२+३=५

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार २१ मई से २३ जून तक और २१ अगस्त से २३ सितम्बर तक प्रति वर्ष, बुध का प्रभाव विशेष रहता है। इस कारण यदि कोई व्यक्ति इस अन्तर में पैदा हुआ हो और उसके जन्म की तारीख का मूल अंक भी '५' हो तो उस पर बुध का प्रभाव विशेष होगा। यह लोग बहुत मिलनसार होते है और किसी भी व्यक्ति से शीघ्र मैत्रीभाव कर लेते हैं, इस कारण किसी भी अगरेजी तारीख को कोई व्यक्ति पैदा हुआ हो इनका मित्र हो सकता है। परन्तु यदि किसी व्यक्ति की जन्म तारीख का मूल अंक ५ हो तो (अर्थात् वह ता० ५, १४ या २३ को पैदा हुआ हो), अपने समान ही मूल अंक होने से, इनकी उससे हार्दिक घनिष्ठता हो जावेगी।[1]

बुध का प्रभाव व्यापार क्षेत्र में विशेष है। इस कारण यह लोग व्यापार—खास कर सट्टे या शीघ्र लाभ होने वाले व्यापार-की ओर विशेष आकृष्ट होते हैं। इनका स्नायुमंडल बहुत फुर्ती से कार्य करता है, इस कारण ये जल्दबाज होते हैं। इनकी प्रकृति में यह विशेषता होती है कि अधिक दिन तक किसी बात पर चिंता, शोक या पश्चात्ताप नही करते। किसी ने मानसिक आघात पहुँचाया—तो थोड़े काल मे ही उसे भूल गए, और पूर्ववत् अपने कार्य में लग गए।

---

1. "Number Please" पृष्ठ ६०

इन लोगो के लिए बुधवार, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार विशेष शुभ होते हैं। यदि यह किसी कार्य की नवीन आयोजना का प्रारभ ५, १४ वा २३ ता० को करे तो विशेष सफलता होगी। यदि साथ ही उस दिन वार भी बुध हो तो और भी शुभ होगा। यदि २१ मई से २३ जून तक अथवा २१ अगस्त से २३ सितम्बर के बीच के काल मे इनके लिए अनुकूल वार को ५,१४ या २३ ता० पड़े तो, उस दिन नवीन कार्य की बुनियाद डालने से अवश्य अधिक सफलता की आशा होगी। बुध का प्रभाव इन लोगो पर विशेष रहता है। बुध स्नायुमडल का अधिष्ठाता है। यह लोग अपनी स्नायविक शक्ति इतनी अधिक व्यय करते हैं कि अधिक अवस्था मे स्नायुमडल की कमज़ोरी से (Nervous break down) मूर्छा आदि की आशका होगी। इसी कारण इनके मिजाज़ मे ज़ल्दबाज़ी, चिड़चिडापन, शीघ्र क्रोध आने की प्रवृत्ति आदि के लक्षण पाये जाते हैं।

हल्का खाकी, सफेद, चमकीला उज्ज्वल रग इनकी प्रकृति के विशेष अनुकूल होता है। अथवा किसी भी रग का हल्का रग इन्हे शुभ होगा। गहरा रग नही पहनना चाहिए।

जीवन के महत्त्वपूर्ण वर्ष

इनके जीवन का ५ वाँ, १४ वाँ, २३ वाँ, ३२ वाँ, ४१ वाँ, ५० वाँ, ५९ वाँ, ६८ वाँ तथा ७७ वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होगा। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ३२ वे वर्ष मे बुध अपना पूर्ण प्रभाव दिखाता है। इस कारण जिनकी जन्म-कुण्डली मे बुध शुभ भाव मे तथा बलवान् होगा उनको उस भावसम्बन्धी शुभ फल

करेगा। जिनकी जन्म-कुण्डली में अशुभ भाव में बलहीन बैठा होगा उनको ३२ वे वर्ष मे उस भाव सम्बन्धी अनिष्ट फल देगा—

अंक ६

इस अंक का अधिष्ठाता शुक्र है। जिन व्यक्तियों का जन्म निम्नलिखित किसी तारीख को हुआ हो उनका मूल अंक ६ है :—

६=६

१५=१+५=६

२४=२+४=६

अंगरेज ज्योतिषियों के मतानुसार २० अप्रैल से २४ मई तक और २१ सितम्बर से २४ अक्तूबर तक शुक्र का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि उपर्युक्त काल मे किसी का जन्म हुआ हो और साथ ही जन्म की तारीख भी ६, १५ या २४ हो तो ऐसे व्यक्तियो पर शुक्र का प्रभाव विशेप मात्रा में होगा। ६ अंक वाले व्यक्ति बहुधा लोक-प्रिय होते हैं। उनमें आकर्षण शक्ति और मिलनसारी होती है और इस कारण उनके सम्पर्क मे आनेवाले लोग उन्हे प्रेम करते हैं। इनमें सोन्दर्योपासना भी विशेप मात्रा में होती है। सुन्दर व्यक्ति, कला, चित्र, सुन्दर वस्त्र आदि इन्हे विशेप प्रिय होते है। यह अपनी सुरुचि सम्पन्नता के कारण आतिथ्य आदि मे विशेप सत्कार करते है तथा ललित कलाओं को प्रोत्साहन देते है। परन्तु स्वभाव के हठी होते है और अपनी बात को अन्त तक निभाते है। किसी दूसरे की प्रतियोगिता सहन नही कर सकते और ईर्ष्या की मात्रा भी विशेष होती है।[1]

---

१ Raphael's Guide to Astrolojy

यह सहसा लोगो को मित्र बना लेते हैं या यह कहिये कि दूसरे के मित्र बन जाने का स्वभाव जितना ६ मूल अक वालो मे पाया जाता है, उतना, ५ मूल अंक को छोड कर, अन्य मूल अ क वालों मे नही होता।

मूल अ क ६ की अ क ३ तथा ९ से भी सहानुभूति है। इस कारण ६ अ ंक वाले लोगो की मित्रता निम्नलिखित तारीखो मे उत्पन्न होने वाले लोगो से विशेष होती है :

६, १५, २४

३, १२, २१, ३०

९, १८, २७

६ अ क वाले व्यक्तियो को मगलवार, बृहस्पति तथा शुक्रवार विशेप शुभ होते है—इसलिए यदि ६, १५, २४—इन तारीखो मे से किसी पर शुक्रवार पड़े और उस दिन नवीन कार्य प्रारंभ या सम्पादन किया जावे तो विशेष सफलता की आशा है। यदि २० अप्रैल से २४ मई अथवा २१ सितम्बर से २४ अक्टूबर के बीच शुक्रवार और ६, १५ या २४ ता० का योग प्राप्त हो सके तो विशेष कार्य के लिए यह दिन और भी उपयुक्त होगा।

इन व्यक्तियो को हल्का नीला या आसमानी या गहरा नीला रग शुभ होगा। हल्का गुलाबी रंग भी उपयुक्त है किन्तु काला या गहरा लाल, ककरेज़ी आदि रग अशुभ है।

जीवन के महत्त्वपूर्व वर्ष

यदि आप का मूल अक ६ है तो आप के जीवन का ६ ठा,

१५ वाँ, २४ वाँ[१] ३३ वाँ, ४२[२] वाँ, ५१ वाँ, ६० वाँ तथा ६९ वाँ वर्ष महत्त्वपूर्ण होगा।

६ मूल अक की ३ तथा ९ से भी सहानुभूति होने के कारण :—

(क) अपने गत जीवन के ३ रे, १२ वे २१ वे ३० वे वर्ष में कैसी घटना घटित हुई यह विचार कीजिए। यदि यह वर्ष शुभ गए तो आगे के ३९ वाँ, ४८[३] वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्प भी शुभ जावेगा।

(ख) यदि आप के गत जीवन का ९ वाँ, १८ वाँ, २७ वाँ, ३६[४] वाँ वर्ष अच्छा गया है तो आगे का ४५ वाँ, ५४ वाँ तथा ६३ वाँ वर्ष भी अच्छा जावेगा।

अंक ७

७ अंक का अधिष्ठाता नेपचून ग्रह है। भारतीय ज्योतिप में 'नेपचून' का नाम या इसके सदृश गुणवाले किसी ग्रह का जिक्र

---

१. स्मरण रहे कि अंक ज्योतिष के हिसाब से नहीं, किन्तु भारतीय ज्योतिष के मतानुसार यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा, शुभ राशि और शुभ गृह में पड़ा हो और शुभ ग्रह से युत, वीक्षित हो तो, २४ वाँ वर्ष बड़ा अच्छा जाता है और जिस भवन का स्वामी चन्द्रमा हो या जहाँ बैठा हो उस भाव का शुभ फल करेगा। अनिष्ट चन्द्रमा अनिष्ट फल करेगा।

२. इसी प्रकार राहु अपरा प्रभाव ४२ वे वर्ष में दिखाता है।

३. ४८ वाँ वर्ष भारतीय ज्योतिष के अनुसार केतु का होता है। आप की जन्म कुण्डली में केतु केन्द्र में स्थित होकर त्रिकोणेश से सम्बन्ध करता है या त्रिकोण में स्थित होकर केन्द्रेश से सम्बन्ध करता है तो विशेष भाग्योदय करेगा। यह वास्तव में ज्योतिष का विषय हैं।

४. इसी प्रकार भारतीय ज्योतिष के अनुसार ३६ वाँ वर्ष शनि का है।

नही है। बहुत से ज्योतिषी 'नेपचून' को 'वरुण' कहते हैं। परन्तु वास्तव मे यह नाम भ्रान्तिकारक है। जिन व्यक्तियों का जन्म नीचे लिखी किसी भी अंगरेजी तारीख को हो उनका मूल अंक ७ होगा।

७=७
१६=१+६=७
२५=२+५=७

प्राय चन्द्रमा की भाँति नेपचून भी जल प्रधान ग्रह है। इस कारण चन्द्रमा के अंक '२' तथा नेपचून के अंक '७' मे परस्पर सहानुभूति है। इस कारण ७ मूल अंक वाले व्यक्तियो की ७,१६, तथा २५ तारीख को उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त, २, ११, २० या २९ तारीख को पैदा होने वाले व्यक्तियो से विशेष मित्रता तथा सौहार्द होने की सम्भावना होगी।

७ मूल अंक वाले व्यक्ति सदैव परिवर्तन पसन्द किया करते हैं। यात्रा करना, तथा नवीन स्थान देखने का शौक उन्हें बहुत होता है। इनमे कल्पनाशक्ति विशेष होने के कारण यह लोग विशेष भावुक होते है। चित्रकला तथा कविता मे यह लोग विशेष सफलता प्राप्त कर सकते है। द्रव्य के विषय मे भाग्य इनका उतना सहायक नही जितना अन्य मूल अंक वालो का, इस कारण इन्हे आर्थिक सफलता विशेष प्राप्त नही होती। अधिक धन सग्रह करने पर धन नष्ट हो जाने का योग भी होता है। परन्तु ७ मूल अंक वाली स्त्रियों का विवाह धनी घरो मे होता है। ७ अंक वाले व्यक्तियो के धार्मिक विचार भी कुछ असाधारण होते है। धार्मिक मामलों मे यह रूढ़ि-वादी नही होते। प्रचलित परम्परा से भिन्न अपना धार्मिक मत रखते हैं। इन व्यक्तियों में अतीन्द्रिय ज्ञान (दूसरे की मन की बात

बिना बताये हुए समझ जाना) विशेष मात्रा में होता है, तथा इन्हें स्वप्न भी अद्भुत प्रकार के आते है।

'नेपचून' का ज़ल तत्व से विशेष सम्बन्ध होने के कारण समुद्र पार की यात्रा—या विदेशो से माल मँगवाने या भेजने आदि के व्यापार में या जहाज़ सम्बन्धी कार्य मे इन्हे विशेष सफलता हो सकती है।

कुछ अंगरेज ज्यौतिषियों के मतानुसार २१ जून से २५ जुलाई तक नेपचून का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि कोई व्यक्ति ७, १६, या २५ तारीख़ को पैदा हुआ हो और उपर्युक्त काल में उसकी जन्म तारीख पड़े तो उसमे ऊपर वर्णित नेपचून के गुण विशेष मात्रा में मिलेगे। रविवार तथा सोमवार इन्हे शुभ होते हैं। किसी भी महीने की निम्नलिखित तारीखे इन्हे विशेष अनुकूल होंगी :—

(क)	१,	१०,	१६,	२८
(ख)	२,	११,	२०,	२६
(ग)	४,	१३,	२२,	३१
(घ)	७,	१६,	२५	

अपने अनुभव से यदि यह ज्ञात हो कि ऊपर (क) या (ग) के अन्तर्गत दी हुई तारीखें प्रतिकूल पड़ती हैं—तो उन तारीखो को मुख्य या नवीन कार्य करने के लिये न चुनें।

७ अंक वाले व्यक्तियों को हरा, काफ़ूरी (हलका पीला), सफेद आदि रग विशेष शुभ होते हैं; गहरे रंग अशुभ होते है।

जीवन के विशेष महत्त्वपूर्ण वर्ष

ऊपर बताया जा चुका है कि ७ मूल अक वालो को कौन-कौनसी अगरेज़ी तारीखें अच्छी जावेंगी। (क) वर्ग मे नं० १ मूल

अक वाली तारीखे हैं (ख) वर्ग मे न० २ मूल अक वाली, (ग) वर्ग मे न० ४ मूल अक वाली तथा (घ) वर्ग मे न० ७ मूल अक वाली।

अब अपने गत जीवन के घटनाओ पर विचार कीजिये।

(क) आपके जीवन का १ ला, १० वॉ १९ वाँ वर्ष कैसा गया ? यदि अच्छा—कोई शुभ घटना हुई तो आगे का २८ वा, ३७ वाँ, ४६ वाँ, ५५ वाँ आदि वर्ष भी अच्छे जावेगे।

(ख) २ तथा ७ के अक मे विशेष सहानुभूति होने के कारण, यदि आपका मूल अंक ७ है तो २, ११, २०, २९, ३८, ४७ आदि वर्ष भी आपके जीवन मे महत्वपूर्ण होगे।

(ग) इसी प्रकार अपने गत जीवन के ४ थे, १३ वे, २२ वे वर्ष का सिंहावलोकन करके देखिये कि इन्होने कैसा प्रभाव दिखाया। भावी जीवन का ३१ वाँ, ४० वाँ, ४९ वॉ, ५८ वाँ, ६७ वाँ वर्ष भी उसी प्रकार का प्रभाव दिखावेगा।

(घ) ७ वाँ, १६ वाँ, २५ वॉ, ३४ वाँ, ४३ वाँ, ५२ वा और ६१ वॉ वर्ष आपके जीवन मे अवश्य असामान्य होगे।

अंक ८

इस अक का अधिष्ठाता शनि है। जो लोग निम्नलिखित किसी भी अगरेजी तारीख को उत्पन्न हुए हैं, उनका मूल अक ८ होगा।

$$८=८$$

$$१७=१+७=८$$

$$२६=२+६=८$$

अगरेज़ ज्यौतिषियों के मतानुसार प्रत्येक वर्ष २१ दिसम्बर से १९ फरवरी तक शनि का विशेप प्रभाव रहता है। इसलिये जो लोग उपर्युक्त काल मे पैदा हो और उनकी जन्म की तारीख का

मूल अंक भी ८ हो तो उन पर शनि का प्रभाव विशेष मात्रा में होगा।

८ मूल अंक वाले व्यक्ति बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते है किन्तु अन्य लोग इनके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार नही करते, इस कारण इनके चित्त मे उदासी और अकेलापन रहता है। इन लोगों में बाहरी प्रेम प्रदर्शन की आदत नही होती, इस कारण बहुत से लोग इन्हे शुष्क और कठोर समझते है, परन्तु वास्तव में यह ऐसे नही होते। अपने कार्य की पूर्णता की ओर इनका विशेष ध्यान रहता है और यदि ऐसा करने मे इन्हें किसी से शत्रुता भी उत्पन्न करनी पड़े तो उसकी परवाह नही करते। यह लोग उच्च महत्वाकांक्षी होते है और उच्च सरकारी नौकरी या अन्य महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने मे यदि कष्ट उठाना पड़े या अन्य वलिदान करना पड़े तो उसके लिए भी उद्यत रहते है।

८ मूल अंक वालो को जीवन मे प्रायः बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं—इस कारण ८ को अच्छा अंक नही मानते है।

इस अंक वाले व्यक्तियों का सबसे मुख्य दिन शनिवार होता है, परन्तु रविवार और सोमवार भी शुभ जाना चाहिये। इन लोगों को अपना नवीन या अन्य कोई महत्वपूर्ण कार्य ८, १७ या २६ ता० को प्रारंभ करना चाहिये। यदि साथ ही उस दिन शनिवार पड़े तो और भी अच्छा है।

एक मत यह भी है कि ४, १३, २२ तथा ३१ ता० भी ८ मूल अंक वालों को शुभ होती हैं। कीरो[१] के मतानुसार प्रत्येक वर्ष

---

१. Cheiros Book of Numbers पृष्ठ ८५।

मे २१ दिसम्बर से २२ फरवरी तक शनि का विशेष प्रभाव रहता है। इस कारण यदि ८ मूल अ क वाले इन दो महीनो मे किसी ऐसे दिन कार्य प्रारभ करे जिस दिन तारीख भी ८, १७ या २६ हो और वार भी शनि पड़े तो विशेष इष्टकर होगा। किन्तु एक दूसरा मत यह भी है कि ८ अक वालो को ४ तथा ८ के अतिरिक्त नं० की सख्या (तारीख, मकान आदि) विशेष काम के लिये चुनना चाहिए।

८ मूल अ क वालो को गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेज़ी आदि गहरे रग शुभ होते हैं। हल्के रग शुभ नही हैं।

८ का मूल अंक सब से पृथक् है। इस मूल अक वाले की किन तारीखो मे पैदा हुए व्यक्तियो से मित्रता होगी, यह कहना भी बहुत कठिन है। अपने जीवन की गत घटनाओ से ही ८ मूल अक वाले यह सही नतीजा निकाल सकते है कि कौन सा अक उन्हे कैसा गया। अगर उनके मित्रो मे से अधिकाश का मूल अक ४ है, और मूल अक ८ वाले व्यक्ति के जीवन मे ४ था, १३ वाँ, २२ वाँ आदि ४ मूल अक वाले वर्ष विशेष महत्वपूर्ण गये तो भविष्य मे ३१ वाँ, ४० वाँ, ४६ वाँ, ५८ वाँ, ६७ वाँ वर्ष जीवन मे महत्वपूर्ण जावेगा। यह तो निश्चय है कि ८ मूल अ क वाले व्यक्ति को ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० आदि वर्प महत्वपूर्ण जाते हैं।

किन्तु '८' के अतिरिक्त अन्य कौन से अ क महत्वपूर्ण है, यह केवल जीवन की गत घटनाओ से ही जाना जा सकता है।

बहुत से लोग ८ के अ क को शनि का अ क होने के कारण अशुभ मानते हैं। परन्तु वास्तव मे सब के लिए कोई अ क शुभ या

अशुभ नही होता। अपनी-अपनी जन्म तारीख तथा ग्रह स्थिति वश भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न अंक शुभ या अशुभ होते हैं।

अंक ९

इस अंक का अधिष्ठाता मगल है। निम्नलिखित किसी भी अगरेजी तारीख को पैदा होने वाले व्यक्ति का मूल अंक ९ होगा।

९=९

१८=१+८=९

२७=२+७=९

कीरो[1] के मतानुसार प्रतिवर्ष २१ मार्च से २७ अप्रैल तक और २१ अक्तूबर से २७ नवम्बर तक मगल का विशेष प्रभाव रहता है। इसलिये इस काल मे जो व्यक्ति पैदा होते है, उनकी जन्म तारीख भी ९, १८ या २७ हो तो उन पर मगल का प्रभाव विशेष मात्रा मे होगा :—

"मंगल करावे दंगल" यह प्रचलित लोकोक्ति है। इस कारण ९ मूल अक वाले व्यक्ति साहसी तथा सघर्षशील होते है और कठिनाइयों से जूझ कर सफलता प्राप्त करते हैं। परन्तु उनके स्वभाव मे उग्रता तथा जल्दबाजी होती है। यदि उन्हे ९ मूल अंक वाली तारीखें, या ९ मूल अंक वाले जीवन के वर्ष (९, १८, २७ आदि) विशेष महत्त्वपूर्ण जावे तो समझिये कि उनका जीवन काफी संघर्षमय रहेगा और उनके आवश्यकता से अधिक शत्रु रहेगे। ऐसे व्यक्ति पुलिस, फौज आदि साहस के कार्य मे विशेष सफल होते है। इन्हे सब प्रकार की दुर्घटनाओ (सवारी से टक्कर लगना, आग लग

1 You & Your Birth Star by Cheiro
अंग्रेजी की यह पुस्तक बहुत विस्तृत और पढ़ने योग्य है।

जाना, चोट लगना आदि) से विशेष सतर्क रहना चाहिये। अपने घर मे तथा वाहर भी झगडे से वचना चाहिये—क्योकि ६ मूल अक वाले को शीघ्र क्रोध आजाने से वह झगडा करने पर आमादा हो जाता है। यह लोग असहिष्णु होते हैं और अपनी आलोचना बर्दाश्त नही कर सकते।

इन लोगो मे प्रवन्ध शक्ति अच्छी होती है। प्रेम-पात्र के लिये यह सव कुछ बलिदान कर सकते है। यदि कोई स्त्री इनसे प्रेम का अभिनय करे तो इन्हे काफी बेवकूफ वना सकती है—इस कारण इन्हे इस ओर से सावधान रहना चाहिये।

'६' मूल अक वाले व्यक्ति यदि अपने स्वभाव पर सयम रक्खें तो काफी भाग्यशाली हो सकते हैं। इन्हे ६ के अतिरिक्त ३ तथा ६ का अंक भी शुभ होता है। और मगल, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार शुभ होते हैं। इसलिये सर्वप्रथम तो इन्हे किसी भी महीने की ६ या १८ या २७ वी तारीख महत्वपूर्ण कार्य के लिये चुननी चाहिये। यदि उस दिन मंगलवार का दिन पडे तो और भी अच्छा है। विशेष कर यदि २१ मार्च से २७ अप्रैल तक या २१ अक्तूबर से २७ नवम्बर तक—इस बीच मे ६, १८, या २७ ता० और मंगलवार का योग हो तो विशेष श्रेयस्कर है।

६ मूल अक के अतिरिक्त, इन्हे ३ तथा ६ के अक भी शुभ जाते हैं—इस कारण किसी भी महीने की ३, १२, २१, ३० तथा ६, १५ एव २४ तारीखों की भी परीक्षा करनी चाहिये कि कैसी जाती हैं। ३ या ६ के अंकों में जो (दोनो) अच्छे जावें उन्हे विशेष व्यवहार मे लाना चाहिये। गुलाबी तथा गहरे लाल रग इन्हे विशेष शुभ होगे।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष

९ मूल अक वाले व्यक्तियों के जीवन में ९ वाँ, १८ वाँ, २७ वाँ, ३६ वाँ, ४५ वाँ, ५४ वाँ, ६३ वाँ तथा ७२ वाँ वर्ष अवश्य महत्वपूर्ण जावेगा। इसके अतिरिक्त जिनको ३ की संख्या अनुभव से शुभ हो उन्हे ३ रा, १२ वाँ, २१ वाँ, ३० वाँ ३९ वाँ ४८ वाँ, ५७ वाँ तथा ६६ वाँ वर्ष भी महत्वपूर्ण होगा। तथा जिनको ६ का अंक शुभ जाता हो, उन्हें जीवन का ६ ठा, १५ वाँ, २४ वां, ३३ वाँ, ४२ वाँ ५१ वाँ ६० वाँ तथा ६९ वां वर्ष भी शुभ जावेगा।[१]

---

१. २४ वें, ३६ वें, ४२ वें एवं ४८ वें वर्ष पर क्रमश. चन्द्र, शनि, राहु एवं केतु का विशेष प्रभाव रहता है। अतः जिनकी जन्म कुण्डलियों में इन चारों में से जो ग्रह अच्छे पड़े हैं उन्हें वह वर्ष अच्छा जावेगा—तथा जिनकी जन्म कुण्डलियों में यह ग्रह अनिष्ट राशि या भाव में हैं उन्हें यह वर्ष अच्छे नहीं जावेंगे। यह भारतीय ज्योतिष का मत है।

४ था प्रकरण

संयुक्त-अंक

पिछले प्रकरण में जन्म तारीख से मूल-अंक निकालने की विधि वताई गई है—और इस प्रकार जन्म की अग्रेजी तारीख के आधार पर, शुभ वर्ष, शुभ दिन, शुभ मास, शुभ तारीखे तथा किन तारीखो को उत्पन्न मनुष्यो से विशेष मैत्री या सद्भाव होगा, इसका निर्णय करना बताया गया है।

अब एक कदम आगे चलिये। कुछ प्रसिद्ध अग्रेज़ ज्यौतिषियो का यह निष्कर्ष है कि केवल जन्म की तारीख से जो मूल अंक वनाया जाता है उससे उतना सही पता नही लगता जितना संयुक्त 'अक' से। सयुक्त का अर्थ होता है सयोग करना, जोड़ना—अर्थात् जन्म की अग्रेजी ता० अग्रेजी महीना तथा अग्रेजी सन् तीनों की विविध सख्याओ को जोड़ कर 'सयुक्त' अक बनाया जाता है।

इसको डा० यूनाइट क्रॉस द्वारा दिये हुए उदाहरण से स्पष्ट किया जाता है :—

मान लीजिये कोई व्यक्ति २९ दिसम्वर सन् १८८८ को पैदा हुआ।

इनकी 'Numver तथाPease 'The Psyohology of Fate' दोनों पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं। दोनों में अंक ज्योतिष से सम्वन्धित अनेक विषय हैं।

तारीख २९=२+९ =११=१+१=२
महीना १२=१+२ = ३ =३
सन् १८८८=१+८+८+८ =२५=२+५=७

१२=१+२=३

तारीख, महीने तथा सन् की संख्याओं को जोडने से १२ की सख्या आई। इसकी दोनो सख्याओं को जोड़ने से ३ की संख्या आई।

डा० यूनाइट क्रॉस के मतानुसार इस सयुक्त अक का वहुत महत्त्व है। वह तो इसको इतना अधिक महत्व देते है कि उन्होने इस अंक का नाम 'भाग्य का चामत्कारिक अंक' रक्खा है। उनके अनुसार इस अंक का जीवन पर वहुत प्रभाव पडता है। उन्ही के शब्दो मे सुनिये : "एक युवती का जन्म २० मई १८९० को हुआ। २०-५-१८९० के अंको को जोड़ने से २+०+५+१+८+९+०=२५=२+५=७ भाग्यांक आया। वचपन मे प्रायः जीवन सम्बन्धी विशेष घटनाएँ नही घटित होती—इस कारण स्कूल मे अध्ययन पूरा करने के बाद की घटनाओं का सिंहावलोकन किया जाता है :

भाग्यांक ७

स्कूल छोड़ा १९०६ (७) — जब उम्र थी १६ (७) ७
उसी वर्ष अपने भाई के साथ जुलाई (७) मे
आस्ट्रेलिया गई ७
उसका भाई सिडनी मे, सड़क पर, दुर्घटना ग्रस्त हुआ
२८-८-१९०६ (२+८+८+१+९+०+६)=७ ......७

आग लगने से २२-१२-१९०८ को सम्पत्ति नष्ट हुई
(२+२+१+२+१+९+०+८=२५=२+५=७) ७
१७-४-१९१२ को विवाह हुआ
(१+७+४+१+९+१+२=२५=२+५=७) ७
ता० ७-४-१९१३ को पुत्र उत्पन्न हुआ
(७+४+१+९+१+३=२५=२+५=७) ७
पति १०-८-१९१५ को फौज के हवाई बेडे में मारा गया
(१+०+८+१+९+१+५=२५=२+५=७) ७
उसी वर्ष की जुलाई (७) मे चाचा
के मरने पर बहुत धन प्राप्त हुआ ७
जुलाई (७) १९२४ (७) को ३४ (७)
वर्ष की उम्र मे इग्लैण्ड वापिस आई ७

भाग्यांक ५ का उदाहरण

स्वर्गीय डब्ल्यू० ई० ग्लेड्स्टन (जो इगलैण्ड के प्रधान मन्त्री थे) का
जन्म दिन २९-१२-१८०९
(२+९+१+२+१+८+०+९=३२=३+२=५) ५
१८३२ मे प्रथमबार पार्लियामेंट मे चुने गये
(१+८+३+२=१४=१+४=५) ५
उनकी उम्र उस समय २३ साल की थी
(२+३=५) ५
प्रथमवार ५० मिनिट तक भाषण दिया
(५+०=५) ५

संयुक्त अंक

८८७ वोट प्राप्त हुए ५
(८+८+७=२३=२+३=५)
मा की मृत्यु २३ ता० को हुई ५
(२+३=५) ५
२३ वी तारीख़ को चान्सलर आव् दि एक्सचेकर हुए ५
२३ 'वी' तारीख़ को उपनिवेश-सचिव हुए
फ्रीडम आव् ग्लासगो १-११-१८६५ को प्राप्त हुई ५
(१+१+१+१+८+६+५=२३=२+३=५)
फ्रीडम आव् डब्लिन ७-११-१८७७ को प्राप्त हुई
(७+१+१+१+८+७+७)=३२ ५
=३+२=५
१८६८ मे इग्लैंड के प्रधान मन्त्री हुए ५
(१+८+६+८=२३=२+३=५)
उनकी आयु उस समय ५९ थी ५
(५+९=१४=१+४=५)
२-७-१८८६ को मिडलोथियन तथा लीथ को वापिस आये ५
(२+७+१+८+८+६=३२=३+२=५)
२०-७-१८८६ को त्याग पत्र दिया ५
(२+०+७+१+८+८+६=३२=३+२=५)
१९ — ५ — १८९८ को मृत्यु हुई ५
(१+९+५+१+८+९+८=४१=४+१=५)
२८ — ५ — १८९८ को दफनाये गये ५
(२+८+५+१+८+९+८=४१=४+१=५)

यूरोप के मध्ययुगीय इतिहास मे भी इस प्रकार के उदाहरण उपलब्ध होते हैं। जिन्हे अभिरुचि हो वे कृपया निम्नलिखित पुस्तको का अवलोकन करें[1] :

प्रोफेसर केल्लैएड ने अपनी पुस्तक[2] मे सर एडवर्ड क्लार्क के जीवन की घटनाओ से एक अन्य उदाहरण सकलित किया है। इसमे बारबार '४' तथा '८' की सख्याएँ आती हैं।

भाग्यांक ४

जन्म की तारीख १५-२-१८४१
(१+५+२+१+८+४+१=२२=२+२=४) ... ४
१३ वर्ष की उम्र मे स्कूल छोडा (१+३=४) ... ४
अपने पिता के पास ४ वर्ष काम किया ... ४
स्वय अपना काम स्वतन्त्र रूप से सन् १८५८ मे प्रारम्भ
किया (१+८+५+८=२२=२+२=४) ... ४
१७ वर्ष की उम्र मे (१+७=८) ... ८
प्रारम्भिक वेतन हुआ ८० पौंड (८+०=८) ... ८
जब १७-११-१८६४ को वह बैरिस्टर हुए तो उनकी
चिरकाक्षित इच्छा की पूर्ति हुई (१+७+१+१+
१+८+६+४=२९=२+९=११=१+१)=२ ... २

---

1. "Research in the Efficiency of Dates and Names in the Annals of Nations" तथा Curious Myths of Middle Ages.

2. Harmony in Number, Name and Colour

विवाह २९-१२-१८६६ को हुआ
(२+९+१+२+१+८+६+६=३५
=३+५=८) ८
जब उनकी अवस्था २६ साल की थी। ८
३१ वर्ष की अवस्था में वे मेसन हुए ४
केलिडोनिया लौज नं० १३४ मे प्रविष्ट हुए
(१+३+४=८) ८
साउथवर्क क्षेत्र से पार्लिमेण्ट का चुनाव लड़ने के लिये
टिकट मिला १३-२-१८७९
(१+३+२+१+८+७+९=३१=३+१=४) ४
सन् १८८० मे चुने गये
(१+८+८+०=१७=१+७=८) ८
पार्लियामेण्ट में शपथ ग्रहण की
ता० १६-२-१८८० =(१+६+२+१+८+८+०
=२६=२+६=८) ८
ता० २-११-१९०८ को प्रिवीकौंसिल के मेम्बर बनाये गए
(२+१+१+१+९+०+८=२२=२+२=४) ४
इनके दो बच्चे थे २
इनके दो पत्नियाँ थी २

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि सर एडवर्ड क्लार्क के जीवन मे उनका भाग्यांक (संयुक्त-अंक) ४ वारंवार अपना प्रभाव दिखाता था किन्तु '२' तथा '८' की संख्या भी उनके जीवन से सम्बद्ध थीं। डा० यूनाइट क्रौस के मतानुसार अंक ४ की २ तथा

८ से सहानुभूति है - Richard Wagner नामक एक अन्य व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित '१३' एव '४' के अक की प्रधानता निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होगी —

नाम के अंग्रेजी अक्षरो की सख्या = १३
१३ = १ + ३ = ४ = ४
सन् १८१३ मे पैदा हुआ =
(१ + ८ + १ + ३ = १३ = १ + ३ = ४) = ४
१३ वर्ष की अवस्था मे स्कूल छोडा = १३ = ४
१३ दु खान्त सगीतमय नाटक लिखे = १३ = ४
१३ स्त्रियो से अपने जीवन मे प्रेम किया = १३ = ४
इसका टाइटिल Kapellmeister था जिसमे १३ अक्षर हैं = १३ = ४
१३ फरवरी १८८३ को मृत्यु हुई
(१ + ३ + २ + १ + ८ + ८ + ३) = १३ + १३ = २६ = ८
उसकी पत्नी की १९३० मे मृत्यु हुई
(१ + ९ + ३ + ० = १३) = १३ = ४
उसके श्वसुर का नाम था
Franz Von Liszt (१३ अक्षर) = १३ = ४
उसके दो नाटक १३ को प्रारम्भ हुए
और १३ को ही समाप्त हुए = १३ = ४
तीन नाटको का प्रथम अभिनय
१३ तारीख को प्रारभ हुआ } = १३ = ४
उसके ग्रन्थो का सम्मिलित सस्करण (१९१२)
मे प्रथम वार प्रकाशित हुआ
(१ + ९ + १ + २ = १३) = १३ = ४

ग्रन्थो का सम्मिलित संस्करण
प्रकाशित होना १९३० में समाप्त हुआ =१३ =४
माता का नाम Johanna Wagner
था, इसमे १३ अक्षर हैं) =१३ =४

डा० यूनाइट क्रौस के मतानुसार निम्नलिखित भाग्याकों (सयुक्त-अको) की सहानुभूति उनके सामने लिखे अंकों से है —

भाग्याक	सहानुभूतिवाले अक
१	३, ५ तथा ७
२	४ तथा ८
३	१, ५, और ७, ६ तथा ९
४	२ तथा ८
५	१, ३ तथा ७ (और १०)
६	३ तथा ९
७	१, ३, तथा ५
८	२ तथा ४
९	३ तथा ६

डा० यूनाइट क्रौस के मतानुसार भिन्न-भिन्न भाग्याक (या सयुक्त-अंक) वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित ईसवी वर्ष महत्वपूर्ण गए होंगे या जावेगे .—

भाग्य वर्ष

भाग्यांक १ को	भाग्यांक २ को	भाग्यांक ३ को
१६०६	१६१०	१६११
१६१८	१६१६	१६२०
१६२७	१६२८	१६२६
१६३६	१६३७	१६३८
१६४५	१६४६	१६४७
१६५४	१६५५	१६५६
१६६३	१६६४	१६६५
१६७२	१६७३	१६७४
१६८१	१६८२	१६८३

भाग्य वर्ष

भाग्यांक ४ को	भाग्यांक ५ को	भाग्यांक ६ को
१६१२	१६१३	१६१४
१६२१	१६२२	१६२३
१६३०	१६३१	१६३२
१६३६	१६४०	१६४१
१६४८	१६४६	१६५०
१६५७	१६५८	१६५६
१६६६	१६६७	१६६८
१६७५	१६७६	१६७७
१६८४	१६८५	१६८६

भाग्य वर्ष

भाग्यांक ७ को	भाग्यांक ८ का	भाग्याक ९ को
१९०६	१९०७	१९०८
१९१५	१९१६	१९१७
१९२४	१९२५	१९२६
१९३३	१९३४	१९३५
१९४२	१९४३	१९४४
१९५१	१९५२	१९५३
१९६०	१९६१	१९६२
१९६९	१९७०	१९७१
१९७८	१९७९	१९८०

यह स्मरण रखना चाहिए इस परिच्छेद मे जिस भाग्याक के अनुसार शुभाशुभ के लिए उपर्युक्त वर्ष महत्वपूर्ण बताए है वह "भाग्याक"—जन्म तारीख, महीना तथा सन् की सख्या के सब अकों को जोड़ कर निकाला जाता है।

उदाहरण के लिये महात्मा गांधी का जन्म २-१०-१८६९ को हुआ था।

जन्म तारीख =२

जन्म मास अक्तूबर =१०=१+०=१

जन्म वर्ष १८६९

(१+८+६+९=२४=२+४=६) =६

योग ९

इस पद्धति से महात्मा गाधी जी का संयुक्तांक ९ आया। इसी प्रकार अन्य व्यक्तियों की जन्म तारीख, जन्म मास तथा ईसवी सन् की संख्या जोड़कर संयुक्तांक बनाया जा सकता है।

डा० यूनाइट क्रॉस के मतानुसार भिन्न भिन्न भाग्यांकवालो को शुभ दिन, शुभ मास तथा शुभ तारीखो का कोष्ठ चित्र

भाग्यांक	शुभ वार	शुभ मास	शुभ तारीख
१	रविवार, बृहस्पतिवार	जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, और अक्तूबर	१, १०, १९, २८
२	सोमवार, बुधवार	फरवरी, अप्रैल, अगस्त, और नवम्बर	२, ४, ८, ११, १६, २०, २२, २६, २९, ३१
३	मगलवार, शुक्रवार	मार्च, मई, जुलाई, जून, सितम्बर और दिसम्बर	३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०
४	बुधवार, सोमवार	अप्रैल, फरवरी और अगस्त	२, ४, ८, १३, १६, २०, २२, २६, ३१
५	बृहस्पतिवार, शनिवार	मई, जनवरी, मार्च, जुलाई	५, १०, १४, १९, २३, २५, २८
६	शुक्रवार, मगलवार	जून, सितम्बर	६, ९, १५, १८, २४
७	शनिवार, बृहस्पतिवार	जुलाई, जनवरी, मार्च और मई	७, १४, १६, २५, २८
८	सोमवार, बुधवार	अगस्त, फरवरी, अप्रैल,	४, ८, १६, १७, २६
९	मगलवार, शुक्रवार	सितम्बर, मार्च, जून	९, १५, १८, २४, २७

पृष्ठ ६६ पर कोष्ठचित्र अगरेजी[1] की पुस्तक से दिया गया है।

जो तारीखे रेखाकित है उन्हे विशेपतया अनुकूल समझना चाहिये। इसके अतिरिक्त किस भाग्याक की किस अक से सहानुभूति है यह पहिले बताया जा चुका है (देखिये पृष्ठ ६३), उसके अनुसार भी गत जीवन की घटनाओ से अनुमान लगाना चाहिये कि कौन सा अक विशेष शुभ जाता है।

श्री हेलिन हिचकौक ने भाग्याक से शुभाशुभ वर्ष, मास तथा दिन निकालने का, तथा कौन सा दिन किस कार्य के लिये विशेष उपयुक्त होगा इसका विशद वर्णन किया है। इस विपय मे विशेप अभिरुचि रखने वाले उनकी पुस्तक[2] के पृष्ठ ६९ से १२१ पढे तो ज्ञानवृद्धि होगी। किन्तु इन पक्तियो के लेखक के मतानुसार अक ज्यौतिष-विद्या के मूल सिद्धान्तो को इतनी सरल रीति से कार्य मे लाना चाहिये कि हम लोग उसका दैनिक व्यवहार में उपयोग लाकर लाभ उठा सके। इसलिये हमारे मतानुसार सर्व प्रथम जन्म की तारीख के अनुसार तृतीय प्रकरण मे जो नियम बताये गये है, उनका अनुशीलन और व्यवहार विशेष उपयोगी होगा।

अंक विद्या और यंत्र

यह बात नही है कि केवल पाश्चात्य ज्यौतिषियो ने ही अंको को शुभ या अशुभ माना है। कुछ अको को या अंको के समूहों को

1. "Psychology of Fate" Published by Herbert Jenkins Ltd. 3 York Street, St. James. London S. W. 1

2. "Your Number, Please" by Helyn Hitchcock A. B. Published by W. H. Allen & Co: Ltd. 43 Esse Street Strand London W.C. 2.

अनादि काल से शुभ मानने की परम्परा भारतवर्ष में भी चली आई है। सेफेरियल नामक अगरेज ज्यौतिपी[१] ने लिखा है कि ६ वर्गों को ६ कोप्ठो मे निम्नलिखित प्रकार से लिखना 'पूर्णता' का प्रतीक है देखिये (क) तथा (ख) —

(क)

४	६	२
३	५	७
८	१	६

(ख)

३	१	६
६	७	५
२	८	४

(ग)

८	१	६
३	५	७
४	६	२

उनके विचार से यह 'पूर्णता अथवा ईश्वर' का प्रतीक है। परन्तु हम भारतीय इसे—देखिये (ग)—इस प्रकार लिखने के सदैव से अभ्यासी रहे हैं और प्राय इस प्रकार का अंक-कोष्ठ चित्र दुकानो के मुख्यद्वार के पास भी ऋद्धि, सिद्धि तथा धन की पूर्णता के लिये बना दिया जाता है। यद्यपि अगरेज ज्यौतिषी इसे 'शनि' से सम्बन्धित मानते है किन्तु भारतीय ज्यौतिष के अनुसार यह १५ का यत्र (इसकी संख्याओ को किसी ओर से जोड़िये योग १५ ही होगा) ग्रहराज 'सूर्य' का प्रतीक है। भारतीय ज्यौतिप तथा मंत्रशास्त्र मे इन 'यंत्रो' का उपयोग अनेक काम्य तथा आपत्ति-निवारक प्रयोगों मे किया जाता है और विधि पूर्वक केसर आदि सुगधित द्रव्यो से भोज पत्र पर लिखकर—सोने, चाँदी या ताँबे के तावीज मे बन्द कर शरीर पर धारण करने से शुभ प्रभाव दिखाता

१. The Kabala of Numbers पृ० ६३—६५

है। इसके विस्तृत विवरण के लिये 'यंत्र चिन्तामणि' तथा अन्य मत्रशास्त्र के ग्रन्थ देखने चाहिये। पीछे (क) या (ख) में जो यंत्र दिया गया है, उससे भिन्न भारतीय शास्त्रानुसार १५ का यंत्र होता है।[1] नीचे नवों ग्रहों के यंत्र दिये जाते है :—

सूर्य का यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मगल का यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

शास्त्रकार इन्हे बनाने कीं पद्धति—किस अक को कहाँ लिखना यह बताकर लिखते है "रसेन्दुनागा · विलिख्य धार्यं गद-नाशनाय वदन्ति गर्गादि महामुनीन्द्रा:" अर्थात् इसको धारण करने से रोगादि उत्पात शांत होते है, ऐसा गर्ग आदि महा मुनीन्द्रोंका कथन है। 'नगद्विनन्दा ··· चन्द्रकृतारिष्ट विनाशनाय धार्यं मनुष्यै. शशियंत्रमीरितम्' अर्थात् चन्द्रमा जनित पीडा को दूर करने के लिये इस चन्द्रमा के यंत्र को धारण करना चाहिये। 'गजाग्निदिश्याथ ·····भौमस्य यंत्रं क्रमतो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गा:। अर्थात् जब गोचर से या अनिष्ट राशि या स्थान में होने से मगल अपनी दशा, अन्तर्दशा मे पीड़ा करे या सन्तानकष्ट,रक्त विकार आदि मंगल जनित दुष्प्रभाव हो तो इस यंत्र के धारण से लाभ होता है।

---

१. देखिये बृहद्दैवज्ञरंजन पृ० ९६।

बुध का यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बृहस्पति का यत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र का यत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

'नवाब्धि रुद्रा विलिख्य धार्य गदनाशहेतवे वदन्ति यत्र शशिजस्य धीराः।' यदि बुध जनित—रोग, पित्त प्रकोप, चर्मरोग, व्यापार मे हानि, मित्रो से विरोध आदि दुष्ट फल घटित हो रहे हो और उनका कारण बुध ग्रह का अनिष्ट,प्रभाव हो तो इस यत्र को धारण करे। "दिग्बाणसूर्या शिव विलिख्य धार्य गुरुयत्रमीरिन रुजा विनाशाय वदन्ति तद्बुधा"। अर्थात् गुरु गोचरवश या महा-दशावश रोग आदि कष्ट कर रहे हो तो इस यत्र को धारण करने से शाति होती है। 'गुरु' बृहस्पति को कहते है। 'रुद्राग विश्वा भृगो कृतारि विनाशनाय धार्य हि यत्र मुनिना प्रकीर्तिता 'अर्थात् शुक्र जनित पीडा (विशेषकर वीर्य सम्बन्धी रोग, लक्ष्मी की हानि, स्त्री सुख हानि) को दूर करने के लिये यह यत्र बहुत उपकारी है।

शनि का यत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु का यत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु का यत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

"अर्काद्रि ··विलिख्य भूर्जोपरिद्धार्य विद्वत् शने. कृतारिष्ट-निवारणाय"। भोज पत्र पर लिखकर इसे धारण करना चाहिये। शनि के महाप्रकोप से कौन त्रस्त नही होता ? 'साढेसाती शनि' किसे परेशान नही करती ? अनिष्ट शनि की दशा, अन्तर्दशा तो मानहानि, द्रव्यहानि, शारीरिक क्लेश, मानसिक त्रास, अनेक व्याधि उत्पन्न करती है। उसको शात करने के लिये अंक-विद्या, यत्र विद्या का आश्रय लेना उचित है। राहु के लिये लिखते हैं 'विश्वाष्ट तिथ्या · विलिख्य यत्र सतत विधार्यं राहो. कृतारिष्ट निवारणाय।" राहुजनित पीड़ा को दूर करने के लिये इसे सदैव धारण करना चाहिये। 'मनुखेचर भूपा' दु खनाशकरा" यह केतु का यत्र बनाने और धारण करने का विधान बताया है।

उधर अगरेज ज्योतिषी जिस यत्र को बहुत थोडे से शब्दो में बताते हैं—वही बात हमारे आर्ष ग्रन्थो मे सुस्पष्ट और विस्तृत रूप से मिलती है। हमारे प्राचीन ऋषियो ने कैसे यह ज्ञात किया कि इन अंकों को इस क्रम से लिखने से विशेष शक्ति या प्रभाव उत्पन्न होता-है इसका रहस्य हमारी समझ से बाहर है। उनकी यौगिक शक्ति और ऋतंभरा प्रज्ञा से इस प्रकार का ज्ञान सभव था। हम तो केवल उनके चरण चिह्नो का अनुसरण कर सकते है और अंक-विद्या से लाभ उठा सकते हैं।

५वाँ प्रकरण

'नाम' और अंक विद्या का सम्बन्ध

सभी देशो मे मनुष्य के नाम का विशेप महत्व माना गया है। कुछ देशो मे सम्राट् या राजा के नाम के लिये कुछ नाम विशेष निर्धारित कर दिये जाते हैं और बारबार उन्ही नामो की पुनरावृत्ति होती रहती है। यथा जार्ज प्रथम, जार्ज द्वितीय आदि। जयपुर राज्य मे भी यही क्रम था, माधव सिह जी प्रथम, माधव सिह जी द्वितीय आदि। दक्षिणी भारत मे कुछ कुटुम्बो मे प्रथा है कि जो नाम बाबा का होता है वही ज्येष्ठ पौत्र का। भारत के कुछ भागो मे यह प्रथा प्रचलित है कि विवाह के उपरान्त कन्या के वैयक्तिक नाम का भी परिवर्तन कर दिया जाता है। पत्नी का कौटुम्बिक नाम (सरनेम) तो पाश्चात्य देशो तथा पूर्वी देशो मे बदला ही जाता है किन्तु जैसा ऊपर बताया गया है कुछ प्रान्तो मे कन्या का पितृ गृह का नाम सर्वथा परिवर्तित कर उसका नवीन नाम रख दिया जाता है। इस नवीन नाम की योजना का अन्तर्गत भाव यह होता है कि नवीन नाम, पति के नाम के अनुकूल हो। इस कारण यदि पति का नाम हुआ हर्ष सिह तो पत्नी का नाम करण किया जायेगा हर्षप्रिया, हर्षलता या अन्य इसी प्रकार का नाम।

भारतीय पद्धति के अनुसार नाम के प्रथम अक्षर का विशेष महत्व है। इससे राशि तथा नक्षत्र का निर्णय किया जाता है। नाम का प्रथम अक्षर ही "वर्ण स्वर" आदि का आधार है। इस

कारण पत्नी के नवीन नाम का प्रथम शब्द भी—यदि वही हो जो पति के नाम मे प्रथम शब्द है—तो दोनों मे प्रेम रहेगा। पत्नी के नवीन-नाम-करण का यही सिद्धान्त है।

यहूदियो मे प्रथा है कि जब मनुष्य मरने लगता है तो उसके सम्बन्धी दौड़कर मन्दिर मे जाते है और रोगी के नाम का परिवर्तन कर दिया जाता है—इस आशा से कि शायद नाम बदलने से—प्राचीन नामजनित दुष्प्रभावों का अन्त हो जावे और बीमार बच जावे।

सभवत. सन्यास लेते समय जो नाम बदलने की प्रथा है उसमे भी यह सिद्धान्त निहित है कि गार्हस्थ्य जीवन के नाम से सश्लिष्ट सब सस्कार और वासनाएँ सदा के लिये छूट जावे। भारत मे दो नामों की प्रधानता है। एक राशि नाम की, दूसरे प्रचलित नाम की। राशि का नाम जन्म नक्षत्र के चरण के अनुसार रक्खा जाता है और प्रचलित नाम वह है जो लोकव्यवहार मे प्रचलित रहता है। इस पुस्तक मे बारँबार जहाँ 'नाम' की चर्चा आती है वहाँ कौन सा नाम समझा जावे यह शका होना स्वभाविक है। इस सम्बन्ध मे शास्त्रीय मत निम्नलिखित है[१] .—

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे
जन्मराशेः प्रधानत्व नामराशि न चिन्तयेत्।
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवाया व्यवहारके
नामराशे· प्रधानत्व जन्मराशि न चिन्तयेत्।

अर्थात् सर्व मगलकार्यो मे, यात्रा मे, ग्रहगोचर विचार मे जन्म

१ ज्योतिर्निबन्ध (आनन्दाश्रम पूना से प्रकाशित) पृ० ६६

राशि की प्रधानता है 'नाम' की राशि का विचार न करे। देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवा (नौकरी), व्यवहार (मुकदमा या व्यापार) मे प्रचलित नाम से ही राशि का विचार करे—जन्म 'राशि' का विचार न करे। "राजमार्तण्ड" के अनुसार—जिसकी जन्म राशि मालूम न हो उसके सब विचार मे प्रचलित नाम से ही राशि का विचार करे। "दीपिका" का भी यही मत है। **"जन्म न ज्ञायते येषां तेषां नाम्नो गवेष्यते।"**[१]

सिद्धान्त यह है कि जहाँ जन्मनाम', यह विशेप निर्देश किया हो वहाँ जन्म कुंडली का 'नाम' समझना चाहिये अन्यथा प्रसिद्ध नाम ग्रहण करना चाहिये (किसी मनुष्य के कई प्रसिद्ध नाम हो तो किसका ग्रहण करना—इसके सम्बन्ध मे शास्त्रीय व्यवस्था यह है कि सोता हुआ मनुष्य जिस नाम से जग जावे वह प्रधान है।)

प्रसुप्तो येन जागर्ति, येनागच्छति शब्दितः।
तन्नाम्नश्चादिमो वर्णो ग्राह्यस्तम्माद् भ निर्णय ॥[१]

राशि, वर्ण स्वर आदि मे नाम का प्रथम अक्षर ही लिया जाता है (जैसे किसी का नाम है "राम कृष्ण" तो 'नाम का प्रथम अक्षर 'रा' होने से उसकी राशि तुला, वर्ण स्वर 'ए', आदि) किन्तु अब नीचे पाश्चात्य अक-विद्या के जिस सिद्धान्त[२] से परिचय कराया जाता है उसके अनुसार सम्पूर्ण नाम की सख्या बना कर शुभाशुभ

---

१. देखिए नरपति जयचर्या अध्याय २ (पृ० १५)

२. देखिये Your Number, Please by Helyn Hitchcock A.B पृ० ११ तथा Numerology for Every body by Montrose पृ० ४

विचार किया जाता है। अंगरेजी वर्णमाला मे २६ वर्ण है। नीचे प्रत्येक वर्ण तथा उसका "अक" (सख्या मे मान) दिया जाता है :—

कीरो का मत

A	=	१	J	=	१	S	=	३
B	=	२	K	=	२	T	=	४
C	=	३	L	=	३	U	=	६
D	=	४	M	=	४	V	=	६
E	=	५	N	=	५	W	=	६
F	=	८	O	=	७	X	=	५
G	=	३	P	=	८	Y	=	१
H	=	५	Q	=	१	Z	=	७
I	=	१	R	=	२			

कुछ अग्रेजी, अक-विद्या के विद्वानो को ऊपर जो 'कीरो'[१] का मत दिया गया है वह मान्य नही है। उनके मत उपर्युक्त मत से भिन्न है। जिन्हे इस विषय मे विशेष गवेषणा की इच्छा हो वे कृपया टिप्पणी मे दिये गये मतों का अवलोकन करे।[२]

उदाहरण

मान लीजिये हमें 'जवाहर लाल नेहरु' इस नाम की पाश्चात्य अंक-विद्या के अनुसार सयुक्त संख्या वनानी है, तो इस प्रकार वनाइये :

---

१. Cheiro's Book of Numbers पृ० १०८

२. देखिये "Your Number Please" पृ० १६.

The Kabala of Numbers पृ० ७७ तथा ८३

J = १	N = ५
A = १	E = ५
W = ६	H = ५
A = १	R = २
H = ५	U = ६
A = १	२३
R = २	
L = ३	
A = १	
L = ३	
२४	

"जवाहरलाल" इस नाम का अक हुआ "२४" तथा "नेहरू" इस नाम का "२३"। दोनो मिल कर "४७" हुए। इस प्रकार हम प्रत्येक नाम को सख्या (सयुक्ताक) मे परिवर्तित कर सकते है। इसके अन्य उदाहरण आगे दिये जावेगे। किन्तु उदाहरण देने के पहिले यह बताना आवश्यक है कि 'नाम' को 'सख्या' (सयुक्ताक) मे 'परिवर्तन' करने की उपयोगिता क्या है। अर्थात् इस पद्धति से क्या-क्या विचार किया जाता है।

प्रयोजन :

नाम की 'सख्या' निम्नलिखित विचारो में आवश्यक होती है

(१) नाम शुभ है या नही ? क्या 'नाम' बदलने की आवश्यकता है ?

(२) नाम जन्म तारीख के अनुकूल है या नही ?

(३) नाम के सयुक्ताक के अनुसार, कौन सी तारीख महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये उपयुक्त होगी ?

इन तीनो विषयों पर आगे कमश विचार किया जावेगा। किन्तु उसके पूर्व यह बताना आवश्यक है कि पाश्चात्य अक-विद्या-विशारदों ने किस संख्या' का क्या लक्षण और प्रभाव माना है। १ से लेकर ९ तक के अकों के लक्षण और प्रभाव पहिले बताये जा चुके है। अब, आगे १० से ७० तक की प्रत्येक संख्या के लक्षण और प्रभाव बताये जाते है।

इन 'अको से (१० से मेकर ७० तक) 'प्रश्न' विचार भी किया जाता है। इस विपय का विवेचन आगे प्रश्न खड मे किया जावेगा।

'१०' से '७०' तक संख्या का गुण तथा प्रभाव :

पाश्चात्य अंक विद्यावेत्ताओ ने '१०' से लेकर '७०' तक सयुक्त नामाक्षरो के 'अक' का फल निर्देश किया है। वह संक्षेप में निम्न लिखित है .

१० यह प्रतिष्ठा तथा आत्म विश्वास का अक है। इस अक वाला व्यक्ति, अपनी इच्छानुसार-बुराई या भलाई के लिये सुविख्यात होगा। इस व्यक्ति के इरादे पूरे होते है।

११. यह अंक शुभ नही। ऐसे व्यक्ति को अन्य लोगों से भय, दगाबाजी आदि की आशका होती है। असभावित स्थानों से भी अचानक धोखा होता है।

१२. यह अंक मानसिक चिन्ता तथा कप्ट का द्योतक है और अन्य लोग अपनी कार्य साधना के लिये—अपनी स्वार्थ की वेदी पर १२ अक वाले व्यक्ति के हितो की बलि चढाते है।

१३. यह अक इस बात का द्योतक है कि इरादों और कार्य

क्रमो मे सदैव परिवर्तन होता रहेगा। स्थान-परिवर्तन भी द्योतित होता है। बहुत से लोगो की यह धारणा है कि यह अशुभ अक है, किन्तु वास्तव मे यह अशुभ है नही। १३ ऐसी शक्ति का प्रतीक है—जो उचित रूप से प्रयुक्त न होने पर ध्वसकारी होती है।

१४ इस अक से गति, तथा जन एव वस्तु की समुदायात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है। आँधी, पानी, तूफान, अग्नि, भूकम्प आदि भय की आशका होती है। कार्य-परिवर्तन, धन अथवा सट्टे के लिये यह अक शुभ है। किन्तु जातक के अतिरिक्त अन्य मनुष्यो की गलती से कुछ भय की आशका रहती है।

१५ यह मन्त्र-शास्त्र किंवा रहस्य से सम्बन्धित अक है। यदि किसी के नाम के एक शब्द (जिससे वह पुकारा जाता है) अको का योग '१५' आवे तो भाग्य का द्योतक है। किन्तु यदि ४ अथवा ८ का अक-नाम के अन्य शब्दो का योग हो तो यह शुभ नही होता।

दूसरो से धन की प्राप्ति के लिये यह अक शुभ है। इस अक वाले व्यक्ति सगीत तथा कला के प्रेमी और अच्छे वक्ता होते है।

१६. इस अक से यह प्रकट होता है कि मनुष्य बहुत ऊँचा उठेगा किन्तु बाद मे उसका अधःपतन होगा। अतः इस अक वालो को दुर्घटना से बचना चाहिये। यदि किसी के नाम के सयुक्ताक्षरो का अक १६ हो तो समझिये कि उसकी महत्त्वाकाक्षाओ के चूर्ण होने का भय है।

१७ यह अक आत्मिक शक्ति से विशेष सम्बन्ध रखता है। ऐसा व्यक्ति कठिनाइयो तथा विपत्तियो को पार कर, नाम कमाने मे समर्थ होता है और उसके जीवन के बाद भी उसकी कीर्ति रहती है। यह शुभ अक है।

१८. इस अक से कलह और शत्रुता प्रकट होती है। अर्थात् जिसके नाम के सयुक्ताक्षरो का योगाक १८ हो वह कौटुम्बिक कलह तथा अन्य जनो की शत्रुता से पीड़ित रहता है। प्राय: ऐसे व्यक्ति शत्रुता किंवा ध्वसात्मक प्रवृत्तियो द्वारा भी धन संग्रह करने मे प्रवृत्त होते है। यदि किसी तारीख का सयुक्ताक १८ हो तो उसे भी सहसा किसी शुभ कार्य के लिये नही चुनना चाहिये, यथा १ जनवरी १९६०=१+१+१+९+६+०=१८

१९. यह शुभ अक है। यह सूर्य का प्रतीक है। इससे हर्ष, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मानवृद्धि प्रकट होती है।

२०. इस अक को भी शुभ माना गया है। "जागृति" तथा 'न्याय' का प्रतीक यह अक है। इससे नवीन योजना व नई महत्त्वा-काक्षाऐं प्रकट होती है। किन्तु निश्चय ही सासारिक सफलता होगी, यह इस अक से नही कहा जा सकता। यदि भविष्य विषयक प्रश्न मे यह अक प्रयुक्त किया जावे तो इससे विलम्ब तथा कार्य मे कठिनाइयाॅ या अड़चने प्रकट होती है।

२१. इससे उन्नति, प्रतिष्ठा, पद वृद्धि आदि प्रकट होती है। प्रश्न मे यदि यह अक प्रयुक्त हो तो कार्य की सफलता प्रकट होती है।

२२. यह इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति तो अच्छा है किन्तु वह अपने स्वप्न की दुनिया में रहता है—मिथ्या आशा मे अपना समय व्यतीत करता रहता है और जब विपत्ति बिल्कुल सिर पर आ जाती है तब चौकन्ना होता है। इससे यह भी प्रकट होता है जो धारणा बना रक्खी है वह मिथ्या है। प्रश्न मे यह अंक प्रयुक्त हो तो भी यही अर्थ लगाना चाहिए।

२३. उच्चाधिकारियो की कृपा किंवा अपने से श्रेष्ठ जनो की सहायता द्वारा सफलता एव उच्चपद प्राप्ति होती है। प्रश्न मे भी यही समझना।

२४. यह भी शुभ अक है। अपने कार्य मे उच्च पदाधिकारियो के सयोग तथा उनकी सहायता व्यक्त होती है। किसी पुरुष को, किसी स्त्री के प्रेम तथा सहायता से (और स्त्री को, किसी पुरुष—पति, पिता, भाई या अन्य व्यक्ति के स्नेह और सहायता से) लाभ होता है। प्रश्न मे भी फल शुभ है।

२५ इससे प्रकट होता है कि अनुभव द्वारा शक्ति सम्पादित होगी और दूसरो की गति-विधि अवलोकन करने से लाभ होगा। एक प्रकार से इसे सर्वथा शुभ नही कह सकते क्योकि प्रारम्भिक जीवन मे बहुत सघर्ष और कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है, तब कही जाकर सफलता प्राप्त होती है। भविष्य विषयक प्रश्न मे इसका परिणाम शुभ है।

२६. दूसरो के सयोग किंवा सहयोग से भारी आशका तथा विपत्ति प्रकट होती हैं। दूसरो की सलाह, सयोग (साझेदारी, विवाह) तथा सट्टे आदि से घाटा या भारी नुकसान होने का अन्देशा जाहिर होता है।

२७ इससे हुकूमत तथा उच्चाधिकारिता प्रकट होती है। बुद्धि के फलस्वरूप सुपरिणाम निकलेगा। ऐसे व्यक्तियो को अपने स्वय के विचारो को कार्यान्वित करना चाहिए। भविष्य प्रश्न मे भी यह सख्या बहुत शुभफल सूचित करती है।

२८. इस सख्या से दो विरुद्ध दिशाओ मे जाने वाली शक्तियाँ सूचित होती है—ऐसे व्यक्तियो को अपने कार्य स्वरूप बहुत प्राप्ति

तथा सफलता की आशा होगी किन्तु, यदि वह सावधानी न बरते तो-उसके पल्ले कुछ नही पडेगा। दूसरों मे अन्धविश्वास रखने किंवा व्यापार में प्रतिक्रिया विरोध, या प्रतियोगिता के कारण किंवा अदालत, मुकद्दमे या कानूनी कार्रवाई के कारण घाटे की सभावना प्रकट होती है। भविष्य विषयक प्रश्न मे भी इस सख्या से शुभ परिणाम प्रकट नही होता।

२९. इस अक से अस्थिरता, या अनिश्चित स्थिति प्रकट होती है। ऐसे व्यक्ति के मित्र विश्वास के योग्य न होगे और उनके कारण उसे धोखा, अचानक भय, कष्ट हानि आदि की सभावना रहेगी। जिन पुरुषों के नाम का सयुक्तांक २९ हो, उन्हे स्त्रियो तथा जिन स्त्रियों का सयुक्ताक २९ हो उनको पुरुषो से धोखा या कष्ट उठाना पड़ेगा। प्रश्न मे भी यदि यह संख्या आवे तो शुभ नही।

३०. ऐसे व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान् तथा प्रतिभासम्पन्न होते है और आर्थिक सचय की ओर विशेष ध्यान न देकर विद्या सचय की ओर चित्तवृत्ति तथा बुद्धि को लगाते हैं। इस कारण न इसे शुभ कह सकते है न अशुभ।

३१. इस संख्या का भी प्राय: वही फल है जो ऊपर ३० का दिया गया है। बल्कि इस संख्या वाला व्यक्ति और भी एकाकी, अन्तर्मुखी वृत्ति वाला, सबसे दूर और अलग रहने की प्रवृत्ति के कारण सांसारिक सफलता से हीन रहता है--इस कारण यह सख्या शुभ नही।

३२. इस अक में भी वही चमत्कार है जो ५ या १४ की सख्या मे। इससे बहुत व्यक्ति या राष्ट्रो का समुच्चय या समुदाय इंगित

होता है। इस सख्या वाला व्यक्ति यदि स्वय अपने इरादों को कार्यान्वित करे तो उसे सफलता होगी। किन्तु यदि वह अन्य व्यक्तियो की जिद या मूर्खता से पूर्ण सलाह को मान्यता देगा तो सफलता प्राप्त नही होगी। भविप्य विषयक प्रश्न मे भी यह सख्या शुभ है।

३३ इस सख्या की अपनी कोई विशेष शक्ति नही है, इस कारण इसका भी वही प्रभाव समझना चाहिए जो २४ का बताया गया है।

३४. इस का भी वही प्रभाव है, जो २५ का ऊपर बताया गया है।

३५ इसका प्रभाव २६ के सदृश है।

३६ इसका प्रभाव २७ के सदृश है।

३७ यह विशेष शक्ति सम्पन्न सख्या है। ऐसे व्यक्ति को प्रेम (स्त्री-पुरुष प्रेम) तथा मित्रता—दोनो मे सफलता तथा भाग्योदय प्राप्ति होगी। ऐसे व्यक्ति किसी की साझेदारी मे कार्य करे तो उन्हे उसमे भी लाभ होगा।

३८ इस सख्या का भी वही प्रभाव है जो २९ का।

३९ इसका प्रभाव ३० के सदृश है।

४०. यह ३१ के सदृश है।

४१ इसका प्रभाव ३२ के सदृश है।

४२. ऊपर २४ सख्या का जो प्रभाव बताया गया है वही ४२ का भी है।

४३. यह अशुभ सख्या है। इसस असफलता, बाधा, लडाई-झगडा, गडबड़, क्रान्ति आदि अशुभ परिणाम सूचित होते है।

४४. इसका प्रभाव २६ के सदृश है।

४५. इसका प्रभाव २७ के सदृश है।

४६. इसका प्रभाव ३७ के सदृश है।

४७ इसका प्रभाव २९ के सदृश है।

४८. इसका प्रभाव ३० के सदृश है।

४९. इसका प्रभाव ३१ के सदृश है।

५०. इसका प्रभाव ३२ के सदृश है।

५१. इस सख्या मे वहुत शक्ति है। इससे 'योद्धा' अथवा 'विजयी' इंगित होता है। ऐसा व्यक्ति जो भी कार्य करे उसे सफलता प्राप्त होगी। सैनिको के लिए यह विशेष शुभ है। नेताओ के लिए भी सफलता सूचक है। किन्तु इस सख्या वाले व्यक्ति के बहुत से शत्रु भी होगे –उनसे भय तथा उनके द्वारा कत्ल किए जाने की आशका भी रहेगी।

५२. इसका भी ४३ के सदृश प्रभाव है।

५३. इस सयुक्ताक वाला व्यक्ति गुप्तचर का कार्य अच्छा कर सकता है। सैनिक नेतृत्व मे सफलता प्राप्त हो सकती है। यह अंक उन्नतिसूचक है।

५४. इस अक वाले व्यक्ति की लोग प्रतिष्ठा करते है। वह वाग्मी, विद्वान् तथा धनिक होता है, परन्तु लगड़े होने का डर रहता है।

५५. यह नेतृत्व का अक है। ऐसा मनुष्य प्रखर बुद्धि का तथा धार्मिक विचार का होता है और अन्य जनो का नेतृत्व करता है।

५६. यह अक शुभ तथा अशुभ दोनो है। ऐसा व्यक्ति सौभाग्ययुक्त होता है तथा दूसरो पर नेतृत्व करने की चेष्टाकरता है परन्तु कई बार उसकी आकांक्षाएँ निकृष्ट प्रकार की होती है। ऐसा

व्यक्ति घबराया हुआ, बेचैन सा रहता है। आत्मसयम का उद्योग करना चाहिए।

५७ यह अक कार्य या व्यवसाय मे सफलता का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति खुश मिजाज तथा क्रियाशील होता है।

५८. इस सख्या वाले अच्छे चिकित्सक हो सकते है। ऐसे व्यक्ति स्पष्ट व्यवहार वाले होते है तथा दूसरो से स्नेह करते है।

५६ इस अक वाले व्यक्ति की भय और विपत्तियो से सदैव रक्षा होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत प्रकार के कारबार करता है और यात्रा भी बहुत करता है। जलयात्रा विशेष सफलताद्योतक है। यदि बैंक या दलाली का काय करे तो पूर्ण सफलता हो किन्तु बेई-मानी की प्रवृत्ति भी होगी। ऐसा व्यक्ति प्राय: विजय प्राप्त करता है और दीर्घजीवी होता है। केवल दोष यही है कि ऐसे मनुष्य की सट्टे तथा बेईमानी की ओर प्रवृत्ति होती है।

६० इस अंक वाला व्यक्ति खुशमिजाज़ होता है और उसे डाक्टर, नर्स, आदि के कार्य मे सफलता प्राप्त हो सकती है।

६१ इस अक वाला व्यक्ति यात्रा का शौकीन, शान्तिप्रिय तथा आत्म सयमी होता है।

६२ इसका प्रभाव वही है जो ५३ का है।

६३ इस अक वाले व्यक्ति स्वस्थ, और दूसरो की उन्नति तथा उपकार के लिए कार्य करने वाले होते है। प्राचीन सामाजिक प्रथाओ के सशोधन की ओर उनका विशेष ध्यान रहता है। व्यापार मे भी सफल होते हैं किन्तु अपव्यय की ओर भी प्रवृत्त होते है। हानि या लाभ के विषय मे निर्णायकता से कुछ नही कहा जा सकता।

६४ इस अक वाले व्यक्ति को व्यापार की अपेक्षा नौकरी या

अपना पेशा (डाक्टरी, वकालत आदि) विशेष लाभ प्रद होगा। साहित्यिक प्रवृत्ति होती है। वैवाहिक जीवन के बन्धन मे अरुचि रहती है।

६५. इस अक वाले व्यक्ति को बडो का आश्रय प्राप्त होता है वैवाहिक जीवन भी सुखमय रहता है किन्तु चोट लगने या दुर्घटना का भय रहता है।

६६. इसका वही प्रभाव है जो ५७ का है।

६७. इसका वही प्रभाव है जो ५८ का है।

६८. इसका वही प्रभाव है जो ५९ का है।

६९. इस अंक से सम्मान, प्रतिष्ठा, सौभाग्य तथा कीर्ति सूचित होते है।

७०. यह सौभाग्यसूचक अक है किन्तु उतना शक्तिशाली नही।

अब नाम का सयुक्त बनाकर किस प्रकार विचार करना यह बताया जाता है —

नाम शुभ है या नहीं

किसी नाम की शुभता या अशुभता इस बात पर निर्भर है कि

(१) उस नाम का 'सयुक्ताक' क्या बनता है ? इस सख्या का क्या गुण और प्रभाव पिछले पृष्ठों पर दिया गया है।

(२) नाम का 'सयुक्ताक' जन्म तारीख के मूल अक से सहानुभूति रखता है या विरोध।

ऊपर श्री जवाहरलाल नेहरू जी के नाम का 'संयुक्तांक' बना कर बताया गया है कि अगरेजी वर्णमाला के अनुसार "जवाहर लाल" का सयुक्तांक '२४', 'नेहरू' का २३ तथा दोनो नामों का (व्यक्तिगत तथा कुल-नाम) सम्मिलित—सयुक्ताक ४७ बनता है। अब आप

पिछले पृष्ठो मे देखिए कि २४ का क्या प्रभाव है, '२३' का क्या तथा '४७' का क्या ? यदि नाम के 'सयुक्ताक' का शुभ प्रभाव दिया है तो नाम को शुभ समझना चाहिए । बहुत से विज्ञ पाठको को यहाँ यह शकाहोना स्वाभाविक है कि नाम के 'सयुक्तॉक' पर विचार करते समय' जवाहरलाल' इस पद पर विचार किया जाये या 'नेहरू' या 'जवाहर लाल नेहरू' पर । इस सम्बन्ध मे यह निर्णय है कि जिसके जिस नाम से वह अधिक विख्यात हो वही नाम उसका—उपर्युक्त विचार मे, ग्रहण करना चाहिए । हमारे खयाल से माननीय पडित जी का 'नेहरू' नाम विश्व विख्यात है । भारतीय तो 'पडित जी' या 'जवाहर लाल जी' इन नामो का भी—आपस की वातचीत मे प्रयोग करते है । परन्तु विश्व मे 'नेहरू' नाम ही विशेष प्रसिद्ध है । अत कुछ गुण तो '२४' (जवाहर लाल) का और कुछ '४७' का (जवाहरलाल नेहरू) भी मिलेगा। परन्तु मुख्य प्रभाव '२३' (नेहरू) का माना जावेगा ।

अब एक दूसरे नाम का उदाहरण दिया जाता है —

महात्मा गाधी का नाम यद्यपि मोहनदास था तथापि इस नाम काप्रयोग जनता ने नही किया । उनका गाधी नाम ही विश्व-विख्यात हुआ ।

G=३
A=१
N=५
D=४
H=५
I=१

१९

देखिए इस '१६' अक का प्रभाव वहुत उत्तम दिया गया है। कहते है कि 'नेपोलियन' जब तक अपना नाम Napolean Bounaparte लिखता रहा तब तक उसके नाम के 'सयुक्ताक' का शुभ प्रभाव रहा। किन्तु दैव दुर्विपाक से उसने अपने नाम की हिज्जे वदल लिये और नवीन हिज्जे (अगरेजी वर्णमाला के प्रयुक्त अक्षरो) Bonapart का प्रभाव वडा अशुभ रहा।[१]

हमे कई भुक्तभोगी सज्जनो ने बताया कि जब तक वह अपना नाम प्राचीन प्रकार से लिखते रहे तब तक उनकी उन्नति या भाग्य वृद्धि नही हुई। किन्तु जब उन्होने नाम के हिज्जे बदललिये तो सयुक्ताक भिन्न हो जाने से जो नयी संख्या बनी उसका शुभ प्रभाव होने के कारण भाग्यवृद्धि हुई।

प्राय 'नाम' वदलना आसान नही है। परन्तु नाम की हिज्जे वदलना सुगम है। उदाहरण के लिए किसी सज्जन का नाम "कैलास चन्द्र" गोयल है।

K=२	C=३	G=३
A=१	H=५	O=७
I=१	A=१	Y=१
L=३	N=५	A=१
A=१	D=४	L=३
S=३	R=२	
	A=१	
११	२१	१५

१. देखिये Cheiros Book of Numbers पृष्ठ १४६ तथा Numerology for Every body पृष्ठ ५६, ५७।

अगरेजी वर्णमाला के प्रतिवर्ण के योग के अनुसार कैलास चन्द्र गोयल नाम का सयुक्ताक ४७ हुआ । '४७' का वही प्रभाव होता है जो '२६' का (देखिए पृष्ठ ८१ तथा ८३) । '२६' का शुभ प्रभाव नही है । इसलिए यदि यह सज्जन अपना नाम नही बदले (क्योकि नाम बदलने मे अनेकानेक झझट है) किन्तु अपना नाम 'कैलास चन्द्र गोयल' के स्थान मे केवल "कैलासचन्द्र" लिखे तो भाग्योदय कारक होगा क्योकि इस नाम का सयुक्ताक ३२ होगा जो बहुत शुभ है ।

'नाम' और जन्म तारीख का सामञ्जस्य

यह एक विचार है। दूसरा यह भी विचार है कि नाम का सयुक्ताक 'जन्म तारीख' के अनुकूल पडता है या नही । उदाहरण के लिए 'कैलासचन्द्र' इस नाम का सयुक्ताक '३२' हुआ यदि 'Kailas Chandra' के स्थान मे 'Kailash Chandra' लिखा जाये ('s' के बाद एक 'h' और जोड दिया जावे—क्योकि 'कैलास' और 'कैलाश' दोनो रूप भाषा की दृष्टि से शुद्ध है) तो 'h' का अक ५ और सम्मिलित हो जाने से,

K=२	C=३
A=१	H=५
I=१	A=१
L=३	N=५
A=१	D=४
S=३	R=२
H=५	A=१
१६	२१

सयुक्तांक '३७' हुआ। इस अंक का भी शुभ फल है। (देखिए पृष्ठ ८२)। अब कैलासचन्द्र को '३२' तथा '३७' में से उस अंक को पसन्द करना चाहिए जो उनकी जन्म तारीख़ के अनुकूल हो :—

३२=३+२=५
३७=३+७=१०=१+०=१.

यदि इनकी जन्म तारीख़ ५, १४ या २३ हो तो इन्हे ३२ की संख्या विशेष शुभ होगी। यदि इनकी जन्म तारीख १, १०, १९, २८ या ४, १३, २२, ३१ हो तो इन्हे '३७' की संख्या शुभ होगी। यदि २, ११, २०, २९ अथवा ७, १६, २५ तारीख को जन्म हुआ हो तो भी '३७' की सख्या शुभ होगी।

इस सम्बन्ध मे एक बात और उल्लेखनीय है।

(i) यदि जन्म-तारीख़ का मूल अक '४' हो और नाम का सयुक्तांक '८' आता हो तो नाम के अक्षरों को इस प्रकार बदलिए कि नाम के सयुक्तांक ३, ६ या ९ बन जावे।

(ii) इसी प्रकार यदि जन्म-तारीख़ का मूल अंक ८ हो और नाम का सयुक्तांक '४' आवे तो नाम के अक्षरों को इस प्रकार बदलिए कि नाम का संयुक्ताक ३, ६ या ९ बन जावे।

कहने का तात्पर्य यह है कि जन्म-तारीख का मूल अंक तथा नाम का 'सयुक्ताक'—इन दोनों में से एक ४ और दूसरा ८ होना शुभ नही।

जिस प्रकार हमने पिछले पृष्ठों में यह विचार किया है कि जन्म-तारीख के 'मूल अंक' और नाम के सयुक्तांक में सामञ्जस्य होना शुभ है, उसी प्रकार यदि मनुष्य के जन्म-तारीख के मूल अंक, नामांक तथा जिस शहर में वह कारबार करता है उस शहर के

नामांक में भी सामञ्जस्य हो तो, उस शहर मे उस मनुष्य की विशेष श्री-वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए कोई सज्जन पूछते है कि "मैं नई दिल्ली मे कारबार कर रहा हूँ, यदि इलाहाबाद में दूकान खोलूं तो कैसा रहेगा ?"

पिछली प्रक्रिया के अनुसार नई दिल्ली तथा इलाहाबाद दोनों नामों के संयुक्तांक पृथक्-पृथक् बनाइये :—

N=५	A=१
E=५	L=३
W=६	L=३
D=४	A=१
E=५	H=५
L=३	A=१
H=५	B=२
I=१	A=१
	D=४
३४=३+४=७	२१=२+१=३

अब यदि उनके जन्म-तारीख के मूल अंक तथा नाम के 'संयुक्तांक' इन दोनो अंको की '७' से विशेष सहानुभूति है तो नई दिल्ली ही उनके लिए विशेष शुभ रहेगी। यदि '३' से विशेष सहानुभूति है तो इलाहाबाद विशेष उपयुक्त होगा।[१] इसी प्रकार मोहल्ले आदि का विचार किया जा सकता है।

इसी प्रकार किराये का मकान लेते समय या अन्य अवसरों पर

१. Numerology For Every body by Montrose पृष्ठ ५

यह निर्णय करने में कि कौनसा मकान विशेष शुभ होगा, अंक-विद्या से लाभ उठाया जा सकता है। अथवा हम अपने मकान का ऐसा नाम रख सकते हैं जिसका 'सयुक्ताक' हमारे लिए अनुकूल हो। कीरो का मत है कि जिसका मूल अक ४ या ८ हो उसे नवीन नाम रखते समय या मकान चुनते समय ४ या ८ वाला मकान नही चुनना चाहिए।

नाम के संयुक्तांक के अनुसार कौन सी तारीख़ महत्वपूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त होगी ?

ऊपर जो नाम के सयुक्तांक बनाने के उपयोग दिये गये हैं, उनके अतिरिक्त 'संयुक्तांक' की एक उपयोगिता और है।

उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को यह देखना है कि वह वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना पत्र किस दिन भेजे या अपने अफसर से किस दिन मिले। मान लीजिए उसकी जन्म-तारीख ११ अप्रैल है। जैसा कि तृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है किसी भी महीने की तारीख २, ११, २०, २९ तथा ७, १६, २५ उसके लिए अनुकूल होंगी। इसके अतिरिक्त अंक १, १०, १९, २८ तथा ४, १३, २२, ३१ की भी मूल अक '२' से सहानुभूति है। इस कारण ये तारीखें भी अनुकूल होंगी। किन्तु इस विचार मे 'रामलाल', 'श्यामलाल', 'गोविन्द शरण', 'यज्ञदत्त' या 'देवदत्त'—सभी के लिए एक समान नियम लागू किया है; नाम के अलग-अलग होने पर भी क्या सब को एक ही तारीख़ समानरूप से अनुकूल होगी यह शंका होना स्वाभाविक है।

इस कारण निम्नलिखित पद्धति से यह निश्चित किया जाता है कि रामलाल को कौनसी तारीख़ वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना पत्र

भेजने के लिए अनुकूल होगी।

(क) रामलाल नाम का सयुक्ताक बनाइये :—

R = २
A = १
M = ४
L = ३
A = १
L = ३
———
१४

(ख) जन्म की तारीख का अक १ १ = १ + १ = २

(ग) मान लीजिए वह २१ जुलाई को प्रार्थनापत्र भेजना चाहते हैं तो, २१ = २ + १ = ३।

अब १४, २ तथा ३ को जोडने से योग हुआ १६। इस '१६' 'सयुक्ताक' का फल पिछले पृष्ठो मे देखने से पता चलता है कि 'यह शुभ अक है। यह सूर्य का प्रतीक है। इससे हर्ष, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मानवृद्धि प्रकट होती है। (देखिये पृष्ठ ७६)

इस कारण 'रामलाल' को (जिसकी जन्म-तारीख ११ है) तारीख २१ शुभ होगी।

इस प्रकार नाम के 'सयुक्ताक' और जन्म-तारीख के मूल अंक के सहयोग से निर्दिष्ट तारीख चुनने मे भी 'नाम' का महत्व है।

६ठा प्रकरण

मास, वार तथा घण्टे का महत्व

इंग्लैण्ड के सम्राट् घराने का ज्योतिषियो और ज्योतिष सम्बन्धी फलादेशो से वहुत सम्बन्ध रहा है। इग्लैण्ड के बादशाह जार्ज प्रथम का डचेज आफ जैल से प्रेमसम्बन्ध हो गया और बादशाह ने उससे विवाह कर लिया। किन्तु बाद में इस महाराज्ञी का योरुप के काउन्ट कोनिग्समार्क से अनुचित सम्बन्ध हो गया और वह चाहती थी कि काउन्ट के साथ भाग जावे, किन्तु बादशाह ने महाराज्ञी को 'अहलेन' के किले में बन्दी कर दिया और उससे अपना विवाह-विच्छेद कर लिया। तलाक दी हुई, इस डचेज ने बहुत उद्योग किया कि भाग निकले किन्तु वह असफल रही। अंत में उसने 'पार्ड जेप्ल' नामक एक अंगरेज ज्यौतिषी की सहायता ली। इस ज्योतिषी ने जार्ज प्रथम की जन्म-कुण्डली बनाई—जो इंग्लैण्ड के राजकीय पत्रों मे सुरक्षित रक्खी गई। इस जन्म-कुण्डली में उसने फलादेश किया था कि जिस दिन 'डचेज़' की मृत्यु होगी उसके ठीक एक वर्ष और एक दिन बाद बादशाह की मृत्यु होगी। हुआ भी ऐसा ही। 'डचेज' की मृत्यु १० जून १७२६ को हुई और बादशाह की ११ जून सन् १७२७ को।

उपर्युक्त घटना का उल्लेख इसलिए किया गया है कि बहुत से लोग विशेष घटनाओं को केवल आकस्मिक संयोग कह कर टाल देते हैं। वास्तव में ऐसी घटनाएँ ज्योतिष के गंभीर सिद्धान्तों पर

अवलबित हैं। कोई कोई महीने किसी देश, व्यक्ति या घराने के लिए बहुत महत्व पूर्ण होते है। नीचे जो ऐतिहासिक तिथियाँ दी गई है इनसे स्पष्ट होगा कि अप्रैल से लेकर जुलाई तक के मास इग्लैण्ड के राज घराने के लिये बहुत महत्वपूर्ण हुए है।

"जार्ज प्रथम की मृत्यु	११ जून
जार्ज तृतीय का जन्म-दिन	४ जून
साम्राज्ञी विक्टोरिया का जन्मदिन	२४ मई
ड्यूक आफ यौर्क का जन्मदिन	३ जून
प्रिंसेज मेरी आफ तेक का जन्म दिन	२६ मई
एडवर्ड अष्टम (ड्यूक ऑफ विडसर का जन्मदिन)	२३ जून
साम्राज्ञी विक्टोरिया सिहासनारूढ हुई	२० जून
वाटरलू की प्रसिद्ध लडाई .	१८ जून
जार्ज द्वितीय सिंहासन पर बैठे	११ जून
विलियम चतुर्थ गद्दी पर बैठे	२६ जून
सम्राट् सप्तम एडवर्ड की मृत्यु	६ मई
सम्राट् जार्ज पचम की गद्दी नशीनी	६ मई
सम्राट् पचमजार्ज की ताजपोशी	२२ जून
सम्राट् पचम जार्ज का विवाह	६ जुलाई"

कीरो ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि उसने यह सब विस्तार से अध्ययन किया था और इगलैण्ड के राजघराने के सम्बन्ध मे जो उसने 'अंक' विषयक या 'मास' विषयक निष्कर्ष निकाले थे वह उसने एडवर्ड सप्तम को स्वय बताए थे।[1]

Cheiro's World Predictions page 82-83.

अनुभव से यह विदित होता है कि कोई कोई मास किसी किसी व्यक्ति को विशेष शुभ या अशुभ जाता है। किस तारीख़ में उत्पन्न व्यक्ति को कौन सा मास शुभ जावेगा ? इस सम्बन्ध में पाश्चात्य मत तृतीय प्रकरण में बताया जा चुका है।

भारतीय मत—अब भारतीय मत दिया जाता है। भारतीय मतानुसार ज्यौतिष के सिद्धान्तों से यह निकाला जा सकता है कि अमुक सौर मास (संक्रान्ति से संक्रान्ति तक) अमुक व्यक्ति को कैसा जावेगा। केवल अंक ज्योतिष से भारतीय मतानुसार शुभाशुभ मास निर्णन करना कठिन है। ज्यौतिष प्रेमियों की सुलभता के लिए नीचे की पंक्तियों मे कुछ निर्देश मात्र किया जा रहा है :—

सर्वतोभद्र का विचार वहुत गहन, विस्तृत और सूक्ष्म ज्योतिष तथा नक्षत्र विद्या से सम्बन्ध रखता है; इस कारण इस छोटीसी अंक-विद्या में उसका परिचय देना सम्भव नही है। परन्तु पाठकों के लाभार्थ यह लिख देना आवश्यक है कि जब सूर्य राशि विशेष में रहता है तब कुछ दिशा 'अस्तमित' मानी जाती हैं। तीन-तीन मास तक-एक एक दिशा 'अस्त' रहती है :—

"नक्षत्राणि स्वरा वर्णा राशयस्तिथयो दिशः।
ते सर्वेऽस्तंगता ज्ञेया यत्र भानुस्त्रिमासिकः ॥[1]

जिस मनुष्य के जन्म का नक्षत्र अस्त हो उसे रोग होता है, 'वर्ण' अस्त हो तो हानि होती है, 'स्वर' अस्त हो तो शोक होता है, राशि अस्त हो तो विघ्न होते हैं तथा जन्म-तिथि अस्त हो तो

---

१. विशेष विवरण के लिए देखिए 'नरपतिजयचर्या' पृष्ठ १००; फलदीपिका पृष्ठ ३०३-३१५; जातक-सारदीप पृष्ठ ६०४ जातकादेशमार्ग प्र० ६ श्लोक १३।

भय होता है। 'पचास्ते मरण ध्रुवम्'। क्रूर दशा अन्तर्दशा के साथ पाँचो (नक्षत्र, वर्ण, स्वर, राशि तथा तिथि) अस्त हो तो निश्चय मरण होता है। प्रायः एक, दो या तीन के अस्त होने से भी काम-काज मे उलझन और अडचन पैदा हो जाती हैं। किसी किसी व्यक्ति के जन्म-नाम के प्रथम अक्षर, वर्ण, स्वर आदि सर्वतोभद्र चक्र की विविध दिशाओ मे आ जाते है, इस कारण केवल अक्षर या स्वर आदि किसी एक के अस्त होने से उन्हे कोई खास महीना अशुभ नही प्रतीत होता। किन्तु जिनके नाम के अक्षर, नक्षत्र, तिथि आदि कई, एक दिशा मे पड जाते है—उनके यह सब एक साथ अस्त होने से विशेष कष्ट उत्पन्न करते है। इसलिए या तो सर्वतोभद्रचक्र सम्बन्धी पूर्व पृष्ठ मे उल्लिखित पुस्तको के आधार पर या अपने अपने गत जीवन के अनुभव से अपने लिए जो अशुभ मास हो उनमे विशेष सतर्क रहना चाहिए। भारतीय ज्योतिष के मतानुसार सूर्याष्टक वर्ग मे जिस राशि मे अधिक रेखा हो उस सौर मास मे सब शुभ कर्म करने चाहिए और जिसमे कम रेखा हो उसमे यात्रा या अन्य महत्वपूर्ण कार्य न करे।

इस सम्बन्ध मे पाश्चात्य मत तो पहले ही दिया जा चुका है कि कीरो के मतानुसार कौनसा मास किस अक वाले को शुभ होगा।

वार का महत्व—मास के बाद मुख्यता होती है वार की। जिस प्रकार किसी तारीख या मूल अक का किसी के जीवन मे विशेष महत्व रहता है उसी प्रकार किसी वार की भी प्रधानता या महत्व किसी व्यक्ति या राष्ट्र के जीवन मे देखा गया है।

प्रसिद्ध अन्वेषक कोलम्बस शुक्रवार मे बहुत श्रद्धा रखता था। इसका कारण यह था कि उसके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ

शुक्रवार को ही हुई। और जब बारम्बार उसने अपने को शुक्रवार से प्रभावित पाया तो इस वार मे उसकी श्रद्धा होना स्वाभाविक था। वह शुक्रवार ३ अगस्त १४९२ को अपनी लम्बी यात्रा के लिए रवाना हुआ। कोलम्बस ने शुक्रवार को ही एक द्वीप के आस-पास पक्षियो को देखा जिससे उसने अनुमान किया कि पास में कोई आबादी है। समुद्र मे यात्रा करते करते जब भूमि का लक्षण दिखाई देता है तो कितना अपार हर्ष होता है यह केवल भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकता है। ७० दिन लगातार चलने के बाद शुक्रवार को वह एक छोटे से अमेरिकन द्वीप पर उतरा। तदनन्तर शुक्रवार (१७ मई) को उसने बारसेलोना मे विजय यात्रा की। शुक्रवार (३० नवम्बर) ही को उसने पियोरतोसान्तो मे क्रास की स्थापना की और शुक्रवार (४ जनवरी) को ही वह स्पेन के लिए रवाना हुआ। वह जब विजयोल्लास के साथ पेलोस मे प्रविष्ट हुआ तब शुक्रवार ही था। इस प्रकार हम देखते है कि कोई कोई वार भी किसी के जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण होता है।

पाश्चात्य मत पहले दिया जा चुका है कि किस तारीख़ मे उत्पन्न व्यक्ति को कौनसा वार विशेष शुभ होगा। भारतीय मता-नुसार जिसकी जन्म कुण्डली में जो ग्रह बलवान् होगा तथा लग्नेश और चन्द्रराशीश का मित्र होगा वह शुभ होगा। किन्तु उपर्युक्त निर्णय के लिए जन्म कुण्डली की आवश्यकता होती है। इस कारण अपने अनुभव के आधार पर यह निश्चय करना चाहिए कि कौनसा वार शुभ तथा कौनसा अशुभ जाता है। जो वार शुभ जाते हो उन्हे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए चुनना चाहिए—जो अनिष्ट जाते हो उन वारो मे कोई बड़ा कार्य न करे। बहुत से अनुभवशील पाठको

ने यह भी देखा होगा कि कुछ बरसों तक कोई वार अशुभ गया—लेकिन बाद मे उसने अशुभता दिखाना छोड दिया। इसका कारण यह है कि यदि जन्म-कुण्डली के अनुसार किसी अनिष्ट ग्रह की दशा रहती है तो वह अशुभ प्रभाव दिखाता है। उसकी दशा समाप्त हो जाने पर या गोचरवश उसकी अशुभस्थिति न रहने पर वह अशुभता नही दिखाता।

बहुत से लोग प्राय मगल या शनि को—क्रूर बार समझने के कारण—अशुभ समझते है। परन्तु सर्वत्र ऐसा नही होता। यदि कोई वार अशुभ जाता हो तो उस दिन नमक नही खाना चाहिए। नमक नही खाने से शरीर मे रक्तचाप कम रहता है। इस कारण मनुष्य के मस्तिष्क को विशेष उत्तेजित नही करता।

दिन का कौन सा घंटा अनुकूल (माफिक) रहेगा ?

पिछले प्रकरणो मे यह बताया जा चुका है कि कौनसी तारीख किस व्यक्ति के लिए विशेष अनुकूल होगी। अब इस प्रकरण मे यह विचार किया जाता है कि—किस दिन, कौनसा घण्टा विशेष माफिक रहेगा। इस विषय मे पहिले भारतीय मत और उसके बाद पाश्चात्य मत बताया जावेगा।

घण्टे का विचार, एक बजे से दो बजे तक, दो बजे से तीन बजे तक, इस प्रकार घडी के घण्टों से नही करना चाहिए—बल्कि सूर्योदय से प्रारम्भ करना चाहिए। जिस दिन जिस स्थान पर विशेष कार्य करना हो उस दिन उस स्थान का सूर्योदय काल निकालना चाहिए। उदाहरण के लिए ३ जून सन् १९५७ को कोई महत्व का कार्य दिल्ली मे करना है। इस दिन दिल्ली में सूर्योदय हुआ ५ बज कर २३ मिनट पर, तो प्रथम घण्टा हुआ ५-२३

से ६-२३ तक, द्वितीय घण्टा हुआ ६-२३ से ७-२३ तक। इस प्रकार सूर्योदय से प्रति घण्टा संस्कृत में "होरा" कहलाता है।

ग्रहों में सबसे अधिक दूर शनि है, फिर बृहस्पति, उसके बाद मगल, फिर सूर्य, उसके बाद शुक्र, उसके बाद बुध, और सबसे समीप चन्द्र। इसलिए शनिवार को प्रथम 'होरा' (सूर्योदय से प्रथम घण्टा) शनि की, दूसरी 'होरा' (घण्टा) बृहस्पति की। तीसरी होरा मंगल की, चौथी सूर्य की, पाँचवी शुक्र की, ६ठी बुध की, सातवी चन्द्र की होरा होगी। सात होरा पूरी हो जाने पर ८ से १४ तक फिर शनि, बृहस्पति, मगल, सूर्य आदि यही क्रम चलेगा। १५ से २१ होरा तक फिर यही क्रम रहेगा। २२वी होरा फिर शनि की होगी २३वीं बृहस्पति को, २४वी होरा (घण्टा) मंगल की, २५वी होरा सूर्य की क्योंकि २४ घण्टे पूरे हो जाने पर दूसरा दिन प्रारम्भ हो गया और दूसरे दिन प्रारंभ की अर्थात् पहली होरा (जो पहले दिन की २५वीं हुई) सूर्य की है—इस कारण शनिवार के दूसरे दिन का नाम 'रविवार' हुआ। रविवार को पहिली होरा 'सूर्य' की दूसरी शुक्र की इस क्रम से २२वी होरा सूर्य की, २३वीं शुक्र की, २४वी बुध की, २५वी चन्द्रमा की हुई। यह २५वीं होरा दूसरे दिन की पहली होरा हुई। इस प्रकार रविवार के दूसरे दिन की होरा चन्द्र की होने के कारण इसका नाम चन्द्रवार या सोमवार (या Moon-day जिसे संक्षेप मे Monday कहते हैं) रक्खा गया। इसी प्रकार होरा के विचार से सातो दिन के सात नाम रक्खे गये हैं।

आगे प्रतिदिन की कौनसी होरा किसकी होगी इसका चक्र दिया जाता है :—

होरा / वार	१ ८ १५ २२	२ ९ १६ २३	३ १० १७ २४	४ ११ १८	५ १२ १९	६ १३ २०	७ १४ २१
रविवार	सू	शु.	बु	च	श.	बृ.	मं.
सोमवार	च.	श.	बृ	म.	सू	शु	बु.
मगल वार	म	सू.	शु	बु	च.	श	बृ.
बुधवार	बु	चं.	श	बृ	म.	सू	शु.
बृहस्पतिवार	बृ	म.	सू	शु.	बु	च.	श.
शुक्रवार	शु.	बु	च.	श.	बृ.	मं.	सू.
शनिवार	श.	बृ.	म.	सू.	शु	बु.	चं.

उदाहरण के लिये ३ जून सन् १९५७ को सोमवार था। इस दिन सूर्योदय प्रात ५ बजकर २३ मिनट पर हुआ तो दोपहर को १-२३ से लेकर २-२३ तक ९वा घण्टा हुआ। आडी पक्ति मे सोमवार के सामने और खडी पक्ति मे ९ के नीचे 'श' है। इसलिए दिन के १-२३ से एक घण्टे तक २-२३ तक शनि की होरा हुई।

होरा निकालने के लिए सूर्योदय का ठीक-ठीक मालूम होना परमावश्यक है। सूर्योदय निकालने की सारिणी छपी हुई ले लेनी

चाहिए या शुद्ध पचाग मे देख लेना चाहिए। यह स्मरण रहे कि 'अक्षांश' तथा 'देशातर' दोनो के कारण-सूर्योदय काल भिन्न-भिन्न स्थानों का अलग-अलग होता है।

कौनसी होरा अनुकुल होगी ?

जिनको अपनी जन्म राशि मालूम हो उन्हे तो अपनी जन्म राशि से विचार करना चाहिए अन्यथा नीचे लिखे चक्र से-अपने नाम के प्रथम अक्षर से राशि निर्णय कर-यह विचार करना चाहिए कि कौनसे ग्रह की होरा शुभ होगी कौनसी साधारण और कौनसी अशुभ।

नाम का प्रथम अक्षर	राशि	शुभ होरा (अनुकूल)	साधारण होरा	अशुभ (प्रतिकूल)
१. चू, चे, चो, ल, ली ले, लो, अ	मेष	सूर्य, चन्द्र मंगल, बृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
२. इ, उ, ए, ओ, व, वी, वू, वे, वो	वृष	बुध, शुक्र शनि	बृहस्पति मंगल	सूर्य, चन्द्र
३. का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा	मिथुन	सूर्य, बुध, शुक्र	मगल बृहस्पति शनि	चन्द्रमा
४. ही, हू, हे, हो, डा, डी डू, डे, डा	कर्क	सूर्य, बुध, चन्द्र	मंगल, बृहस्पति शुक्र, शनि	×
५. मा, मी, मू, मे, मो, टा टी, टू, टे	सिंह	सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति	बुध	शुक्र, शनि

नाम का प्रथम अक्षर	राशि	शुभ होरा (अनुकूल)	साधारण होरा	अशुभ (प्रतिकूल)
६ टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो	कन्या	सूर्य, बुध शुक्र	मंगल शनि बृहस्पति	चन्द्रमा
७. रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते	तुला	बुध, शुक्र शनि	मंगल बृहस्पति	चन्द्र, सूर्य
८. तो, ना, नी, नू, ने, नो या, यी, यू	वृश्चिक	सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
९. ये, यो, भा, भी, भू, धा फा, ढा, भे	धनु	सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति	शनि	बुध, शुक्र
१०. भो, जा, जी, खी, खु, खे, खो, गा, गी	मकर	बुध, शुक्र शनि	बृहस्पति	सूर्य, चन्द्र मंगल
११. गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द	कुम्भ	बुध, शुक्र शनि	बृहस्पति	सूर्य, चन्द्र मंगल
१२. दी, दू, थ, झ, ञ, दे दो, चा, ची	मीन	सूर्य, चन्द्र मंगल बृहस्पति	शनि	बुध शुक्र

टिप्पणी—किसी के नाम के प्रथम अक्षर मे ह्रस्व मात्रा हो—तो भी दीर्घ मात्रा की जो राशि बताई गई है वही ह्रस्व मात्रा वाले की भी होगी। उदाहरण के लिए किसी का नाम 'दिनेश' है। ऊपर 'दी' की राशि मीन बताई गई है तो 'दिनेश' की भी मीन राशि होगी।

अब प्रश्न यह है कि मीन राशि वाले व्यक्ति को मंगल को कोई कार्य करना है तो वह कब करे ?

मंगलवार को जब सूर्य, चन्द्र, मगल या बृहस्पति की होरा हो तो उसे विशेष अनुकूल होगा। यह प्राचीन आर्ष सिद्धान्त पर अवलम्बित है। विशेष विवरण के लिए 'समर सार' नामक संस्कृत ग्रन्थ का वह प्रकरण देखना चाहिए जिसमें युद्धकाल में वर्जित होराओं का विवेचन किया गया है।

शुभ कार्य करने के लिए ऊपर जो चक्र दिये गए हैं कि किस व्यक्ति के लिए कौनसे घण्टे अनुकूल होगे—उनके साथ यदि 'अमृत घटी' का योग भी कर लिया जावे तो सोने में सुगन्धि हो जावे। अमृत घटी के चक्र प्रायः पचागों में दिए रहते हैं—यहाँ भी पृष्ठ १०५ दिये गये हैं।

नवीनमत—बहुत से विद्वान् घण्टे की संख्या को मुख्य मानते है। उनके मतानुसार सर्वत्र सब स्थानों के लिए १२ से एक तक एक घण्टा, १ बजे से दो बजे तक दूसरा घण्टा—इस आधार पर जो सख्या किसी व्यक्ति को अनुकूल हो उसी संख्या का घण्टा अनुकूल होगा। उनके हिसाब से जो सप्ताह का दिन हो उसकी संख्या (रवि की १ तथा ४, सोम की २ तथा ७, मंगल की ९, बुध की ५, बृहस्पति की ३, शुक्र की ६, शनि की ८) तथा घण्टे की संख्या, दोनों यदि किसी व्यक्ति के अनुकूल हों तो वह घंटा उस व्यक्ति के लिए अच्छा रहेगा।

[1]बंबई के प्रसिद्ध विद्वान् श्री वी० जी० रेले द्वारा लिखित एक

---

१. Practical Astro-Numerology ले. श्री वी० जी० रेले।

पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके विद्वान् लेखक के अनुसार सूर्योदय से पहला घटा, फिर दूसरा घटा, फिर तीसरा घटा—इस प्रकार घटा लेने से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय भिन्न होने के कारण और किसी एक स्थान मे भी सूर्योदय मे निरन्तर अतर पडते रहने के कारण 'होरा' के अनुसार अनुकूल या प्रतिकूल घटा चुनने मे बहुत असुविधा होगी। इस कारण प्रतिदिन मध्याह्न से—१२ बजे मध्माह्न से एक बजे तक—सोमवार को चन्द्रमा का घटा, दूसरा घटा मगल का, तीसरा घटा बुध का इस क्रम से मानना चाहिए। मंगलवार मध्याह्न को प्रथम घटा मगल का, द्वितीय घटा बुध का इत्यादि। और जो ग्रह जिस कार्य के लिए अनुकूल हो, उसे उस कार्य के लिए चुनना चाहिए—यथा मगल का घटा क्रूर कर्म के लिए, शुक्र का घटा आमोद-प्रमोद के लिए इस प्रकार से मध्याह्न से घण्टा गिनने की शैली 'सेफेरियल' नामक अगरेज ज्योतिषी ने भी अपनाई है[१] परन्तु हमारे विचार से इस प्रकार–मध्याह्न से घण्टो का आरम्भ करना अवैज्ञानिक और अशास्त्रीय है। इसलिए हमारे विचार से जो 'होरा' विचार हमने इस प्रकरण के प्रारभ मे दिया है वही शास्त्र सम्मत पक्ष है। उसमे यही सिद्धान्त रक्खा गया है कि अपने राशि के स्वामी की या उसके मित्र की होरा अनुकूल, अपनी राशि के स्वामी के समग्रह (न शत्रु, न मित्र) की साधारण और अपनी राशि के स्वामी के शत्रुग्रह की होरा प्रतिकूल पडेगी। इस का प्राचीन शास्त्रीय आधार यही वचन है कि"·····'अरि-खगस्य सा वर्ज्या।"[२]

१. देखिए Kabala of Numbers पृष्ठ १६६।

२. समरसार पृ० ५१ श्लोक ३०।

इसके अतिरिक्त किसी शुभ कार्य के लिए अनुकूल समय चुनने का एक सहज तरीका है। पाठको के लाभार्थ चौघडिया चक्र नीचे दिया जा रहा है। दिन को ८ भागों में विभक्त कीजिए। इसी प्रकार रात्रि को ८ भागों मे विभक्त कीजिए। इन अष्टमाँशों के नाम शुभ, अमृत, चर, (चंचल) रोग, काल, लाभ, उत्पात है जो नीचे के चक्र से स्पष्ट होगा।

प्रत्येक कार्य के लिए 'शुभ', लाभ' तथा 'अमृत' श्रेष्ठ हैं। अमृत घटी सर्वश्रेप्ठ है।

एक एक भाग करीब पौने चार घड़ी का होता है। इस कारण इसे चौघड़िया कहते है परन्तु वास्तव मे दिन मान का अष्टमांश दिन मे एक भाग होता है और रात्रि मानका अष्टमाश रात्रि का एक भाग होता है। जाड़े और गर्मी में दिन मान के अनुसार प्रत्येक भाग के मान मे अतर हो जाता है।

दिन का चौघड़िया

र	च	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का

रात्रि का चौघडिया

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
शु	चं	का	उ	अ	रो	ल
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
च	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

७वां प्रकरण

जन्म-मास के अनुसार फलादेश

जन्म की तारीख से इस बात का अन्दाज लगाना कि कौन-कौन सा वर्ष अच्छा और महत्वपूर्ण जायगा पिछले पृष्ठो मे बताया जा चुका है। किन्तु कुछ फल ऐसे होते हैं जो सूर्य जिस राशि में जन्म के समय हो उसके अनुसार घटित होते है। एक वर्ष के अन्दर सूर्य बारह (१२) राशियो मे भ्रमण कर लेता है। और एक वर्ष के बाद बारहो राशियो मे घूमकर फिर पहली राशि मे आ जाता है। इसका कारण यह है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। और जैसे गोल चक्कर मे घूमता हुआ मनुष्य फिर चक्कर पूरा होने पर अपने स्थान पर आ जाता है उसी प्रकार पृथ्वी भी ३६५ दिन ६ घन्टा १ मिनट १२ सैकिण्ड मे घूम कर वही आ जाती है। वास्तव मे चक्कर तो लगाती है पृथ्वी किन्तु लगता ऐसा है कि सूर्य पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगा रहा है। इस एक साल के समय को १२ हिस्सो मे बाँटा गया है। पजाब तथा बगाल मे बैसाखी या प्रथम वैशाख से वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं। इस दिन सूर्य पहली राशि (विभाग) के प्रारम्भ बिन्दु पर होता है। फिर करीब एक-एक महीने, एक-एक हिस्से या राशि मे रहता है। किन्तु ३६५ दिन ६ घन्टे १ मिनट १२ सैकिण्ड को १२ से भाग दिया जावे तो प्रत्येक राशि या हिस्से मे ३० दिन से अधिक समय आवेगा। वास्तव मे है भी ऐसा ही। पहला, दूसरा, तीसरा,दसवाँ, ग्यारहवाँ, बारहवाँ—सूर्य

के ये ६ महीने कुछ छोटे होते है—प्रत्येक करीब ३० दिन का। बाकी के ६ महीने कुछ बड़े होते हैं। इस सम्बन्ध में विष्णु-पुराण तथा श्रीमद्भागवत मे द्वादश सूर्य के नाम तथा अधिकारियों का वर्णन किया गया है।[१]

पाश्चात्य ज्योतिष मे जन्म मास का बहुत विस्तृत विचार है। अमुक मास मे पैदा होने वाले व्यक्तियो का गुण-कर्म, स्वभाव, ऐसा होगा—अमुक वर्ष जीवन का अच्छा जावेगा, अमुक वर्ष कष्टप्रद होगा, इस सब का बहुत अधिक विचार अग्रेजी ज्योतिषियो ने किया है। पिछले ३१ वर्षो मे हमने इस विषय की अनेक पुस्तकों का अवलोकन कर जब फलादेश मिलाया तो देखा कि कोई-कोई बात तो विलक्षण रूप से ठीक बैठती है—परन्तु कोई-कोई नही मिलती। इसका कारण यह है कि, इन सब पुस्तको मे सूर्य किस राशि मे है इस आधार पर फल दिया हुआ रहता है किन्तु सूर्य के अतिरिक्त चन्द्रमा, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, हर्शल, नेपच्यून— जन्म लग्न आदि के अनुसार भी गुण-कर्म स्वभाव, भाग्योदय आदि मे परिवर्तन होता है। पाश्चात्य ज्योतिष तथा भारतीय ज्योतिष में एक और अन्तर है। सूर्य करीब-करीब एक महीना प्रत्येक राशि में रहता है यह मत तो दोनों मे समान है—किन्तु किस तारीख से किस तारीख तक किस राशि मे रहता है—इस सम्बन्ध मे दोनों के पृथक्-पृथक् मत हैं—जो अगले पृष्ठ पर दिये जाते है।[२]

---

१. विष्णुपुराण दशम अध्याय तथा श्रीमद्भागवत स्कन्ध १२ अ० ११

२. देखिए You and Your Star by Cheiro तथा Be Your Own Astrologer by Iris Vorel.

	पाश्चात्य मतानुसार	भारतीय ज्योतिष के अनुसार
१	२१ मार्च से २० अप्रैल तक	१३ अप्रैल से १२ मई तक
२	२१ अप्रैल से २१ मई तक	१३ मई से १४ जून तक
३	२२ मई से २१ जून तक	१५ जून से १५ जुलाई
४.	२२ जून से २३ जुलाई तक	१६ जुलाई से १६ अगस्त
५.	२४ जुलाई से २३ अगस्त तक	१७ अगस्त से १६ सित०
६.	२४ अगस्त से २३ सितम्बर तक	१७ सित० से १६ अक्तू०
७.	२४ सितम्बर से २३ अक्तूबर तक	१७ अक्तूबर से १३ नव०
८	२४ अक्तूबर से २१ नवम्बर तक	१४ नव० से १४ दिस०
९	२२ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक	१५ दिस० से १३ जनवरी
१०.	२३ दिसम्बर से २० जनवरी तक	१४ जन० से १३ फरवरी
११.	२१ जनवरी से १९ फरवरी तक	१४ फरवरी से १३ मार्च
१२.	२० फरवरी से २० मार्च तक	१४ मार्च से १२ अप्रैल

पाश्चात्य तथा भारतीय ज्योतिष मे भिन्नता सायन तथा निरयन गणना के कारण है। इस कारण इस छोटी सी पुस्तक मे इसकी बृहद् आलोचना सम्भव नही है। आगे के पृष्ठो मे हमने भारतीय ज्योतिष के आधार पर फल दिया है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य के प्रथम राशि मे होने का जो फल, १३ अप्रैल से १२ मई तक जन्म लेने वालो का दिया गया है, वही पाश्चात्य मत के अनुसार उन लोगो पर लागू होना चाहिये जिनका जन्म २१ मार्च से २० अप्रैल तक हुआ हो। इसी प्रकार भारतीय तथा पाश्चात्य ज्योतिष की तारीखो का अन्तर आगे-की राशियो मे भी पड जाता है जो ऊपर दिये गये विवरण से स्पष्ट हो गया होगा।

इस सम्बन्ध मे एक बात की ओर और ध्यान दिलाया जाता है।

वह यह है कि ऊपर जो तारीखे दी गई है वे करीब-करीब ठीक हैं। किन्तु कभी तो १३ तारीख को सक्रान्ति होती है कभी १४ तारीख को। इस कारण एक दिन का अन्तर कभी-कभी पड जाता है। इस लिये जिनकी जन्म तारीख बिलकुल सक्रान्ति (जिस दिन सूर्य बदलता है) के दिन पडे—उन्हे उस साल के पचाग से निश्चय करना चाहिये कि सूर्य किस राशि मे है।

अग्रेज ज्योतिषियो ने मास के अनुसार भी शुभ अक आदि दिये है वे आगे के प्रकरण मे मास फलानुसार दे दिये गये है किन्तु हमारे विचार से तृतीय प्रकरण मे जन्म-तारीख के अनुसार जो शुभ अक, आदि दिये गये है वे अधिक ठीक बैठते है।

यदि आप का जन्म १३ अप्रैल और १२ मई के बीच हुआ है[१]

पजाब तथा बगाल मे जन्म की तारीख एक बैसाख से लेकर ३० बैसाख तक हो तो यह फल मिलेगा। यदि आपको अग्रेजी जन्म की तारीख मालूम नही है तो जिस साल आपका जन्म हुआ है उस साल की जन्त्री लेकर देखिए।

ऐसे व्यक्ति मे अभिमान, उदारता, साहस आदि गुण विशेष पाये जाते है। धार्मिक भावनाओ के साथ-साथ कलात्मक प्रवृत्तियाँ, (सुन्दरता की वस्तुओं की परख, सिनेमा, राग-रग, चित्रकारी आदि से प्रेम) भी होती है। चतुरता और व्यापारिक कुशलता के साथ-साथ दृढता और दूसरे से मुकाबला करने का हौसला भी होता है। साहस के कामो मे (यथा सैनिक या पुलिस विभाग मे) ऐसे व्यक्ति बहुत शीघ्र उच्च पद प्राप्त करते है और खेल-कूद तथा शिकार के शौकीन होते है। किसी भी स्थान पर जहाँ हुकूमत करने का काम

१. अग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २१ मार्च से २० अप्रैल तक

हो या मशीन, अग्नि, भट्टी, (लोहा या अन्य धातुओ का ढालना या तपाना आदि) मे उन्हे विशेष सफलता मिलती है।

इन व्यक्तियो को बहुत शीघ्र क्रोध आ जाता है और फिर शीघ्र ही शान्त हो जाता है। इन व्यक्तियो का सहसा प्रेम-सम्बन्ध हो जाता है परन्तु बहुत स्थायी नही रहता। इनके धार्मिक किंवा राजनैतिक विचार बडे आवेश-युक्त होते हैं परन्तु स्थायी नही होते। किसी कार्य को प्रारम्भ करते समय तो यह लोग बहुत ध्यान देते हैं, परन्तु कार्य की समाप्ति तक ध्यान मे कमी हो जाती है। इन लोगो की आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होती है (कभी द्रव्य काफी मात्रा मे रहा तो कभी तगी का सामना करना पडा)। ज़मीन-जायदाद का योग भी होता है। और कभी-कभी जायदाद (मकानादि) विवाह से (पति या पत्नी द्वारा) प्राप्त होती है। स्त्रियो के कृपा-पात्र होने के कारण काफी लाभ होता है। और व्यापार मे भी, साझेदारी के कार्यो मे भाग्योदय होता है। भाई-बहनो का सुख कम होता है बाल्यावस्था मे कुटुम्ब मे कुछ ऐसी कठिनाइयाँ हो जिनके कारण मार्ग मे रुकावट पड़े। आधी रात के बाद और दोपहर के पहले इन १२ घण्टो में जिसका जन्म हो उसको पिता का सुख मध्यम रहे।

ऐसे जातको को भ्रमण (सैर-सपाटे, दूसरे स्थानो पर घूमने जाना) बहुत प्रिय होता है और कभी-कभी कौटुम्बिक परिस्थितियो के कारण या शत्रुओ से बचने के लिए बाहर जाना पडता है। पहाड पर चढने या हवाई-जहाज द्वारा यात्रा के भी अवसर हो। ७ (सात) १९ (उन्नीस), ३०(तीस),४४-इन वर्षों मे जातक के कुटुम्ब मे या स्वय को क्लेश का अवसर हो। अपनी अदूरदर्शिता के कारण जातक अपनी आयु को अल्प करता है। अपने पति या अपनी पत्नी के साथ

झगड़े के काफ़ी अवसर आते हैं। और अपने स्वभाव की गर्मी के कारण नाइत्तफाकी (असौमनस्य) हो जाती है। विवाह प्रायः कम अवस्था मे होता है और सन्तानसुख साधारण होता है। ऐसे व्यक्ति उच्च पद पर पहुँचते है परन्तु बहुत संघर्ष का सामना करना पडता है। सेना विभाग, वकालत, खान (खनिज-पदार्थ), इजीनियरिग आदि के कामों में विशेष सफलता मिलती है। ऐसे व्यक्तियो के मित्र भी बहुत होते हैं और यदि जन्म दोपहर के बाद तथा आधी रात के पहले हुआ हो तो मित्रों की सहायता द्वारा जातक उच्च पद पर पहुँचता है। ईर्ष्या के कारण ऐसे जातक के शत्रु अवश्य उत्पन्न होगे परन्तु विशेष हानि करने मे असफल होगे। ऐसे व्यक्तियों को सिर-दर्द, ज्वर या सिर मे चोट लगने की आशका रहती है। पेट का विकार तथा अधिक अवस्था मे गुरदे की बीमारी और अधिक रक्त-चाप (ब्लड-प्रैशर) की आशका होगी। वराह मिहिर के मतानुसार इस समय सूर्य मेष राशि मे होने से जातक चतुर, अल्पवित्त, और साहसी (अस्त्र, शस्त्र धारण करने वाला) होता है, यदि २३ अप्रैल को जन्म हो तो बहुत उच्च पदवी पर पहुँचता है। सारावली के अनुसार जातक शास्त्र द्वारा, कलापटुता से किवा अन्य उत्कृष्ट कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त करता है; युद्ध का शौकीन और प्रचंड स्वभाव का होता है। उसकी हड्डियों की काठी मजबूत होती है और भ्रमण (घूमने फिरने) का शौकीन होता है। वह श्रेष्ठता को प्राप्त होता है।[1]

अंग्रेज़ ज्यौतिषियों के अनुसार लाल रंग, मंगलवार तथा ६ की

---

१. **विशेष विवरण के लिये देखिये**

Secrets of Astrlogy by W. J. Tucker **तथा** Art of Synthesis by Alan Leo.

सख्या इनके लिये शुभ है। किन्तु प्रतिवर्ष जब सूर्य मेषराशि मे रहता है तब अन्य ग्रहो की युति तथा दृष्टि से उपर्युक्त फलादेश मे तारतम्य होना स्वाभाविक है।

यदि आपका जन्म १३ मई और १४ जून के बीच हुआ है।[1]

इस समय सूर्य वृषभ राशि मे होता है और वृषभ (बैल) के गुण और अवगुण इन लोगो मे पाये जाते है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी और काम मे लगे रहने वाले होते हैं। बहुत धैर्यपूर्वक लम्बे समय तक काम करने से यह लोग नही घबराते और ऐसे कार्यों मे इन्हें प्राय सफलता मिलती है। इन्हे क्रोध जल्दी नही आता, पर एक बार क्रोधित हो जाने पर महीनो और वर्षो तक क्रोध की भावना मन से नही जाती। ऐसे व्यक्तियो की इच्छा-शक्ति दृढ होती है परन्तु वह अपने मन की बात को दूसरे पर प्रकट नही करते और जब तक अपने लक्ष्य पर नही पहुँच जाते तब तक परिश्रम-पूर्वक उसमे लगे रहते है। इसलिए ऐसे व्यक्ति शासन मे सफल होते है। बहुत से जातको को कृषिकार्य मे भी रुचि होती है। और यह लोग उत्तम भोजन करने के बहुत शौकीन होते है। धैर्य-पूर्वक काम मे लगे रहते हैं परन्तु फिर आराम भी सुभीते के साथ करते है।

इनके प्रेम सम्बन्ध मे दृढता नही होती और बहुत अधिक ईर्ष्या की मात्रा होती है। अत्यन्त परिश्रम या अनियमित आहार-व्यवहार के-कारण रोग का डर रहता है।

स्वय जायदाद प्राप्त करने का सुयोग होता है परन्तु मुकदमे या षड्यन्त्र के कारण हानि होने की सम्भावना रहती है और यह भी सम्भव है कि बहुमूल्य जायदाद आकस्मिक रूप से औरो द्वारा

---

१. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २१ अप्रैल से २१ मई तक

प्राप्त हो। मित्रों और सम्बन्धियो के स्नेह से ऐसे व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति मे वृद्धि होती है।

यदि मध्य-रात्रि के बाद और मध्याह्न के पूर्व जन्म हो तो ऐसे जातक का पिता अपने समाज मे प्रतिष्ठित और उत्तराधिकारी होता है। भाई-बहनो मे से किसी एक से कष्ट की सम्भावना हो और सम्भवत किसी सम्बन्धी के कारण लम्बी यात्रा करनी पड़े। यदि मध्यरात्रि के वाद और मध्याह्न से पहले जन्म हो तो वहुत यात्राओ का योग है और किसी एक यात्रा मे साघातिक रोग का भी भय है।

सन्तान की ओर से विशेप सावधानी की आवश्यकता है। विशेषकर प्रथम सन्तान यदि लडका हो तो वचपन मे उसको काफी भय है। इसके अतिरिक्त सन्तान उन्नति करेगी और उनके द्वारा सन्तोष प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्तियो का जीवन शान्तिमय होता है। कोई विशेष वड़ी घटनाएँ नही होती परन्तु ऐसे व्यक्ति अपनी जिद के कारण स्वय कठिनाइयाँ पैदा कर लेते है।

ऐसे व्यक्ति प्रायः तिल्ली, जिगर या वायु की बीमारियों से पीड़ित होते है। गुरदे भी जैसे मजबूत होने चाहिए वैसे नही होते। ११, २३, ३५वे वर्ष मे रोग की सम्भावना होती हैं। चौपायो से या तेज औजारों से जख्म होने का डर रहता है। किसी एक प्रेम-सम्बन्ध मे घोर दुःख या निराशा का सामना करना पड़ेगा या वैवाहिक जीवन मे। अन्त मे अपने प्रिय (पति-पत्नी) का अन्त अपने जीवन-काल मे ही होने के कारण शोक होगा।

जीवन के शुरू काल मे आर्थिक हालत साधारण रहती है परन्तु अपने परिश्रम द्वारा ऐसे मनुष्य अपना भाग्योदय करते हैं।

मित्र बहुत होगे परन्तु उनसे निराशा होगी। ऐसे मनुष्य दीर्घायु होते है परन्तु आहार और विहार को नियमित रखना चाहिए क्योकि ऐसे जातक मात्रा से अधिक भोजन करने के इच्छुक रहते हैं।

'वराह-मिहिर' के मतानुसार यदि ऐसा मनुष्य वस्त्र, सुगन्धित वस्तु का व्यापार या दुकान करे तो जीविका उपार्जन करने मे सफल हो। ऐसा व्यक्ति गाने बजाने मे कुशल, विलासी किन्तु किसी स्त्री से शत्रुता रखने वाला भी होता है या कोई स्त्री या स्त्रियाँ भी ऐसे व्यक्ति से शत्रुता रक्खे। 'सारावली' के अनुसार ऐसे व्यक्ति से कोई बाँझ स्त्री शत्रुता करती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है, और उसको मुख तथा नेत्र का रोग होता है। उत्तम भोजन, कपडे और खुशबूदार वस्तुओ का शौकीन परन्तु पानी से डरता है। ऐसा व्यक्ति व्यवहार-प्रवीण, क्रिया-कुशल होता है।

अगरेजी ज्योतिष के मतानुसार इन्हे ६ की संख्या, शुक्रवार तथा सफेद या हलका पीला रग शुभ होगा।[१]

यदि आपका जन्म १५ जून तथा १५ जुलाई के बीच में हुआ है।[२]

पजाब तथा बगाल मे इस महीने को आषाढ या असाढ़ कहते हैं। आषाढ की १ तारीख से ३० तारीख तक जिन लोगो का जन्म हुआ है उनको यह फलादेश लागू होगा। ऐसे व्यक्ति मिलनसार

---

१. **विशेष विवरण के लिये देखिये**

The Principles of Astrology by C E O Carter. **तथा** Zodiacal Infiuences from Seed to Flower by E. B. Harte

२. **अगरेजी ज्योतिष के अनुसार २२ मई से २१ जून तक**

और दूसरो के साथ मिल कर काम करने वाले होते है। यदि क्रोधित हो जाएँ तो क्रोध शान्त होने पर फिर पश्चात्ताप प्रकट करते है। विद्या-प्रेम तथा अध्ययनशीलता ऐसे व्यक्तियों में पाई जाती है और व्यापारिक बुद्धि भी होती है। अपने पसन्द के विषय पर ऐसे व्यक्ति प्रायः बहुत अधिक बातचीत करते है अन्यथा उनकी बुद्धि अन्तर्मुखी होती है। गान-वाद्य आदि भी इन व्यक्तियो को प्रिय होते है।

आर्थिक स्थिति मे बहुत परिवर्तन होता रहता है। कभी बहुत सम्पन्न तो कभी द्रव्य-हीनता। इनके पद मे भी इसी प्रकार परिवर्तन होते रहते हैं। इनके जीवन मे कौटुम्बिक रहस्य तथा अन्तर्द्वन्द्व का एक विशेष भाग होता है और पिता के निमित्त से कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है। इनके सन्तान कई होंगी परन्तु उनमे आपस में या माता-पिता के प्रति विद्वेष की भावना हो जायगी। कुटुम्ब के व्यक्तियो का मातहतो तथा भृत्यो के साथ मनोमालिन्य रहेगा। निम्नलिखित रोगो से पीडा की सम्भावना रहेगी—जहरीले जन्तु, चौपाये या चौपायों द्वारा आघात, मलेरिया, खसरा, मोतीझरा आदि तथा मसानो की कमजोरी।

प्रेम सम्बन्ध के परिणामस्वरूप बहुत दु.ख, कष्ट और निराशा होगी। सम्भव है एक से अधिक विवाह हो या विवाह के अतिरिक्त किसी से स्थायी प्रेम हो। अनेक प्रकार के तथा अनेक स्थिति के लोगो से मित्रता होगी। इनमें से कई जातक के शत्रु हो जावेगे।

जीवन के मध्य काल मे अभ्युदय के मार्ग मे बहुत बाधाएँ होगी। इसमें मुख्य कारण शत्रुओं का प्रतिबन्ध होगा और इन शत्रुताओ के लिए जातक स्वयं उत्तरदायी होगा। जातक दो प्रकार

के काम करता रहेगा। एक मुख्य और एक गौण। एक मित्र से विश्वास-घात की आशंका है। सहयोगी, पडौसी तथा ससुराल पक्ष मे ऐसे जातक के विरुद्ध काफी षड्यन्त्र चलते रहेगे।

इन लोगो का शुभ रत्न पन्ना है। श्वास के रोग तथा ठंढ से बचना चाहिए।

'वराह मिहिर' के मतानुसार जिनका जन्म इन तारीखो के बीच मे हो वह विद्वान्, ज्योतिप-शास्त्र मे प्रेम रखने वाला तथा धनवान् होता है। 'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यक्ति मेधावी, मधुरवाणी वाला, उदार प्रकृति का, बच्चो से बहुत प्रेम करने वाला, बहुत धनी और निपुण होता है। ऐसा पुरुष विनीत तथा बोलने में चतुर और बहुत मित्र वाला होता है। सम्भव है अपनी माता के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री ने भी इसके लालन-पालन मे विशेष योग दिया हो।[१]

अग्रेजी ज्योतिप के अनुसार इन्हे हरा या हलका पीला रग, बुधवार तथा ५ की सख्या शुभ है।

यदि आपका जन्म १६ जुलाई और १६ अगस्त के बीच मे हुआ है[१]

ऐसे व्यक्तियो का चित्त चलायमान और उद्विग्न रहते हुए भी निरन्तर क्रियाशील रहता है। ऐसे व्यक्ति हृदय की बात को सहसा प्रकट नही करते और पवित्र आदर्शों पर कायम रहने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उनके विचारो मे हवाई किले बाँधने

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

Elementary Astrology by Sepharial तथा Star Dust by G Hilda Fagan

१. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २२ जून से २३ जुलाई तक

की प्रवृत्ति बहुत होती है। उनकी प्रकृति और मानसिक अवस्था मे इतनी चचलता रहती है कि दूसरे के साथ एकरस व्यवहार नही रख सकते। एक बात को छोड़कर नई के पीछे लग जाना और उसमे सहानुभूति तथा सफलता की आशा करने का, इनका स्वभाव है। ऐसे व्यक्ति विवेकशील, स्वतन्त्र प्रकृति के तथा अनेक कार्यो मे दक्ष होते है। ऐसे जातक व्यापार मे कुशल होते है और धन तथा सम्मान के लिए सतृष्ण रहते है। इन व्यक्तियों मे धार्मिक वृत्ति भी पाई जाती है। ऐसी स्त्रियाँ परिश्रम करने वाली तथा हुकूमत करने की इच्छा करने वाली होती हैं। चन्द्रमा की राशि में सूर्य होने के कारण इनकी चित्त-वृत्ति इतनी बदलती रहती है कि कभी एक स्वभाव की ओर तो कभी दूसरे स्वभाव की ओर हो जाती है। और इस कारण ऐसी स्त्रियाँ आवेश मे आ जाती है, परन्तु थोडी देर मे शान्त हो जाती हैं।

धनसंग्रह बडी कठिनता से होगा और जो होगा उसको सन्तान या सम्बन्धी बरबाद करते रहेगे। ताश, घुडदौड़, सट्टे या चोरी द्वारा धन हानि की काफी आशंका है परन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध मे धनी होने की सम्भावना है। युवावस्था में अपनी पसन्द के मुताबिक व्यवसाय करने के मार्ग में काफी रोड़े अटकाये जायंगे। भाई या भाइयों से झगड़ा हो या मृत्यु हो। अपने कुटुम्ब के अलावा दूसरे कुटुम्ब से विशेष सम्बन्ध रहेगा। सन्तान काफ़ी चिन्ता उत्पन्न करती रहेगी। उनको अच्छी प्रकार कारोबार में लगाने में कठिनता होगी, परन्तु सबसे बड़ी सन्तान उच्च पद पर पहुँचेगी। ऐसे व्यक्ति प्रायः विवाह करना नही चाहते और विवाह हो जाने पर भी पति-पत्नी सम्बन्ध प्रेम मय रही रहता। और पति या पत्नी को जायदाद

मिलने की सम्भावना है परन्तु मुकदमे के वाद इसमे सफलता मिल सकेगी ।

यात्राएँ काफी लम्बी होगी और उनसे लाभ भी होगा और एक बडी यात्रा के बाद उसको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी । स्थान परिवर्तन से धन तथा व्यवसाय दोनो को हानि होगी क्योकि ऐसे मनुष्यो के सम्पर्क मे आना होगा जिनसे १४, २६ और ३० वर्ष की आयु मे क्षति की सम्भावना है ।

३५वे वर्ष के करीब जातक के जीवनक्रम मे एक परिवर्तन आएगा, अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छा । उसके वाद एक सा क्रम चलता रहेगा । जातक के बहुत से मित्र और सहायक होगे । और इस समय मे उत्पन्न स्त्रियो को सम्बन्धी पुरुषो द्वारा, तथा ऐसे पुरुषो को उच्च श्रेणी की स्त्रियो द्वारा लाभ की सम्भावना है परन्तु किसी ऐसे सहायक की सहसा आर्थिक क्षति हो जाने के कारण जातक के भाग्य पर नाशकारी प्रभाव पड़ेगा ।

२०, ३२तथा ४०वे वर्ष मे मित्र रूप मे ज्ञात होते हुए परन्तु वास्तव मे गुप्त या प्रकट शत्रुओ के षड्यन्त्र से या विश्वासघात से क्षति की सम्भावना है । साधारणतया स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु फेफडो तथा पेट को विशेष सुरक्षित रखना चाहिए । शस्त्रो के आघात की भी आशका है । इन जातको पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहने के कारग जल मार्ग से, समुद्र पार की वस्तुओ से तथा साहित्य आदि से इन्हे विशेष लाभ हो सकता है । इन्हे निष्कारण चिन्ता होती है इसलिए चित्त मे दृढता रहनी चाहिए । मोती, ओपल (Opal) तथा Moonstone (मून स्टोन) पहनना लाभदायक है ।

'वराह मिहिर' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति तीक्ष्ण, शीघ्र कार्य करने वाले तथा दूसरों के अधीन काम करते हैं। इन्हे काफ़ी क्लेश और परिश्रम उठाना पड़ता है। 'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यक्ति कर्म करने में चपल, विख्यात, अपने पक्ष से भी द्वेष करने वाला, पिता आदि की आज्ञा न मानने वाला, दूसरो के कथन तथा देश के विषय में जानकारी रखने वाला होता है। इसे जीवन मे काफ़ी श्रम उठाना पड़ता है। कफ तथा पित्त कुपित होने से रोग होते है। जिस समाज मे मद्यपान प्रचलित है उस समाज के लोग मद्य-प्रिय भी होते है। यह स्वय देखने मे स्वरूपवान होते है, परन्तु इन्हे पति या पत्नी उतने सुन्दर नही मिलते।[१] कभी कभी अन्य ग्रहो की दृष्टि के कारण उपर्युक्त फल मे अन्तर हो जाता है।[२] अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार कुछ बैंगनी या हल्का जामुनी रग, सोमवार तथा २ को संख्या शुभ होगी।

यदि आपका जन्म १७ अगस्त से १६ सितम्बर के बीच में हुआ है।[३]

इस समय सूर्य सिह राशि मे होता है। इस कारण इस समय में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति सिंह के समान निर्भीक, उदार और अभिमानी होते है। उनके चित्त में दृढ़ता, साहस तथा धैर्य विशेष मात्रा मे पाये जाते है और वह अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करने

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये
Lyndoes' Plan with the Planets.

२. देखिये Some Principles of Horoscopic Delineation by C. E. O. Carter

३. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २४ जुलाई से २३ अगस्त तक

मे ईमानदारी और प्रकट व्यवहारी काम मे लाते हैं। ऐसे आदमी अभिमानी होने के कारण बहुत जल्दी नाराज हो जाते हैं परन्तु उनमे न्याय-प्रियता की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उनके क्रोध से लोगो को अकारण हानि नही होती और बुराई का बदला भी भलाई से देते है। इनका प्रेम भी दृढ होता है। सिंह राशि मे सूर्य अपनी राशि का होना है इसलिए इस राशि मे सूर्य तथा सिंह दोनो की प्रकृति विशेष पाई जाती है। वीरता सम्पन्न होने के कारण ऐसे व्यक्ति सैनिक विभाग मे शीघ्र उन्नति प्राप्त करते हैं और शासन सम्बन्धी कार्यों मे विशेप सफल होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने परिश्रम से सम्पत्ति उपार्जित करते हैं परन्तु जुआ, सट्टा तथा उधार देने के कारण द्रव्य की हानि की भी सम्भावना है। द्रव्य के विषय मे भाई-बहनो की ओर से उचित व्यवहार नही प्राप्त होगा। किसी एक निकट-सम्बन्धी की मृत्यु के कारण इनकी आर्थिक स्थिति को धक्का लगने की सम्भावना है। किसी एक यात्रा मे कुछ विपद् की सम्भावना होगी। जायदाद के बँटवारे के कारण सम्भवत सम्बन्धियो से मन-मुटाव हो। किसी एक यात्रा के समय पिता को भी विपद् की सम्भावना होगी। ऐमी स्त्रियो को कभी कभी जुडले बच्चे होते है अथवा प्रसव के समय या उसके वाद विशेष कष्ट होता है। पति या पत्नी के विचारो से सघर्ष के कारण सुख का अभाव होता है। वसीयत के द्वारा धन-जायदाद पाने की सम्भावना है जिसमे सम्बन्धियो द्वारा रोडे अटकाये जायेंगे। यात्राएँ काफी करनी पडेगी। और एक विशेष यात्रा के बाद भाग्योदय होगा। ऐसे व्यक्तियो को प्रायः ऐसे पद मिलते हैं जिनमे सम्मान ज्यादा होता है परन्तु आय कम। मित्रो की सख्या

चाहे अधिक हो परन्तु उनसे लाभ की सम्भावना कम और हानि की अधिक। परन्तु शत्रु ऐसे जातक से दबे हुए रहेगे।

निमोनिया, वातज-व्याधि तथा तिल्ली, हृदय और मसाने की बीमारियो से बचना चाहिए।

पाश्चात्य ज्योतिषियों के मतानुसार इस समय पैदा हुए व्यक्ति बहुत खुशामदपसन्द होते है और यदि उनकी आवश्यकता से अधिक भी चापलूसी की जाय तो भी प्रसन्न ही होते है। एक अगरेज ज्योतिषी के मतानुसार ये प्रेम करने के शौकीन और स्वभाव से बहुत जल्दबाज़ होते है।

'वराह मिहिर' के मतानुसार यदि सिंह राशि मे सूर्य हो तो इस समय मे उत्पन्न हुए मनुष्य की वन, पहाड़ और गायों मे विशेष प्रीति होती है और मनुष्य वीर्यान्वित और बुद्धिमान् होता है।

'सारावली' के मतानुसार जिसके जन्म के समय सिंह का सूर्य होता है वह व्यक्ति स्थिरसत्व, गम्भीर, विख्यात, क्षिति-पालक तथा धन-सम्पन्न होता है किन्तु वृद्धावस्था में ऊँचा सुनने लगता है। एसा व्यक्ति उत्साही, शूर, क्रोधी और तेजस्वी होता है। और अपने शत्रुओ का नाश करने मे समर्थ होता है।[१] रविवार, १ तथा ४ की सख्या तथा पीला, सुनहरा और नारंगी का रंग इनके लिए शुभ है।

यदि आपका जन्म १७ सितम्बर से १६ अक्तूबर के बीच हुआ है[२]

कन्या का सूर्य प्रायः १७ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक रहता

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये

Practical Astrology by Saint Germain तथा Astrological Aspects by C. E. O. Carter.

२. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २४ अगस्त से २३ सितम्बर तक

है। पजाब और बंगाल में प्रायः १ आश्विन से ३० आश्विन तक जो देशी तारीखे प्रयुक्त होती हैं उनमें से किसी दिन यदि जन्म हो तो यह विवरण विशेष मिलेगा।

इस समय जो जातक पैदा होते हैं वह स्वय अपनी योग्यता से उच्च पदो पर पहुँचते हैं। इनकी प्रकृति मे न्याय-प्रियता तथा दयाशीलता रहती है और यह प्रत्येक कार्य पर ठंढे दिमाग से विचार करते हैं। इसका अधिष्ठता बुध है इस कारण बुध के अच्छे गुण, विचारशीलता, बुद्धिमत्ता आदि इन जातको मे विशेष मात्रा मे पाए जाते है। परन्तु जैसा इस राशि का नाम है अर्थात् कन्या, उस राशि के अनुरूप गुण अर्थात् नम्रता तथा लज्जा का स्वभाव भी बहुत अधिक प्रभाव रखता है। शिक्षा की उन्नति तथा समाज मे विशेष सम्पर्क मे आने से अधिक अवस्था मे लजीलेपन मे कमी आ जाती है परन्तु यह इन का प्राकृतिक गुण है। इन जातको को सहसा क्रोध नही आता परन्तु क्रोधित होने पर शान्त भी बहुत समय बाद होते है। अच्छा यह है कि इनके क्रोध से किसी को हानि नही होती और इनको अनुचित क्रोध पर पश्चात्ताप भी होता है। ऐसे व्यक्ति प्राय वाग्मी होते है और चित्र तथा कलाओ मे विशेष प्रेम होता है और पसन्द की छोटी-छोटी चीजो के सग्रह मे विशेष रुचि होती है। अधिक शिक्षित लोगो मे दार्शनिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन मे रुचि तथा तत्परता पाई जाती है।

बचपन मे शारीरिक चोट लगने का विशेष अन्देशा होता है। प्रारम्भिक जीवन मे आर्थिक सफलता भी नही मिलती, बहुत परिश्रम और व्यक्तिगत योग्यता के कारण जो द्रव्य या उच्च पद प्राप्त करते है उसकी सहसा हानि की सम्भावना रहती है।

यात्राएँ भाग्योदय में सहायक होती हैं। सम्बन्धियों से कोई विशेष सहायता की अपेक्षा नही। भाई-बहन बहुत से होंगे परन्तु उनसे सुख नही होगा। वैवाहिक जीवन में भी अन्य प्रेमों के कारण बाधा की सम्भावना है। ऐसे जातकों को चाहिये कि अपनी सन्तान की रक्षा मे विशेष प्रयत्न-शील हों क्योकि इन (सन्तानों) का ऊँची जगह से गिर कर या डूबने से या चौपायो द्वारा हानि की सम्भावना रहती है।

इन जातको के प्रेम-सम्बन्ध मे बहुत बाधाएँ होती है और इन बातो को लेकर सम्बन्धी तथा मित्रों मे या पति-पत्नी के बीच झगड़े हो जाते है। यह व्यक्ति धार्मिक विचार के होते हैं। सम्भवत ऐसा मनुष्य दूसरी शादी करे। दूसरे विवाह से इसके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ जायगा। विरासत में कोई विशेष सम्पत्ति नही प्राप्त होगी और जो मिलेगा भी वह मुकदमेबाजी के बाद। यात्राएँ विशेष करनी होगी और शायद विदेश भी जाना पड़े। इन यात्राओं का सम्बन्ध या तो अपने धनोपार्जन से होगा या किसी उच्च-पदाधिकारी की-आज्ञा से। ऐसे व्यक्ति बहुत परिश्रम के बाद धन-उपार्जन करते है और जिस कार्य को करते है, उसमे शारीरिक भय की भी सम्भावना रहती है। मित्र थोड़े होते है और उनसे कोई विशेष लाभ की सम्भावना नही होगी। कला जगत् तथा व्यापारिक जगत् के कुछ लोग ऐसे जातक से शत्रुता का भाव रखेंगे और नुकसान के कामों मे रुपया लगवा कर आर्थिक क्षति करवायेगे। पेट, जिगर तथा पैरों की विशेष रक्षा करनी चाहिये।

पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार ऐसे पुरुष अन्य स्त्रियो को और इस समय पैदा होने वाली स्त्रियाँ अन्य पुरुषो को अपनी ओर आक-

षित करने का विशेष गुण रखती हैं और इनके स्वभाव में स्थिरता नही होती। पेट की खराबी या स्नायु जाल की कमजोरी के कारण इन्हे रोग होते हैं।

"वराह मिहिर" के मतानुसार जिनका जन्म इस समय होता है उन पुरुषो का शरीर स्त्री के शरीर की भाँति कोमल व स्निग्ध होता है और ऐसे व्यक्ति चित्रकारी, काव्य तथा गणित मे विशेष चतुर होते है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति लज्जालु, मेधावी, गाने-बजाने मे निपुण, मृदु तथा दीन वचन बोलने वाले होते हैं। वहुत वार स्थिर-नक्षत्रो से सयोगवश, एक राशि के अन्तर्गत सूर्य-चार के फलादेश मे वहुत भिन्नता हो जाती है।[१] परन्तु ऊपर सामान्य फल दिया गया है। अग्रेजी ज्योतिष के अनुसार बुधवार, ५ की सख्या तथा अगूरी या काफूरी रग इन्हे शुभ होता है।

यदि आपका जन्म १७ अक्तूबर से १३ नवम्बर के बीच मे हुआ है[२]

इस महीने मे सूर्य नीच का होता है परन्तु तुला का स्वाभाविक गुण है समता इसलिए ऐसे जातक दयालु, प्रेम करने वाले तथा शुद्ध विचार के होते है। क्रोध जल्दी आता है परन्तु जल्दी ही शान्त भी हो जाता है। सूर्य प्राणी की आत्मा है इस कारण आत्मिक शक्ति

---

१. ग्रहों के प्रभाव के विशेष सैद्धान्तिक प्रतिपादन के लिये देखिए —

The Modern Text book of Astrology by Margaret E. Hone तथा The Fixed Stars & Constellations in Astrology by V. E Robson

२. अग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २४ सितम्बर से २३ अक्तूबर

निर्बल होती है। सूर्य ग्रहराज है, इसके चारों ओर अन्य ग्रह परिवर्तित होते रहते है। हमारी पृथ्वी सूर्य-मडल का एक भाग है। इस कारण तुला मे सूर्य के नीचस्थ होने के कारण बहुत से राजयोग अपना प्रभाव नही दिखा सकते है। तुला के सूर्य से राजयोग मे इतनी कमी आ जाती है कि वराह मिहिर के पुत्र पृथुयशस ने तो यहाँ तक लिख दिया है[1] कि यदि परम नीच सूर्य हो (करीब २७ अक्तूबर को जन्म हो) तो राजा का पुत्र भी हो तब भी भीख माँगेगा। इसलिए जिन कुण्डलियो मे अच्छे ग्रह पडे हो परन्तु जन्म १८-२० अक्तूबर या २८ अक्तूबर को हो, अच्छे ग्रह अपना प्रभाव नही दिखा रहे हो, तो यह समझना चाहिये कि यह अच्छे प्रभाव को रोकने वाला ग्रह तुला का सूर्य है और सूर्य की आराधना करनी चाहिए।

ऐसे व्यक्तियो के विचार मे और कार्यो मे अनिश्चितता रहती है परन्तु ऐसे व्यक्तियो के दिमाग मे उपज बहुत होती है और कला, विज्ञान तथा मशीनरी के कार्यों मे प्रवृत्ति होती है परन्तु आत्मा मे इतना बल नही होता कि इन सब बातो को अच्छी तरह पूरा करके लाभ उठा सके। जीवन के मध्य भाग मे ऐसे व्यक्ति का प्रायः

---

१. स्वत्रिकोणगृह केचित् स्वोच्च याता स्वमन्दिरम्।
अति नीचो रविश्चैको न तेषां फलसभव.॥
उच्चस्थोपि तुलांशेवा स्थित· कमलबोधन।
सार्वभौमस्य पुत्रोऽपि नीचत्वमधिगच्छति॥
तुलायां दशमे भागे स्थित कमलबोधन.।
सहस्रं राजयोगाना नाशयत्याशु जन्मनि॥

—होरासार पृष्ठ २३६

भाग्योदय होता है। जल यात्रा से सम्बन्ध या जल से चलने वाली मशीनरी से लाभ होने की सम्भावना है। धन की रक्षा के लिए अदालत मे जाना होगा, जिसमे विजय होगी परन्तु स्थायी शत्रुता भी हो जायगी और अपनी पत्नी या पति से मतभेद भी हो सकता है। भाई-बहन बहुत हो उनमे से कुछ सम्भवत सौतेले हो। भाई बहनो से सम्बन्ध प्रेम मय नही रहे। माता-पिता से भी कुछ मन-मुटाव रहेगा, विशेष कर पिता के साथ।

यदि जातक मध्याह्न के बाद और मध्यरात्रि से पहले पैदा हुआ है तो उसको पितृसुख अल्प होगा। सन्तान थोडी होगी और उनमे से एक के कारण काफी चिन्ता उठानी होगी। कौटुम्बिक जीवन मे समय-समय पर उथल-पुथल होती रहेगी और यह सम्भव है कि ऐसा व्यक्ति किसी को गोद ले या किसी की गोद स्वय जाए या किसी परिवार के साथ सम्मिलित हो। मसाने तथा मलाशय कमजोर रहे। विवाह से धन की सम्भावना है और सम्भव है किसी सम्बन्धी की मृत्यु से आकस्मिक धन-लाभ हो। समुद्र-यात्रा से कोई लाभ नही होगा प्रत्युत् हानि की सम्भावना है। जीवन के मध्य भाग मे पद-हानि की सम्भावना है और सम्भवत साक्षात् या परोक्ष रूप से माता का इस पद-हानि से कुछ सम्बन्ध हो। ऐसे व्यक्ति के पृष्ठपोषक भी बहुत से होगे और उनकी सहायता से अच्छी जगह विवाह तथा ऊँचे स्थान की प्राप्ति भी होगी, परन्तु उन्ही सहायको मे से एक का ऐसा जातक महा अपकार भी करेगा। कौटुम्बिक मामलो को लेकर कुछ धार्मिक क्षेत्र के व्यक्तियो से शत्रुता भी होगी तथा वकील और विद्वानो से भी ऐसे व्यक्ति की शत्रुता होगी।

ऐसे व्यक्ति स्वय अपने लिए कष्ट पैदा करते हैं और एक प्रकार

से अपनी मृत्यु के कारण भी स्वयं ही होते हैं। इसमें पैदा होने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता है परन्तु शारीरिक ढाँचा बहुत मजबूत न होने के कारण वह अपने स्वास्थ्य के विषय में चिन्ता करते रहते है।

नीला या हल्का नीला रंग ऐसे लोगों के लिए विशेष अनुकूल होता है। शुक्रवार और ६ की संख्या भी इन्हे विशेष महत्वपूर्ण होती है। 'वराह मिहिर' के मत से ऐसे समय पैदा होने वाले मनुष्य यदि मद्य (शराब), डिस्टलरी, हाथी, पान, रास्ता चलने का काम (घूम घूम कर बेचना) इन्सपैक्टर, स्वर्ण का काम, या धन के लोभ से किसी भी हीन काम को करे (जो अच्छा नही समझा जाता हो) तो इन्हे अच्छा लाभ होता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसा व्यवित बहुत व्यय करने वाला, विदेश में घूमने वाला, लोहे या दूकानदारी के कार्य से जीविका उपार्जन करने वाला होता है या दूसरों की नौकरी करता है।[1]

यदि आपका जन्म १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर के बीच में हुआ हो।[2]

वृश्चिक का सूर्य प्रायः १४ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक रहता है। इस समय जो जातक पैदा होते है वह लोग तीक्ष्ण बुद्धि वाले परतु चंचल स्वभाव के आदर्शवादी, अपनी धुन के तथा धार्मिक-विचार के होते है। इच्छाशक्ति दृढ़ होती है और धैर्य के साथ काम में लगते है। स्वभाव जोशीला और क्रोधीला होता है। भय के काम

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये :—

Astrology For Every One by Evangeline Adams, तथा Cheiro's "When were you born ?"

२. अंगरजी ज्योतिष के अनुसार २४ अक्तूबर से २१ नवम्बर तक

मे पड़ने से ऐसे लोग झिझकते नही हैं। एक बार क्रोध आने पर ऐसे लोग क्षमा करना नही जानते। मन मे क्रोधाग्नि भीतर ही भीतर धधकती रहती है और यद्यपि बाहर से यह मालूम होता है कि यह शान्त हो गये परन्तु प्रतिहिंसा की भावना उनके अन्दर और भी भयानक रूप धारण कर लेती है और बिना परिणाम का विचार किये शीघ्रता-पूर्वक बदला लेने की भावना से ऐसे व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्द्वी को निर्दयता से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते है। जिनके शरीर मे कफ प्रकृति प्रधान होती है वह केवल अपने व्यक्तित्व से अपने विरोधी को दबा लेते हैं। यदि शिक्षा से ऐसे व्यक्ति सुसस्कृत न हो तो प्राय झगडालू स्वभाव के होते है और अकारण ही सघर्ष मे आ जाते है। ऐसे जातक निपुण तथा धैर्यवान् होते हैं और ग्राम-जीवन तथा खेती के कारोबार को पसन्द करते है। अपने विचारो मे वह इतने जिद्दी होते है कि दूसरो के समझाने से नही मानते। जीवन के पूर्वार्द्ध मे ऐसे व्यक्तियो का भाग्योदय नही होता परन्तु उत्तरार्ध मे काफी सफलता मिलती है।

प० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री राजगोपालाचार्य, और श्री मावलकर आदि बहुत से लोगो के ऐसे उदाहरण हैं जिनका विशेष अभ्युदय जीवन के उत्तरार्द्ध मे हुआ। वृश्चिक का अर्थ है बिच्छू। इसका आगे का आधा हिस्सा मृदु तथा एक प्रकार से अप्रभावशाली है। विप की तीक्ष्णता उत्तरार्द्ध मे है। इस राशि मे जव सूर्य होता है, तब जो मनुष्य पैदा होते हैं उनके जीवन के पश्चिम काल मे विशेप अभ्युदय का यही हेतु है।

ऐसे आदमियो को विरासत मे सम्पत्ति मिलने का भी योग होता है। भाई थोड़े होगे और उनमे से एक को ऊँचे से गिरने या

डूबने का अन्देशा होता है। यदि ऐसा जातक मध्य रात्रि के बाद और मध्याह्न के पूर्व पैदा हुआ हो तो इसके पिता का पद और भाग्य नष्ट हो जाता है। सन्तान वहुत होती है। ज्वर, सिर दर्द तथा स्नायु सम्बन्धी दर्द की शिकायत होती है। इनका हेतु अत्यन्त परिश्रम या अत्यन्त भोग होता है। एक कडी बीमारी होगी परन्तु उससे जातक मुक्त हो जायगा। ऐसा मनुष्य अवश्य विवाह करेगा और सम्भावना यह है कि प्रथम पत्नी का सुख अधिक न हो और दूसरा विवाह करे। पत्नी को किसी चौपाए से या दुर्घटना से चोट लगने का भी अन्देशा होता है।

यह भी सम्भावना है कि ३० वर्ष की अवस्था के पहिले किसी प्रेमी या मित्र की मृत्यु हो, जिससे हृदय को आघात लगे। काफी यात्राएँ करनी होगी पर उन से कोई विशेष लाभ नही होगा। क्योंकि ऐसे जातको को प्रौढावस्था के बाद सफलता प्राप्त होगी, जीवन का पूर्व भाग भाग्योदय के लिए संघर्ष मे ही बीतेगा। मित्र बहुत होगे और उच्च पदस्थ व्यक्तियो की कृपा भी प्राप्त होगी, किन्तु किसी एक मित्र अथवा संरक्षक के कारण सफलता मे या प्रेम-सम्बन्ध में बाधा होगी। शत्रुताएँ भी बहुत होंगी और प्राय. स्थायी रहेगी। ऐसा मनुष्य समुद्रयात्रा करेगा तो विदेश मे शारीरिक आघात का भय होगा। ऐसे व्यक्ति कफ-पित्त प्रधान होते है। ऐसे व्यक्तियो मे क्रोध और ईर्ष्या की मात्रा विशेष होती है। ऐसे जातको को कमर से नीचे भाग में रोग होने की विशेष सम्भावना रहती है, इस कारण सब प्रकार के सक्रामक रोगो से बचना चाहिए। ठढे पानी का एनीमा लेना विशेष लाभदायक है।

राजनीतिज्ञ, आलोचक, डाक्टर, इन्जीनियर, मशीन के कार्य

आदि मे यह लोग विशेष सफल हो जाते हैं। मगलवार और ९ की संख्या इनके लिए महत्त्वपूर्ण होगी। कुछ श्यामता लिए हुए लाल रग भी लाभप्रद होगा।

ऐसे लोग दूसरो के हृदय की बात भाँप लेते है परन्तु इनके पेट की थाह पाना कठिन होता है[१]।

वराहमिहिर के मतानुसार ऐसे व्यक्ति साहसी, शास्त्र मे पडित तथा औषधि एवम् विष-चिकित्सा से विशेष धन उपार्जन कर सकते है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे व्यक्ति क्रोधी, सत्य से विमुख, स्त्री-सुख से हीन, तथा कलह-प्रिय होते है।[२]

यदि आपका जन्म १५ दिसम्बर से १३ जनवरी के बीच मे हुआ हो।

जिन मनुष्यो का जन्म इस समय होता है उन पर बृहस्पति का शुभ-प्रभाव रहता है क्योकि इस समय सूर्य बृहस्पति के घर मे होता है। ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, ईमानदार तथा उदारहृदय के होते हैं और बिना प्रत्युपकार की भावना के दूसरो के साथ भलाई करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियो को क्रोध शीघ्र आ जाता है परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाता है। छोटी-छोटी बातो पर ऐसे व्यक्ति चिन्ता करते रहते है और भविष्य मे आशकित विपत्ति से परेशान रहते हैं। यह लोग स्वतन्त्रता के प्रेमी होते है। ये व्यक्ति वाग्मी होते

---

१. इस सम्बन्ध में एक अच्छी पुस्तक —
"Character Reading Made Easy" by Frederic K. Mejer.

२. ग्रहों के प्रभाव के विशेष अध्ययन के लिये देखिये
"The Principles of Astrology" By C E.O. Carter

३. अगरेजी ज्योतिष के अनुसार २२ नवबर से २२ दिसम्बर तक।

हैं, और अध्ययन-प्रिय भी। विचारो में परिवर्तन होते रहते है। ये कारीगरी के कामों में भी निपुण होते है।

बचपन में इनकी आर्थिक अवस्था अच्छी नही होती और पिता को आर्थिक-क्षति की भी सम्भावना है, परन्तु अपने उद्यम से उन्नति करेंगे। भाई-बहन कम होगे और उनमें से एक के जीवन को कम उमर में अन्देशा होगा। माता-पिता या सास-ससुर मे से एक से मतभेद हो और अपनी सबसे वडी सन्तान के कारण काफी चिन्ता होगी। अपनी सन्तान से भी कुछ अनबन रहे। सम्भवत. विवाह दो हों, उनमें से एक के कारण काफी क्षति उठानी पड़े। दो प्रकार के कार्य जातक एक साथ करता रहेगा, उनके कारण कार्य में बाधा भी रहेगी। ३० वर्ष की अवस्था तक ऊपर से गिरने का या ऊँचे पद पर पहुँचकर फिर नीचे आने का काफी अन्देशा है। यात्राएँ काफी करनी पड़ेगी और किसी एक यात्रा के मध्य मे किसी सम्बन्धी की मृत्यु का समाचार मिलेगा। मित्र बहुत होगे परन्तु एक मित्र के विश्वासघात के कारण जातक की स्थिति को काफी धक्का पहुँचेगा। व्यवसाय तथा प्रेम दोनों क्षेत्रों मे शत्रुओ से संघर्ष होगा।

ऐसे व्यक्तियों को बृहस्पतिवार और ३ की संख्या शुभ होती है। गहरा नीला रंग भी इनके अनुकूल होगा।

जो व्यक्ति इस महीने में पैदा होते है वे खेल-कूद तथा घोड़े की सवारी के बहुत शौकीन होते हैं। यदि सेना में प्रविष्ट हों तो तीरन्दाज़ी अथवा गोली चलाने मे बहुत निपुण होगे। इनके शरीर मे या तो स्नायु-मंडल की कमजोरी के कारण रोग की आशंका होगी या वायु-जनित पीड़ा।

'वराह मिहिर' के मतानुसार जो व्यक्ति इस समय पैदा होते हैं

वे सत्पूज्य, धनवान्, वैदिक कार्य मे कुशल तथा शिल्पकला मे कुशल होते है किन्तु उनकी प्रकृति मे तीक्ष्णता रहती है।

'सारावली' के मतानुसार भी ऐसे व्यक्ति धनी, सरकार से सम्मानित, बन्धुओ के हितकारी और अस्त्र-शस्त्र विद्या मे निपुण होते है।[१]

यदि आपका जन्म १४ जनवरी से १३ फरवरी के बीच हुआ हो।[२]

मकर का सूर्य प्राय १३-१४ जनवरी से १३ फरवरी तक रहता है। मकर राशि का स्वामी शनि है इसलिए जातक मे बहुत से गुण शनि के पाये जाते है। इस समय जो पैदा होते है वह स्वय अपने उद्यम से अपने भाग्य का निर्माण करते है और जो सम्पत्ति उपार्जित करते है उसको नष्ट नही करते। शनि परिश्रमशील ग्रह है, इस कारण ऐसे जातक भी फुर्तीले और परिश्रमशील होते है। मध्यरात्रि के बाद और मध्याह्न के पहले यदि जातक का जन्म हो तो उसमे यह गुण विशेष मात्रा मे पाये जायेगे। परन्तु यदि इसके अतिरिक्त १२ घण्टे मे जन्म हुआ तो शरीर का कोई अग दोप-युक्त हो या आकस्मिक घटना द्वारा ऐसा दोप बाद मे उत्पन्न हो जाए। स्वभाव मे उत्साह के साथ-साथ झगडालू प्रकृति भी होती है। भीतर से मन कभी-कभी बहुत उदास हो जाता है।

ऐसे व्यक्ति द्रव्य कम खर्च करना चाहते हैं और जोड कर रखना चाहते है। व्यापारी बुद्धि इन लोगो की अच्छी होती है और एक से अधिक बातो मे समान रूप से दक्ष होते है। इच्छा

---

१ देखिये "How to Judge Nativity" तथा "Key to Your Nativity" By Alan Leo। अंग्रेजी ज्योतिष की यह अच्छी पुस्तक हैं।

२. अगरेजी ज्योतिष के अनुसार २३ दिसम्बर से २० जनवरी तक।

शक्ति प्रबल होती है और इस कारण अपने ध्येय में सफल होते है। इनके व्यवहार में उतना इखलाक नही रहता, जितना कि रहना चाहिए; इसलिए कुछ उद्दण्डता का प्रभाव पडता है। क्रोध देर में होता है और शान्त भी देर से। विना सोचे-विचारे ऐसे व्यक्ति कोई काम नही करते। इनके कामो में फुर्ती होती है और जन्म कुण्डली के २, १२, ६, ८ में यदि क्रूर ग्रह न बैठे हों तो दृष्टि शक्ति अच्छी होती है।

अपने उद्यम से धन प्राप्त होगा। भाई-बहन कई होगे परन्तु सहायता की अपेक्षा हानि की सम्भावना अधिक है। छोटी-छोटी यात्रायें भी बहुत सी होगी। पिता के किन्ही २ व्यवहारो से खिन्नता होगी और कौटुम्बिक परिस्थितियाँ भी असन्तोप का कारण होगी। इनके वैवाहिक सुख मे भी कुटुम्बियो द्वारा अड़चन डाली जायँगी। जीवन मे पूर्वार्द्ध मे चोट लगने का या अधिक बीमार होने का डर है। वहुत बच्चे नही होगे और इनके अपने व्यवहार के कारण बच्चो का जीवन उतना सक्रिय न हो सकेगा या उनके कारण इनके स्वयं के जीवन में, सफलता में बाधा होगी। यात्रा में काफी अडचने रहेगी और सम्बन्धियो के कारण परेशानियाँ उठानी पडेगी।

शनि की राशि होने के कारण वात-व्याधि से ऐसे जातक पीडित होगे। हाथ-पैर या जोड़ों में गठिया हो या वायु के कारण पाचन-शक्ति में गडबड हो। ऊँचे से गिरकर चोट लगने का भी अन्देशा है। बिना किसी विशेप बीमारी के भी ऐसे आदमियों को कभी कभी बीमारी का वहम रहता है।

विवाहित जीवन मे पूर्णसुख प्राप्त नही हो और एक से

अधिक विवाह भी हो सकते हैं। शत्रु बहुत होगे और ऊँची स्थिति के तथा नीची श्रेणी के—दोनो ही प्रकार के लोग शत्रुता करेंगे। भाई-बहन—कम से कम उनमे से एक—इसका मित्र साबित नही होगा परन्तु अन्त मे विजय जातक की होगी।

ऐसे व्यक्ति बहुत महत्वाकाक्षी होते है किन्तु परिश्रम-पूर्वक ऐसे कार्य द्वारा धन उपार्जन करते हैं जिनमे कोई घाटे की आशका न हो।

शनिवार और ८ की सख्या इनके लिए विशेष महत्वपूर्ण है। हरा अथवा काला खाकी रग इनके लिए शुभ है।

इन लोगो को रोग पाचन-शक्ति की खराबी के कारण होते हैं और वृद्धावस्था मे हृदय-रोग के होने की भी सम्भावना है अथवा वायु-विकार के कारण रोगो से पीडा हो।

'वराह मिहिर' के मतानुसार यदि मकर मे सूर्य हो तो मनुष्य अनुदार, अज्ञ, कुत्सित वाणिज्य करने वाला, अल्प धनवान होता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे आदमी के बन्धु उसका साथ नही देते। वह भीरु, तृष्णासहित बहु कार्यरत तथा लोभी होता है।[१]

बहुत वार नक्षत्र विशेष से सूर्य युति होने पर उपर्युक्त सामान्य फलादेश मे अन्तर भी पड जाता है, जो केवल जन्म कुण्डली द्वारा जाना जा सकता है।[२]

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिये "You and Your Star" by Cheiro (पृष्ठ १-४०)

२. देखिये "The Fixed Stars and Your Horoscope by Dr. W. J. Tucker.

यदि आपका जन्म १४ फरवरी और १३ मार्च के बीच में हुआ हो।[1]

कुंभ का सूर्य १४ फरवरी से १३ मार्च तक रहता है। जो लोग इस समय पैदा होते है उनकी ललित कलाओ की ओर विशेष रुचि होती है और सफलता भी प्राप्त करते है। ऐसे व्यक्ति प्राय: दीर्घजीवी होते है और वक्तृत्व तथा लेखन शक्ति अच्छी पाई जाती है। इनकी प्रकृति में सादगी, मधुरता तथा ईमानदारी होती है और क्रोध आने पर भी अधिक दिनो तक ईर्ष्या का भाव मन मे नही रखते।

इनकी कार्य-प्रणाली में तर्क की अपेक्षा इच्छा शक्ति ही अधिक रहती है। यह लोग एकान्त-प्रिय, धैर्य-शील तथा परिश्रमी होते है। एक बार जो राय कायम कर लेते है उस पर स्थिर रहते है। जो जायदाद ये लोग उपार्जित करेंगे वह स्थायी रूप से इनके अधिकार मे नही रहेगी और शत्रुता का भाव रखने वाले व्यक्तियों के षड्यन्त्र के कारण जायदाद से वंचित होना पड़ेगा। ऐसे शत्रुओ में वह भी होंगे जो बाहर से मित्र मालूम होगे।

ऐसे जातक काफी यात्राएँ करेंगे। परन्तु उनसे कोई विशेष लाभ नही होगा प्रत्युत् धन तथा स्वास्थ्य मे हानि की सम्भावना है। भाई-बहन थोडे होगे परन्तु उनसे कोई प्रेमपूर्ण व्यवहार नही प्राप्त होगा। किसी यात्रा मे जल, शस्त्र या चौपाए से चोट लगने का अन्देशा है। पिता की आकस्मिक मृत्यु हो या सहसा धन का नाश हो।

ऐसे व्यक्तियो के कभी कभी जुड़ले बच्चे होते हैं और स्त्रियो

---

१. अंगरेजी ज्योतिष के अनुसार २१ जनवरी से १९ फरवरी तक।

को प्रसव के समय भारी कष्ट की सम्भावना रहती है। जो बच्चे होगे उनका स्वास्थ्य बहुत दृढ नही होगा और उनके पालन-पोषण मे परिश्रम उठाना होगा।

पेट और फेफडो की बीमारियो तथा सिर दर्दसम्बन्धी बीमारी होने का भय है। जिसका जन्म सूर्योदय के करीब होता है उनको प्राय हृदय रोग की बीमारी होती है। इसके लिए सूर्य की आराधना करनी चाहिए। इसी कारण कुभ राशि के अनेक नामो मे से एक नाम "हृदय रोग" भी है।

इनके भाग्योदय मे उतार-चढाव काफी होगा और उच्च श्रेणी के व्यक्ति सहायता मे तत्पर होगे। इसी प्रकार शत्रु काफी होगे परन्तु अन्त मे सब कठिनाइयो को पार करके ऐसे व्यक्ति समाज मे प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करते है।

जिन व्यक्तियो का इस समय जन्म होता है उनको कठरोग (टॉसिल आदि) की शिकायत की भी सम्भावना होती है और वात-जनित पीडा न हो इसके लिए रक्त को शुद्ध रखना चाहिए। यदि स्वास्थ्य का ध्यान ठीक न रखा जाय तो अधिक अवस्था मे रक्त-चाप (ब्लड प्रैशर) का भय रहता है।

हल्का नीला या बैंगनी रग इनके लिए शुभ होगा। कुछ पाश्चात्य ज्योतिषियो के अनुसार ४ की सख्या तथा शनिवार इनके लिए शुभ है।

'वराह मिहिर' के अनुसार यदि जन्म के समय कुभ का सूर्य हो तो मनुष्य निम्न-वृत्ति का, धन-रहित, भाग्यच्युत होता है और उसे सन्तान-कष्ट सहन करना पडता है अर्थात् कोई सन्तान नष्ट हो या सन्तान आज्ञाकारी न हो।

'सारावली' के मतानुसार जो पुरुष इस समय पैदा होते है वे चुगली करने वाले, व्यर्थ बात करने वाले, शठ होते है। उन्हे दुःख उठाना पड़ता है, किसी से स्थायी मित्रता नही होती और धन-संग्रह करने मे सफल नही होते।

यह सूर्य का राशिगत सामान्य फल है। प्राचीन अगरेज ज्योतिषियो द्वारा जो विशेष फलादेश किया गया है उसके लिये निम्न-लिखित पुस्तक देखनी चाहिए।[१]

यदि आपका जन्म १४ मार्च और १२ अप्रेल के बाच में हुआ हो।[२]

मीन का सूर्य १४ मार्च से १२ अप्रैल तक रहता है। मीन जल-राशि है, इसका स्वामी बृहस्पति है। इस कारण जो जातक इस समय में पैदा होते है उनमे जल-राशि तथा बृहस्पति से प्रभावित सूर्य के गुण आ जाते है।

ऐसे व्यक्ति कला-विज्ञान तथा साहित्य में विशेष निपुण होते है और अपने गुणो द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करते है। बिना चेष्टा किये यह लोकप्रिय हो जाते है। इनकी प्रकृति मे बेचैनी होती है, और अपने कार्य की स्वय आलोचना किया करते है। इनके विचारो मे परिवर्तन होता रहता है और चाहते है कि शीघ्र से शीघ्र अपने उद्देश्य पर पहुँचे। इनकी प्रकृति मे ईमानदारी होती है, परन्तु कल्पनाशील अधिक होते है।

विलास प्रिय होने पर भी स्वाभिमान के कारण नीचे गिरने की

---

१. देखिये Lilly's Astrology By Zadkiel, Published by G. Bell And Sons Ltd. तथा Ptolemy's Tetrabiblos (English Translation by Ashmond)

२. अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार २० फरवरी से २० मार्च तक

प्रवृत्ति को रोकते हैं। इनमे अधिकारी होने की भावना विशेष होती है। लोगो से मिलनसारी और मित्रता का भाव रखते हुए भी अपने हृदय की बात नही बताते। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी होते हैं और दूसरो का बहुत आतिथ्य करते है तथा वार्तालाप मे बहुत निपुण, लिखने पढ़ने मे भी बहुत प्रवीणता होती है। स्वय अच्छा भोजन करने के शौकीन होते हैं तथा दूसरो को दावत देने का भी शौक होता है।

स्वय अपने गुणो के कारण काफी धन उपार्जन करेंगे परन्तु फजूल खर्ची, सट्टा या सम्बन्धियो द्वारा धन का अपव्यय होगा। ऐसे व्यक्ति एक से अधिक काम मे समान रूप से निपुण होते हैं और दोनो काम एक साथ करते रहते हैं। भाइयो की अपेक्षा बहने अधिक होगी और एक की मृत्यु कम अवस्था मे हो ऐसी आशका है। बचपन मे इनके पिता के भाग्य का अपकर्ष हो। ऐसे लोग यात्रा भी अधिक करते हैं और साथ-साथ धन उपार्जन भी। सम्भवत जायदाद सम्बन्धी मुकदमा भी करना पडे। थोडी अवस्था मे घर छोड कर जाना पडे। विवाह भी एक से अधिक हो। इन मे से एक विवाह से काफी परेशानी पडे। स्थान-परिवर्तन कई बार हो। कुटुम्ब मे आकस्मिक दुर्घटनाएँ भी हो।

इस समय मे पैदा होने वाली स्त्रियो को गर्भाशय सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना है। पुरुषो को भी गुप्त अगो मे रोगो की सम्भावना रहती है। हृदय तथा नेत्र सम्बन्धी बीमारियो से बचते रहना चाहिए। दु स्वप्न आवे। असली मित्र बहुत थोडे हो। किसी एक मित्र के कारण, जो शत्रु हो जाए, बडा भारी आघात हो। ऐसे व्यक्ति प्राय समाज मे प्रतिष्ठा लाभ करते हैं।

इस समय जो मनुष्य पैदा होते है उन्हे गहरा नीला रग और

बृहस्पतिवार शुभ होता है। ३ और ७ की संख्या भी शुभ होती है।

'वराह मिहिर' के मतानुसार जिनके जन्म के समय सूर्य मीन राशि में हो वे यदि जल से निकली हुई वस्तु या समुद्रपार देशों से माल मँगाने का या भेजने का (Import and Export) काम करे तो विशेष धन-लाभ हो सकता है।

'सारावली' के मतानुसार ऐसे मनुष्य मीठी वाणी बोलते है परन्तु उनमे असत्य की मात्रा भी होती है। स्त्रियो के सम्पर्क से इन व्यक्तियो का भाग्योदय होता है। ये लोग शत्रु पर विजय पाते हैं और इनके बहुत से पुत्र तथा भृत्य होते है।[1]

प्राय सूर्य के विविध राशियो मे होने से प्रत्येक राशि के फलानुसार जातको के स्वभाव, प्रभाव और भाग्योदय आदि मे भी परिवर्तन होता है। इसलिए पिछले पृष्ठो मे सामान्य फल दिया गया है। किन्तु अन्य ग्रह बदलते रहते है। और किसी एक दिन मे भी बारह लग्न हो जाते है। इस कारण प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुण्डली भिन्न होतो है और सामाजिक स्थिति, वातावरण—देश, काल, पात्र—के भेद से भिन्न-भिन्न फल दिखाइ देते है, किन्तु हम अपने अनुभव के आधार पर यह अवश्य कह सकते है कि जो सूर्य का भिन्न २ राशि के अनुसार फल दिया गया है उसकी मुख्य-मुख्य बाते अवश्य मिलती है।

अग्रेजी ज्योतिप के आधार पर भिन्न-भिन्न सौर (सूर्य के) मासो मे पैदा होने वाले व्यक्तियो के शुभ और अशुभ अक भी लिख दिये है परन्तु हमारा अपना अनुभव यह है कि अग्रेज़ी की जन्म तारीख़

---

१. विशेष विवरण के लिये देखिए 'Your Fate by Stella Coeli तथा 'The Zodiac and the Soul' by C. E O. Carter

का जो अक होता है उसके अनुसार शुभ अक अधिक मिलता है। उदाहरण के लिए ऊपर यह बताया गया है कि १४ फरवरी से १३ मार्च तक जो व्यक्ति पैदा हुए हो उनके लिए ४ का अक शुभ है, ऐसा अनेक अग्रेज ज्योतिषियो ने लिखा है, इस कारण इस विचार को थोडी सी मान्यता हमने भी अपनी पुस्तक मे दे दी है परन्तु यदि कोई मनुष्य २३ फरवरी को उत्पन्न हुआ हो तो २३ का मूल अक २+३=५ होने के कारण हमारे विचार से उसे ५ का अक ही विशेष शुभ होगा।

मेलापक-विचार

जिस प्रकार अक-विद्या से शुभाशुभ वर्ष, मास या दिन का विचार किया जाता है, अथवा 'प्रश्न' मे अक-ज्योतिष की उपयोगिता होती है, उसी प्रकार अमुक पुरुष का विवाह अमुक स्त्री से उपयुक्त होगा या नही, इस विषय मे पाश्चात्य ज्योतिषियो ने बहुत विचार किया है। एक अग्रेज ज्योतिषी ने तो कई सौ पृष्ठ की—केवल इस विषय की पुस्तक[१] लिखी है कि अमुक मास मे पैदा होने वाला पुरुष अमुक मास मे पैदा होने वाली स्त्री से विवाह करे तो किस प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक सुख-दुःख की उपलब्धि होगी। परन्तु इस पाश्चात्य दैवज्ञ ने केवल जन्मस्थ सूर्य को ही समस्त विचार का आधार रखा है। हमारे विचार से यद्यपि सूर्य ग्रहराज है तथापि केवल सूर्य-स्थिति को आधार मान कर वर-वधू मेलापक विचार करना समीचीन नही। भारतीय ज्योतिष के अनुसार जन्म के समय जिस नक्षत्र मे चन्द्रमा था उसी के आधार पर वर-वधू के

---

१ Successful Marriage by Pharos Published by Richard Arling Ltd. 210-11 Piccadilly, London.

गुण (नाडी, गण, वश्य, वर्ण आदि) मिलाये जाते है। अंक-विद्या के पोषक अग्रेजी की जन्म तारीख को महत्व देते है और यदि वर तथा वधू की जन्म की तारीखो में सहानुभूति है तो उनके विचार से वर-वधू में प्रेम रहेगा। किन-किन तारीखो के मूल अक में सहानुभूति है यह तृतीय प्रकरण मे बताया जा चुका है। नीचे सब तारीखो को ५ वर्गो मे विभाजित किया गया है

(क) १, १०, १६, २८ (ख) २, ११, २०, २६
४, १३, २२, ३१ ७, १६, २५,
(ग) ३, १२, २१, ३० (घ) ५, १४, २३
६, १५, २४
६, १८, २७ (ङ) ८, १७, २६

इस वर्गीकरण के अनुसार पुरुप की जन्म तारीख (क) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख (क) या (ख) के अन्तर्गत होना उत्तम है। यदि पुरुप की जन्म तारीख (ख) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख (क) या (ख) के अन्तर्गत होना उत्तम है। यदि पुरुप की जन्म तारीख (ग) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख भी (ग) मे होनी चाहिये। यदि पुरुष की जन्म तारीख (घ) के अन्तर्गत हो तो कन्या की जन्म तारीख का (घ) के अन्तर्गत होना उत्तम है।

किन्तु यदि पुरुष की जन्म तारीख ८, १७ या २६ हो तो, "ऐसी कन्या से विवाह करे जिसकी जन्म तारीखका मूल अक ८ न हो क्योंकि स्त्री तथा पुरुष दोनो का मूल अंक ८ हो यह अभिप्रेत नही है।

८ वाँ प्रकरण

हस्त-रेखा और अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य

अक-ज्योतिष के विषय मे पिछले प्रकरणो में यह बताया जा चुका है कि जन्म की तारीख से यह कैसे पता लगाया जाय कि कौन-कौन से वर्ष महत्वपूर्ण होगे। अब इस प्रकरण मे यह बताया जाता है कि भविष्य के निर्णय मे हस्त-रेखा विज्ञान तथा अक-विद्या ज्योतिष एक दूसरे को कहाँ तक सहायता दे सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति हमको आकर अपना हाथ दिखावे और उसकी अगरेजी की जन्म तारीख भी हमे ज्ञात हो तो दोनो की सहायता से क्या हम किसी विशेष नतीजे पर पहुँच सकते है।[1] अगरेजी हस्त-रेखा विशारद 'कीरो' ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि हस्त-रेखा के चिह्नो से— "किस वर्ष मे यह घटना "होगी", यह निश्चय करने के लिये वह आयु को सात-सात वर्ष के भागो मे बाँटते थे? प्रति सातवें वर्ष मे, जीवन मे कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है, ऐसा उनका विचार था। 'कीरो' लिखते है कि डॉक्टरी या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करने से भी ज्ञात होता है कि सात-सात वर्ष का समय विशेष परिवर्तन उत्पन्न करने वाला होता है। बालक के उत्पन्न होने के पहिले भी गर्भ-पिण्ड, एक के पश्चात् दूसरी, इस क्रम से सात अवस्थाओ मे परिवर्तित होता है। मस्तिष्क के विकास मे भी सात स्थिति होती हैं। मनुष्य के शरीर मे प्रत्येक सात वर्ष के पश्चात्

---

१. देखिये Cheiros Language of the Hand पृष्ठ १८४ तथा १८८।

नयी त्वचा, पुरानी त्वचा का स्थान ले लेती है। कीरो के मतानुसार अनादिकाल से पृथ्वी के समस्त देशो मे सात की संख्या का बहुत महत्व रहा है। पृथ्वी मे सात नस्ल या जाति के लोग रहते हे। सात ग्रह सप्ताह के सात वारो के अधिष्ठाता हे। सात के महत्व के अन्य दृष्टान्त भी कीरो ने दिये हैं परन्तु स्थानाभाव के कारण उन्हे यहाँ स्थान नही दिया जा रहा है।

कीरो के मतानुसार एक सात वर्ष के जीवन के भाग के बाद, दूसरा सात वर्ष का भाग छोड़कर जो तीसरा, पाँचवा, सातवाँ, नवाँ भाग आता है, उसमे समानना होती है। इसी प्रकार जीवन का जो दूसरा, ७ वर्ष का भाग है, उसी के समान जीवन का चौथा, छठा, आठवाँ, दसवाँ व बारहवाँ भाग होगा। उदाहरण के लिये यदि कोई बालक अपने जीवन के सातवे वर्ष मे बीमार और कमजोर रहा है तो वह अपने जीवन के २१ वे वर्ष मे भी बीमार और कमज़ोर रहेगा। इसके विपरीत यदि कोई बालक बचपन में कमजोर और बीमार था लेकिन सातवे वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा और यदि वह आपके पास आकर बीस वर्ष की आयु मे अपना हाथ दिखाता है कि स्वास्थ्य अच्छा नही है, कब से उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी तो आप उपर्युक्त सिद्धान्त के आधार पर कह सकते है कि २१ वें वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शरीर मे जो अन्दरूनी माँस-पेशियाँ, रुधिर या ग्रथियाँ हैं—जिनसे सदा रक्त-स्राव रहता है—वे प्रत्येक चौदह वर्ष मे अपनी पूर्व स्थिति पर उसी प्रकार आ जाती हैं जैसे बारह घटे बाद घड़ी की छोटी सूई अपने स्थान पर आ जाती है। जहाँ तक शारीरिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध है चौदह वर्ष की प्रणाली का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है एसा कीरो का मत है
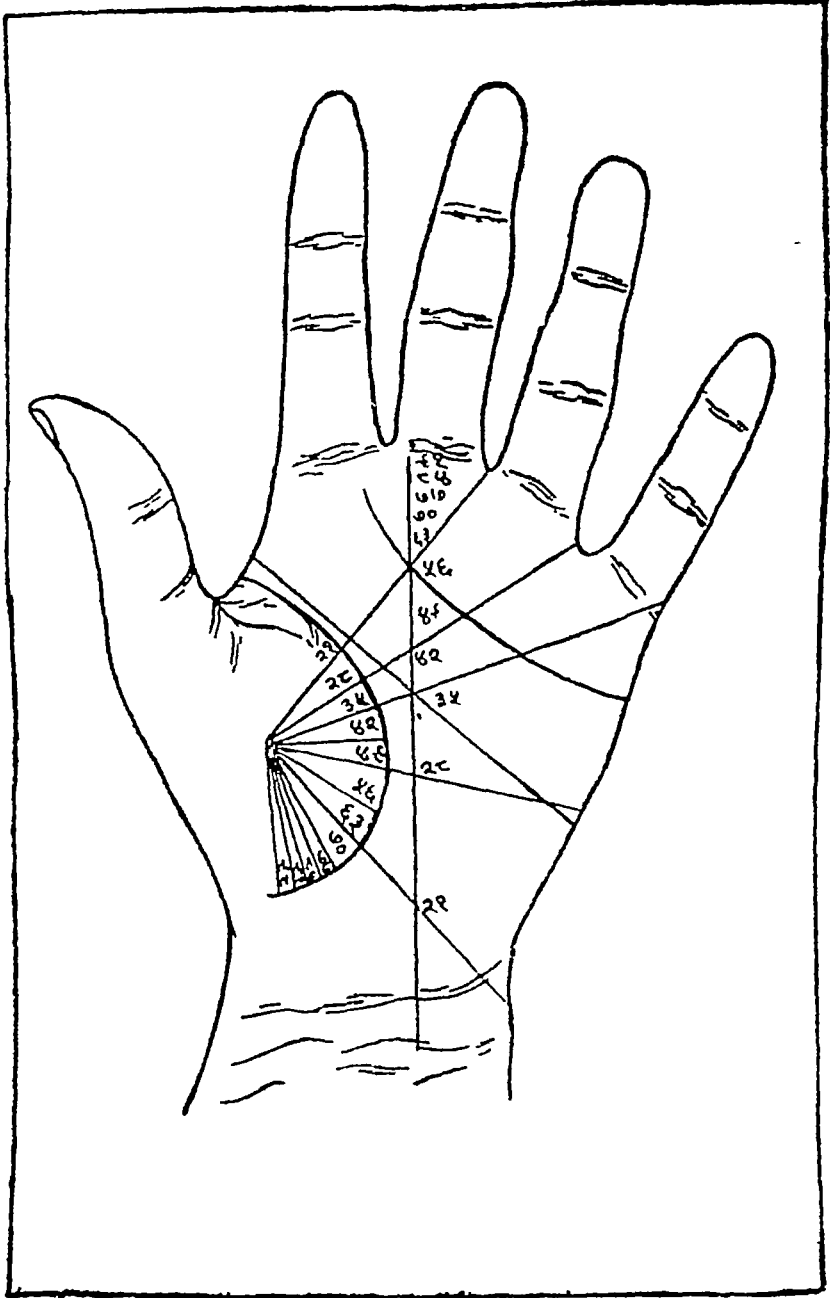
टिप्पणी—यह चित्र ''हस्तरेखा विज्ञान' 'पृष्ठ १८४ से दिया गया है। विशेष विवरण के लिये उपयुक्त पुस्तक का अवलोकन करें।
प्राप्ति स्थान गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली-६। पृष्ठ संख्या ६०० मूल्य ८)

अंक-ज्योतिपविद्या का हस्त-रेखा विज्ञान से सामजस्य करने से हम बहुत कुछ ठीक-ठीक पता लगा सकते है। साथ के चित्र मे यह दिखाया गया है कि जीवन-रेखा को हम सात-सात वर्षो के खण्डो मे किस प्रकार विभाजित कर सकते है। साथ ही भाग्यरेखा को भी सात-सात वर्ष के खण्ड मे बाँटा गया है। यह चित्र कीरो के मतानुसार यह प्रदर्शित करता है कि युवावस्था के जीवन को यदि हम दो प्रधान भागों मे बाँटना चाहे तो पहला खण्ड २१ वर्ष की अवस्था से ३५ वर्ष की अवस्था तक होगा। जहाँ भाग्य-रेखा शीर्ष-रेखा को काटती है वहाँ से दूसरा खण्ड प्रारम्भ होकर ५६ वे वर्ष पर समाप्त होता है। जिस द्रव्य-उपार्जन मे मनुष्य का बाहुबल और बुद्धि विशेष आधार होते है उसका समय इक्कीसवे वर्ष से आरम्भ होता है। भाग्य-रेखा को सात-सात वर्ष के खण्डों मे बॉट कर यह बताया गया है कि कब भाग्य की स्थिति कैसी रहेगी। इसी प्रकार जीवन रेखा को भी सात-सात वर्ष के खण्डों मे बॉटा गया है। हमारी "हस्त-रेखा विज्ञान" नामक पुस्तक में हमने यह अच्छी तरह समझाया है कि हाथ की रेखाओ से वर्ष कैसे निकालना चाहिये। जिनके हाथ विशेष लम्बोतरे या अधिक चौरस हो, जिनकी हृदय-रेखा या शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान पर न होकर अधिक ऊँची या नीची हो तो कीरो का यह पैमाना बिल्कुल ठीक नही बैठेगा, परन्तु हाथ की रेखाओ में कौनसी रेखा से कौनसा वर्ष समझना चाहिये, इसका अक-ज्योतिष-विद्या से कैसे सांमजस्य करना चाहिये, यह नीचे बताया जा रहा है।

उदाहरण के लिये एक मनुष्य आपके पास आता है। आप उसका हाथ देखकर इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि ३९ से ४१वे वर्ष के

करीब जीवन-रेखा पर अशुभ चिह्न है और भाग्य रेखा पर भी करीब-करीब इसी अवस्था पर कमज़ोरी आ गयी है। आप उस मनुष्य से पूछते है कि इस समय उसकी अवस्था क्या है और क्या वह २५-२६ वर्ष की उम्र मे बीमार हुआ था ? वह आपको जवाब देता है कि इस समय उसकी उम्र ३७ साल की है, वह २६ वें वर्ष मे अधिक बीमार रहा था और वर्ष भर उसका स्वास्थ्य अच्छा नही रहा किन्तु २८ वे वर्ष से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा। आप तुरन्त मन मे विचार करते है जिस समय को आप ३९-४०-४१ वर्ष समझ रहे थे—उसमे से कौनसा वर्ष है यह हस्त-रेखा से निश्चय नही कर सके थे—वह वास्तव मे ४० वाँ वर्ष होना चाहिये, क्योकि कीरो के उपर्युक्त मतानुसार चौदहवाँ वर्ष, स्वास्थ्य के दृष्टि-कोण से एक-सा जाना चाहिये। आप ताईद के लिये (अपने निर्णय की पुष्टि के लिये) उसकी हस्त-रेखा देखते हैं कि करीब ग्यारह-बारह वर्ष की उम्र मे जीवन-रेखा पर कुछ गढ्ढा है। २६ वे वर्ष मे वह कुछ बीमार हुआ था, यह ज्ञात होने के कारण आप उसमे से चौदह घटाकर पूछते हैं कि "बारहवे वर्ष मे तो आप बीमार नही हुए ?" वह बारहवे वर्ष मे बीमार होना स्वीकार करता है। उसके जीवन मे बीमारी का चौदहवे वर्ष का क्रम ठीक बैठता है, इस नतीजे पर पहुँचते ही आप निश्चयात्मक स्वर से कहते हैं "चालीसवे वर्ष मे आप बीमार होगे किन्तु ४२ वें वर्ष से पूर्ण स्वस्थ हो जावेंगे" आप से वह पुन. प्रश्न करता है कि बाद मे तो कोई बीमारी नही है ? तो आप कह सकते हैं कि ५४ वे वर्ष मे पुन बीमारी का योग है। स्मरण रहे कि भविष्य कथन इतना सरल नही है जितना कि बहुत से लोग समझते हैं। केवल १४ जोडने से बीमार होना

अवश्यम्भावी हो तो भविष्य-कथन वहुत सरल हो जावे। जब हस्त-रेखा से हम किसी निर्णय पर पहुँचे और हमे किस वर्ष मे यह घटना होगी यह निश्चय करने मे कठिनाई हो तो अक ज्योतिष-विद्या का आश्रय लेना चाहिये। इस प्रकार हस्त-रेखा-विज्ञान तथा अक-ज्योतिष का सामजस्य विशेष सहायक हो सकता है। दूसरा दृष्टान्त लीजिये।

प्रथम महायुद्ध के समय लार्ड किचनर भारत के प्रधान सेनापति थे। इनके हाथ को देखकर कीरो ने यह वता दिया था कि ६६ वर्ष की अवस्था मे वह समुद्र मे डूब कर मरेगे। हाथ को देखकर यह पता चलता था कि ६६ वर्ष की अवस्था मे यात्रा-रेखा द्वारा भाग्यरेखा और अभ्युदय-रेखा खण्डित होती थी। लार्ड किचनर के गत जीवन की घटनाओ मे निम्नलिखित वर्ष विशेष महत्व के थे।[१]

१८९६ = १ + ८ + ९ + ६ = २४ = २ + ४ = ६
१८९७ = १ + ८ + ९ + ७ = २५ = २ + ५ = ७
१८९८ = १ + ८ + ९ + ८ = २६ = २ + ६ = ८
१९१४ = १ + ९ + १ + ४ = १५ = १ + ५ = ६
१९१५ = १ + ९ + १ + ५ = १६ = १ + ६ = ७
१९१६ = १ + ९ + १ + ६ = १७ = १ + ७ = ८

इनसे कीरो ने यह निष्कर्ष निकाला कि जिन वर्षो का जोड़ ६, ७, ८ होता है वह लार्ड किचनर के जीवन मे विशेष महत्व के थे। इस कारण ६६ बर्ष की अवस्था जब वह पूरी करेगे तब दो बार ६ के अंक आने से उनके जीवन मे विशेष घटना घटित होनी

---

१. How I foretold the Lives of Great Men पृष्ठ २७-३०।

चाहिए। यह सन् १९१६ मे होता था और सन् १९१६ का योग १+९+१+६=१७=१+७=८ होता था। यह आठ को संख्या भी उनके जीवन मे महत्वपूर्ण थी। कीरो ने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि ज्योतिष (जन्मकुण्डली) से वह इस निर्णय पर पहुँचे कि जल मे डूबकर लार्ड किचनर की मृत्यु होगी और ६६ वर्ष पूर्ण करने पर यह घटना घटित होगी। इस भविष्यवाणी का आधार अक-ज्योतिष-विद्या थी। (६६ तथा १९१६ का महत्व ऊपर बताया जा चुका है।)

इसी प्रकार बेलजियम के बादशाह लियोपोल्ड II के विषय मे कीरो ने बहुत पहले ही बता दिया था कि बादशाह की मृत्यु सन् १९०९ मे होगी। हस्तरेखा तथा जन्म-दिन की ग्रह-स्थिति से कीरो जिस निश्चय पर पहुँचे थे उसकी पुष्टि अक-ज्योतिष से होती थी। कीरो ने किस मनुष्य की जीवन घटनाओ के भविष्य कथन मे, किस प्रकार अक ज्योतिष की सहायता ली, इसका विस्तृत परिचय उनकी पुस्तको को देखने से ही मिल सकता है। यहाँ केवल इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि कौनसी घटना किस वर्ष मे होगी इसका मोटा अदाज हाथ की रेखाओ से लगता है। किन्तु बिल्कुल ठीक वर्ष निश्चय करने मे अक-ज्योतिष सहायक होता है। उदाहरण के लिए एक स्त्री का जन्म २० अगस्त सन् १९१९ को हुआ। २० तारीख का अक २+०=२ हुआ। जन्म-तारीख की सयुक्त सख्या २+०+८+१+९+१+९=३०=३+०=३ हुई। जैसा कि हमने पिछले प्रकरणो मे बताया है, बहुत से व्यक्तियो के जीवन मे संयुक्त अंक की बजाय केवल जन्म की तारीख के अक का विशेष महत्व होता है। इस स्त्री का हाथ देखते समय प्रश्न किया कि इसका विवाह किस अवस्था मे हुआ

तो उसने उत्तर दिया कि १३वे वर्ष मे। इस उत्तर से पुष्टि हुई कि १+३=४ तथा २ की सख्याओ मे सहानुभूति है। इस कारण इसके जीवन में दो की सख्या विशेप महत्व की है। फलत: २० वर्ष मे इसके पुत्र होगा। यह भविष्य कथन किया जो अक्षरश: सत्य निकला और जब इसका ३८वॉ वर्ष था ३+८=११=१+१ =२ तब इसके पुत्र का विशेप अभ्युदय हुआ। इसका थोडा थोडा इगित हस्तरेखा मे भी था। परन्तु जिस चिह्न को हम बीसवें वर्ष का द्योतक मानते हैं उसको २१वॉ भी मान सकते हैं। जिसको ३८वा माना जाता है उसको ३७वा या ३६वॉ भी कह सकते हैं। क्योकि जीवन-रेखा या भाग्य रेखा पर वर्ष स्थिर करना केवल दृष्टि के अन्दाज़ पर निर्भर रहता है। परन्तु अक-विद्या के प्रभाव से जिसका जन्म २० अगस्त को हुआ है उसके लिए महत्वपूर्ण २० वाँ और ३८वा ही वर्ष होगा, २१वॉ या ३६वा नही। इस प्रकार अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य हस्तरेखा विज्ञान के करने से फलादेश का वर्ष निश्चित करना सुलभ हो जाता है।

सुप्रसिद्ध हस्तरेखा-विशारद सेंट जर्मेन की पुस्तक मे एक चित्र दिया गया है जिससे हाथ की विविध रेखाओ से, किस वर्ष मे अमुक घटना घटित होगी, इसका अनुमान किया जा सकता है। देखिए अग्रिम चित्र इसमे सुगमता के लिए आयु के ६-६ वर्ष के खण्ड किए है। यदि कोई चिह्न २४ और ३० वर्ष की अवस्था के बीच मे हो तो अन्दाज़ से यह निश्चय करना चाहिए कि बीच का यह काल २७, २८ या २६ है? बहुत बार ठीक वर्ष निश्चित करने मे बहुत कठिनाई होती है। उस समय अक-ज्योतिष से यह निश्चय करना चाहिए कि ९(२+७=९), १ (२८=२+८=१०=१+०=१) या
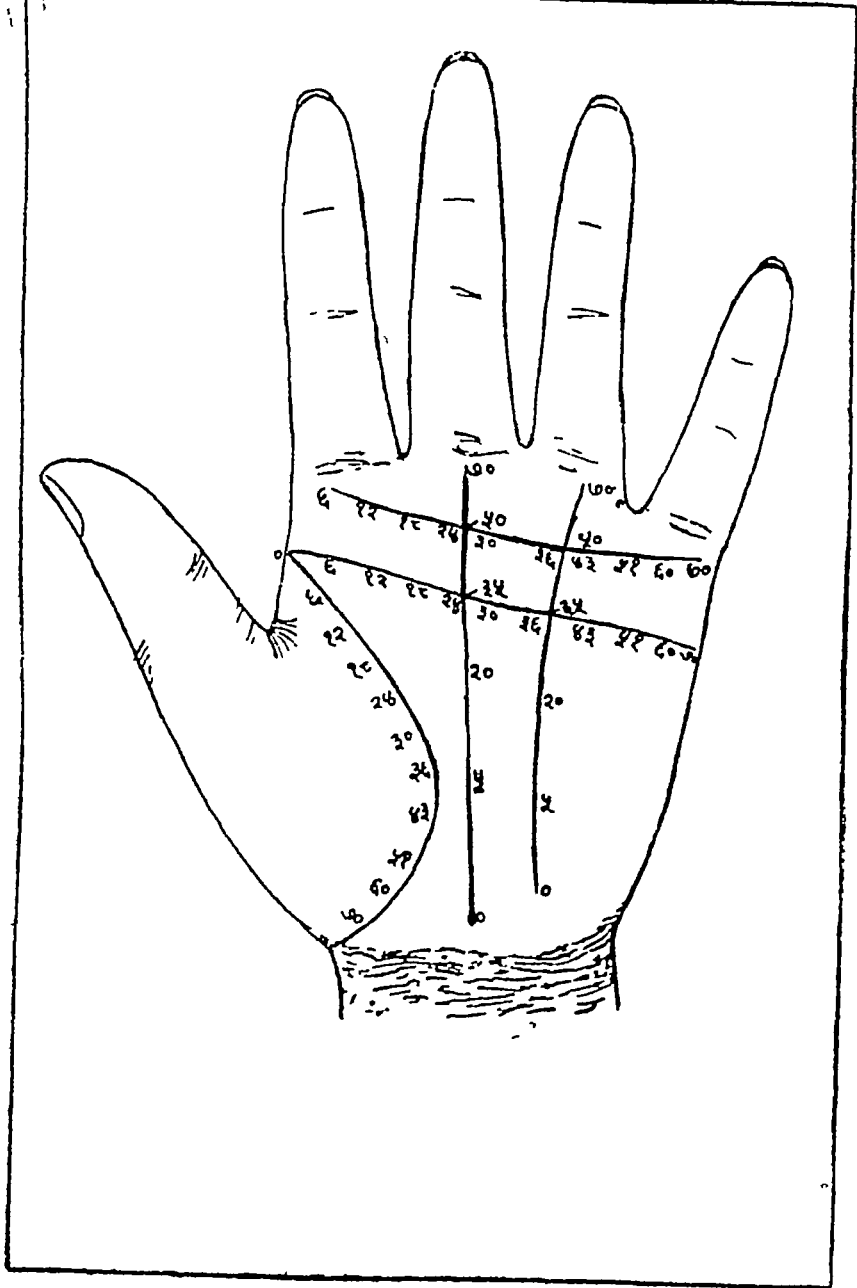
यह चित्र "हस्तरेखा-विज्ञान" पृष्ठ २०४ से दिया गया है। उपर्युक्त पुस्तक में हस्तरेखा सम्बन्धी ३६ अंगरेजी पुस्तकों तथा ४० सस्कृत पुस्तकों का सार दिया गया है। इस विषय के विशेष जिज्ञासु उसका अवलोकन करें। अथवा देखिये The Study of Palmistry For Professional Purposes का Appendix

२ (२९=२+९=११=१+१=२) कौनसा अंक जातक के जीवन मे विशेष महत्व का है ? उसी के अनुसार २७, २८ या, २९वां वर्ष महत्व का होगा। यह निश्चय कर फलादेश किया जावे तो विशेष ठीक होगा।

इसी आधार पर हमने एक सज्जन के हाथ की रेखाओ से उनका फलादेश किया। उनका जन्म अगरेजी ८ तारीख को हुआ था। ऐसे वर्ष जिनका योग ८ होता है सदैव उनके जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण हुए। आठवे वर्ष में वह बहुत रोगी रहे, यहाँ तक कि प्राण बचने की आशा नही थी। १७ (१+७=८) वर्ष मे उन्होंने मिडिल परीक्षा पास की। उस समय सन् १९०० मे मिडिल परीक्षा का भी बहुत महत्व था और अपने निवासस्थान से करीब २०० मील दूर जा कर मिडिल की परीक्षा देनी पडती थी। अपने जीवन के २६ (२+६=८) वर्ष मे उन्होने बी० ए० पास किया और अपने कालेज के समस्त छात्रो मे प्रथम रहे। ३५ वे वर्ष मे (३+५=८) परम प्रिय पुत्रोत्पत्ति का हर्ष हुआ। ४४वे (४+४=८) वर्ष मे उन्हे करीब साढे चार हजार वार्षिक की आय का ग्राम पारितोषिक रूप मे प्राप्त हुआ। इसी प्रकार ५३वाँ ६२वाँ, तथा ७१वाँ वर्ष भी उनके जीवन मे विशेष महत्व का हुआ है। उनके हाथ की रेखाओ को देखने से इन वर्षों का बिल्कुल ठीक अन्दाज नही हो सकता था। अंक-ज्योतिष के प्रभाव से ही यह निश्चित किया कि उपर्युक्त वर्ष विशेष महत्व के थे और वास्तव मे दोनो विद्याओं के सामञ्जस्य से ही अनेक व्यक्तियों के जीवन की घटनाएँ बताने में बहुत सफलता मिली।

जन्म-कुण्डली तथा अंक-ज्योतिष का समन्वय

यह पुस्तक अंक-ज्योतिष से सम्बन्ध रखती है इस कारण जन्म कुण्डली सम्बन्धी उन बारीकियो का हवाला नही दिया जायगा जिनका ज्ञान केवल ज्योतिष के पडितो को होता है। ऐसी कुछ स्थूल बाते नीचे बतायी जायेगी जिनको जानने से मनुष्य ठीक ठीक फलादेश करने मे सफल होता है।

हिन्दी मे एक कहावत है कि "बारह वर्ष मे घूरे के भी भाग्य फिरते हैं।" इसका अर्थ क्या है? "घूरा" कूडे को कहते हैं। अर्थात् जो निकम्मी से निकम्मी वस्तु है उसका भी बारह बर्ष मे भाग्योदय का समय आता है। इस बारह वर्ष की अवधि का क्या तात्पर्य है? सूर्य एक वर्ष मे अपना भ्रमण पूर्ण कर लेता है, वास्तव मे भ्रमण तो पृथ्वी सूर्य के चारो ओर करती है किन्तु लोकव्यवहार मे सूर्य का भ्रमण कहलाता है। चन्द्रमा करीब २८ दिन मे पृथ्वी के चारो ओर एक चक्कर पूरा कर लेता है। मगल को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने मे औसत समय डेढ वर्ष का लगता है। बृहस्पति बारह वर्ष मे पृथ्वी के चारो ओर घूमकर अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। शुक्र और बुध प्रत्येक को पृथ्वी की परिक्रमा करने मे १वर्ष का समय लगता है। बुध और शुक्र सूर्य के आगे पीछे ही रहते हैं। कभी कोई आगे कभी कोई पीछे, कभी दोनो आगे, कभी दोनो पीछे। बुध सूर्य से २८ अश से अधिक दूर कभी नही रहता। शुक्रसूर्य से ४८ अश से अधिक दूर नही रह सकता। शनि को प्रत्येक राशि मे करीब २½ वर्ष का समय लगता है और कुल बारह राशियाँ होती हैं, इस कारण १२×२½=३० वर्ष मे वह पृथ्वी के चारो ओर अपनी परिक्रमा पूरी कर लेता है। हर्शल और नैपच्यून यह दो

नवीन ग्रह हैं। इनका वर्णन हमारे प्राचीन ज्योतिषशास्त्र में नहीं मिलता। पाश्चात्य वैज्ञानिकों के अनुसार हर्शल को पृथ्वी के चारों ओर एक परिक्रमा पूर्ण करने में ८४ वर्ष का समय लगता है। नैपच्यून को १६८ वर्ष का समय लगता है। राहु और केतु दो उपग्रह हैं। राहु कोई दिखाई देने वाला ग्रह नही है; इसीलिए इसे छाया-ग्रह कहते है। पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर भ्रमण का एक मार्ग है। चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण का एक अन्य मार्ग है। जहाँ यह दोनों मार्ग एक दूसर को काटते हैं उस बिन्दु का नाम राहु है। राहु का स्वरूप सर्प की भाँति माना गया है। राहु को सर्प का सिर और केतु को पूंछ कहते है। यह जो पृथ्वी के मार्ग और चन्द्रमा के मार्ग का—एक दूसरे को काटने वाला "चौराहा" या "बिन्दु" है वह स्थिर नही है। वह सरकता रहता है और १८ वर्ष मे मण्डलाकार घूमकर फिर अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है। इसलिए लोक-व्यवहार में कहते है कि राहु को पृथ्वी की परिक्रमा करने मे १८ वर्ष का समय लगता है।

जन्म-कुण्डली से फलादेश मे मुख्य रूप से तीन सिद्धांत काम में लाये जाते हैं :—

(क) विंशोत्तरी दशा तथा अंतर्दशा के अनुसार फल-कथन।

(ख) गोचर फल कथन—कब कौन सा ग्रह किस राशि में जा रहा है, इस प्रभाव के कारण फलादेश।

(ग) वर्ष-कुण्डली अर्थात् जन्म के समय सूर्य जहाँ पर था, प्रतिवर्ष सूर्य जब वहाँ आवे उस समय की कुण्डली के अनुसार फलादेश।

उपर्युक्त तीनों प्रकारो के फलादेशो से अक-ज्योतिष का सम्बन्ध है।

महादशा, अन्तर्दशा तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति से ही विशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा का क्रम प्रारम्भ किया जाता है। उदाहरण के लिए आप किसी की जन्म-कुण्डली मे यह देखते है कि उसका बृहस्पति तथा सूर्य दोनो शुभ हैं और बृहस्पति की महादशा मे सूर्य का अतर ६ महीने १८ दिन का चल रहा है। उस मनुष्य की आयु इस समय २४$\frac{3}{4}$ वर्ष की है और २५ वर्ष ६ महीनें १८ दिन की अवस्था तक सूर्य का अतर रहेगा । अक-ज्योतिष मे आप इस नतीजे पर पहुँचे कि २५वाँ वर्ष उसको शुभ होना चाहिए तो प्रत्यन्तर दशा आदि लगाने की आवश्यकता नही, न विशेष गोचर का विचार आवश्यक है, वर्ष-कुण्डली बनाने की आवश्यकता भी नही, आप तुरन्त कह सकते है कि २५वे वर्ष मे कार्य हो जावेगा। मान लीजिए कि वह किसी नौकरी के लिए उत्सुक है तो आप कह सकते है कि २५वें वर्ष मे नौकरी लग जावेगी। यहाँ जो ६ महीने १८ दिन की सूर्य की अन्तर्दशा है उसके विचार मे अक-ज्योतिष से सहायता लेने से इस नतीजे पर पहुँच सकते है कि प्रथम तीन मास मे ही-२५वे वर्ष मे ही-कार्य हो जावेगा।

गोचर-फल तथा अंक-ज्योतिष का सम्बन्ध

ज्योतिष शास्त्र मे इस बात का विस्तृत विवेचन किया गया है कि जन्म के समय जिस राशि मे चन्द्रमा है (सक्षेप मे इसे जन्म-राशि या राशि कहते हैं) उस राशि मे जब कोई ग्रह आवे तो क्या फल ? उससे दूसरी राशि मे आवे तो क्या ? तीसरी

राशि मे क्या फल ? इस प्रकार जन्म-राशि मे बारहो राशि में जब गोचरवश घूमते हुए सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु आवे तो पृथक् पृथक् क्या क्या फल देते हैं ? सूर्य, बुध, शुक्र प्राय एक वर्ष मे परिक्रमा पूर्ण कर लेते है। इस कारण जिस राशि मे शुभ फल देते है उस महीने को स्मरण रखना चाहिए और अपने जीवन मे अनुभव करना चाहिए कि प्रतिवर्ष वह महीना कैसा बीतता है। उदाहरण के लिए सूर्य जब कर्क राशि पर आवे (यह समय प्राय १५ जुलाई से १६ अगस्त तक प्रतिवर्ष होता है) तब यदि किसी मनुष्य को चिन्ता, व्ययाधिक्य आदि अनिष्ट फल देता है तो उसे अपने गत जीवन के प्रत्येक वर्ष मे जुलाई-अगस्त का समय कैसा गया है, इसका विचार करना चाहिए। किसी वर्ष कोई घटना किसी विशेष प्रभाव के कारण हो सकती है किन्तु यदि मनुष्य अपने जीवन का बीता हुआ काल अध्ययन करके देखे कि प्रतिवर्ष जुलाई-अगस्त का समय उसे अनिष्ट और अशुभ होता है तो भविष्य के लिए भी नतीजा निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिए एक मनुष्य अपने गत २५ वर्ष के जीवन की डायरी (जीवन का हाल या हिसाब) का अवलोकन कर इस नतीजे पर पहुँचता है कि १५ जुलाई से १६ अगस्त के समय मे जो भी उसने व्यापार या सौदा किया उसमें घाटा हुआ तो उसे अवश्य सावधान हो जाना चाहिए कि यह समय उसके लिए प्रतिकूल होता है और भविष्य में कोई बडा काम इस समय न करे। वराह मिहिर ने लिखा है कि 'सविता दशाना पाचयिता'।

इस सिद्धान्त के अनुसार जब सूर्य किसी राशि विशेष मे आता है तब अन्य ग्रहों का फल भी सहसा अनुभूत होता है। वराह मिहिर

के पुत्र पृथुयशस ने भी लिखा है कि जब सूर्य किसी राशिविशेष में आता है तो उस राशि के स्वामी का रुका हुआ फल सहसा प्राप्त होता है।

बहुत से लोग अपने गत जीवन का अध्ययन नही करते, इस कारण भविष्य के लिये भी परिणाम नही निकाल सकते, परन्तु जो अपने जीवन का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन करते हैं वे भविष्य के लिये भी किसी नतीजे पर सफलता-पूर्वक पहुँच सकते हैं। अनेक विद्वानो से इस विषय मे विचार विनिमय करने से हम इसी निश्चय पर पहुँचे है कि जिनकी जन्म-कुण्डली मे कोई राशि अष्टकवर्ग मे बली होती है तथा शुभ-ग्रह से युत दृष्ट होती है उनको वह महीना (जब सूर्य उस राशि में आता है) शुभ जाता है और जिनकी जन्म-कुण्डली मे कोई राशि सूर्याष्टकवर्ग मे निर्बल तथा पापग्रह से दृष्ट-युत या अशुभ सम्बन्ध करने वाली होती है, उस राशि में जब सूर्य आता है तब वह महीना उन्हे अशुभ जाता है। इस सम्बन्ध मे हम भारतीय पार्लिमेन्ट "लोक-सभा" के अध्यक्ष स्वर्गीय श्री मावलकर जी के एक पत्र का उल्लेख किये विना नही रह सकते। इस पत्र मे उन्होने हमको लिखा था कि उन्होने अपने गत जीवन की घटनाओं से यह अनुभव किया है कि फ़रवरी-मार्च तथा नवबर के मास उन्हे विशेष महत्वपूर्ण होते थे।[1]

यह तो हुआ सूर्य, बुध और शुक्र के गोचर का अकज्योतिष से सामञ्जस्य। यदि किसी मनुष्य के जीवन मे २ सख्या शुभ-पद है तो उसको फरवरी (वर्ष का २रा महीना) और नवम्बर (वर्ष

१. इस पत्र के एक भाग का चित्र १८७ पृष्ठ पर दिया गया है।

का ११वा महीना १+१=२) का महीना शुभ जावेगा। ऐसा निश्चय करते समय यदि उस मनुष्य से गत जीवन की घटनाओं का विवरण पूछ कर यह निश्चय कर लिया जावे कि कौन-सा महीना कैसा जाता है तो अंक-ज्योतिष से फलादेश करते समय विशेष सही नतीजे पर पहुँच सकेंगे।

चन्द्रमा

चन्द्रमा २$\frac{1}{4}$ दिन में एक राशि का भ्रमण कर लेता है। चन्द्रमा का अष्टक वर्ग बनाने के लिये ज्योतिष के अधिक ज्ञान की आवश्यकता है। जिस-राशि में चन्द्रमा अधिक शुभ रेखायुक्त हो उस राशि के लोगों से मनुष्य को लाभ होता है और गोचरवश जब चन्द्रमा भ्रमण करता हुआ उस राशि मे आवे वो शुभ फल देता है। यदि किसी कार्य की जून १९५७ मे होने की सम्भावना है और जिस मनुष्य के लिये शुभ फल देखना है उसको ७ का अंक शुभ जाता है तो आप कह सकते हैं कि ७ ता०, १६ ता०, (१+६=७) तथा २५ (२+५=७) तारीख शुभ हैं या शुभ जावेगी। किन्तु यदि उस मनुष्य की जन्म-कुण्डली मे चन्द्राष्टकवर्ग मे कन्याराशि से ७ या ८ शुभ रेखाये हैं तो आप पचाग मे यह देखकर कि ता० ६ तथा ता० ७ जून १९५७ को कन्याराशि मे चन्द्रमा रहेगा—यह निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि ७ ता० का आपका कार्य हो जावेगा। इस प्रकार ग्रह-ज्योतिष का अंक-ज्योतिष से समन्वय करने से तारीख तक निश्चित की जा सकती है। चन्द्रमा दशा का पोषयिता होता है। इसके सम्बन्ध में देखिये, बृहज्जातक सारावली, पाराशरी आदि।

बृहस्पति

पहिले बताया जा चुका है कि बृहस्पति १२ वर्ष में पृथ्वी की

परिक्रमा पूरी कर लेता है। जन्म-राशि मे जब दूसरे, पाचवे, सातवे, नवें, ग्यारहवे बृहस्पति भ्रमणवश आता है तब शुभ फल देता है। इसलिये यदि किसी की जन्मराशि हमे न भी मालूम हो, किन्तु यह मालूम हो कि अमुक वर्ष अच्छा गया है तो हम इस नतीजे पर पहुँच सकते है कि १२ वर्ष बाद जब बृहस्पति भ्रमण करता हुआ उसी स्थान पर आवेगा तब अवश्य शुभ फल देगा। एक दृष्टान्त द्वारा इसे स्पष्ट किया जा रहा है।

एक व्यक्ति की जन्म-राशि 'मीन' है और उसके ७वे वर्ष मे बृहस्पति राशि से प्रथम स्थान पर आया ११वे वर्ष मे पंचम स्थान पर आया १३वे वर्ष मे सप्तम स्थान पर आया और १५वे वर्ष मे नवम स्थान पर आया तथा १७वे वर्ष मे एकादश स्थान पर आया तो उसके जीवन मे निम्नलिखित वर्षों मे फिर बृहस्पति गोचरवश उन्ही स्थानो पर आवेगा।

प्रथम स्थान —७वे, १९वे ३१वे ४३वें,
५५वे, ६७वे, ७९वे, वर्ष मे।

पचम स्थान :—११वे, २३वे, ३५वे, ४७वे
५९वे, ७१वे, ८३वे, वर्ष म।

सप्तम स्थान —१३वे, २५वे, ३७वे, ४९वे
६१वे, ७३वे, ८५वे, वर्ष मे।

नवम स्थान —१५वे, २७वे, ३९वे, ५१वे, ६३वे
७५वे, ८७वे वर्ष मे।

एकादश स्थान :—१७वे, २९वे, ४१वें, ५३वे
६५वे, ७७वे, ८९वे, वर्ष मे।

यदि जन्म की राशि मालूम न हो तो भी १२ वर्ष की परिक्रमा

के आधार पर प्रत्येक जीवन मे ऐसा समय निकाला जा सकता है जब कोई शुभ घटना घटित हुई हो। यदि किसी के जीवन में जो अच्छे वर्ष गये है एक ओर लिखकर उनके आधार पर १२ वर्ष के परिभ्रमण काल के अनुसार शुभ वर्ष निकालने की चेष्टा करे तो सम्भवत. हम इन नतीजे पर पहुँच सके कि किस समय को आधार मानने से उसमे बाद का प्रत्येक १२वाँ वर्ष शुभ जाता है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि बृहस्पति घूमकर करीब १२ वर्ष मे उसी राशि पर आता है—बिल्कुल ठीक १२ वर्ष मे नही। वक्री होने से कभी-कभी एक वर्ष मे तीन राशियो मे आगे पीछे घूमता रहता है। जैसे १९५७ में मार्च तक बृहस्पति कन्या मे रहा फिर वक्री होकर सिह राशि में चला गया, २० जून १९५७ को फिर वापिस कन्या मे चला आवेगा और नवम्बर मे तुला मे चला जावेगा। इसलिये जब ७वाँ, १९वाँ, ३१ वाँ आदि प्रत्येक १२ वर्ष के काल का निर्देश करते हैं तब इस वर्ष को न तो अपनी जन्म-तिथि से आगामी जन्म तिथि तक लेना चाहिये और न १ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक। प्रत्येक १२वे वर्ष का एक मोटा अन्दाज है। अब मान लीजिये आप किसी आदमी के गत जीवन काल की घटनाओ से इस अनुमान पर पहुँचे कि उसके जीवन का १३वाँ, २५वाँ,३ ७वाँ, ४९वाँ वर्ष विशेष भाग्योदय का था और अक-ज्योतिष से उसकी अँग्रेजी की जन्म-तारीख़ के अंको का योग २ होता है तो ऊपर के बृहस्पति भ्रमण के विचार से ४९ मे १२ जोड़े तो ६१ वां वर्ष शुभ आया और अक-ज्योतिष के अनुसार २ अंक वाले व्यक्ति को ७ का अक भी शुभ जाता है। यह जानने से आपके पास आये हुए व्यक्ति की आयु का यदि ६१वाँ वर्ष चल रहा है और वह कहता है कि ६१वे वर्ष मे

अब तक कोई भाग्योदय का कार्य नही हुआ तो आप गुरु के भ्रमण के आधार पर—ग्रह-ज्योतिष का सामञ्जस्य कर निश्चयपूर्वक, ज़ोर देकर कह सकते हैं कि "६१ वाँ वर्ष कथमपि कथमपि खाली नही जा सकता" ।

ऊपर बृहस्पति के भ्रमण का एक आधार है। दूसरा एक कारण और है जिसके कारण प्रत्येक १२वा वर्ष एक-सा जाता है । सुदर्शन चक्र बनाकर उसको घुमाने से प्रत्येक वर्ष का फलादेश करने का ज्योतिष शास्त्र मे विधान है । सुदर्शन चक्र के अनुसार प्रत्येक १२वे वर्ष का विचार उसी स्थान से किया जाता है । इसके विशेष विवरण के लिये ज्योतिष के ग्रन्थ देखने चाहिये ।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक १२वाँ वर्ष किसी अश मे भाग्योदयादि के विचार से एक सा जाता है, यह सर्वाष्टक वर्ग से भी फलादेश का एक प्रकार है। जन्म पत्रिका विधान मे लिखा है कि यदि सर्वाष्टक वर्ग में किसी भाव मे १४ या १५ रेखा हो और उस भाव मे क्रूर-ग्रह भी हो तो उस वर्ष मरण होता है [१] कुल १६ रेखा हो तो अग पीडा और शरीर मे महाव्याधि होती है। कुल रेखा १७ हो तो नाश। १८ हो तो धन-क्षय, १९ रेखा हो तो बान्धव पीडा और कुमति। २० रेखा हो तो व्यय और कलह । २१ रेखा हो तो हृदय में घोर दुःख । २२ रेखा हो तो दैन्य और पराभव—इस प्रकार २८ रेखा तक अशुभ फल लिखा है और २८ के बाद शुभ फल । २९ रेखा हो तो लोक मे सम्मान वृद्धि । ३० रेखा हों तो नवीन पद-प्राप्ति और मान, ३१ रेखा हो तो द्रव्यागमन और विशेष

---

१. देखिए जन्म-पत्रिका विधान पृष्ठ ३६ ।

आय इत्यादि। इसके लेखक लिखते है कि मान लीजिए प्रथम-भाव में सर्वाष्टकवर्ग मे ३१ रेखा पड़ी तो १ ले, १३वें, २५वे, ३७वे ४६वे, ६१वे, ७३वे वर्ष में सौख्य और द्रव्यागमन होगा। जन्म-कुण्डली के १२ भावों से इस प्रकार आगामी सब वर्षों का विचार किया जाता है और प्रत्येक १२वॉ वर्ष एकसा जाना चाहिए।

एक अन्य कारण और भी है जिससे प्रत्येक १२वे वर्ष मे कुछ समानता होती है। "सकेत निधि"[१] के निर्माता श्री रामदयालु जी ने तथा यवन ज्योतिष शास्त्र के आधार पर निर्मित "मनुष्य-जातक"[२] मे लिखा है कि जन्म-कुण्डली के जिस भाव मे क्रूर ग्रह हो उस वर्ष मे पीडा होगी। उदाहरण के लिए किसी के नवम स्थान मे शनि और राहु है तो इसको ९, २१, ३३, ४५ और ५७ व वर्ष मे पीड़ा होगी। पूर्व भारतीय प्रणाली यह थी कि प्रत्येक भाव को एक एक वर्ष मानकर भविष्य फल कथन किया जाता था। कुछ अगरेज ज्योतिषियों[३] ने भी इस क्रम को अपनाया है। अतः अंक-ज्योतिष का और १२ वर्ष के भ्रमण काल का समन्वय करने से फलादेश बहुत कुछ ठीक बैठता है।

शनि

शनि को एक राशि मे २½ वर्ष का समय लगता है और पृथ्वी की पूरी परिक्रमा करने मे ३० वर्ष। वास्तव में यह समय २९ वर्ष और कुछ महीने होता है। जन्म-कुण्डली में जिस स्थान पर शनि

---

१. देखिए सप्तम संकेत, श्लोक ७

२. मनुष्यजातक, दशमाधिकार, श्लोक ५।

३. How To Use And Understand Astrological Predictive Systems by Dal Lee.

अशुभ फल देता है उससे जब ९०-९० अश पर आवेगा तब भी अशुभ फल ही देगा। इस ९० अश को चलने मे उसे करीब ७½ वर्ष का समय लगता है। इसलिए गत-जीवन मे जो अनिष्ट समय था, प्राय उसमे साढे सात वर्ष बाद, १५ वर्ष बाद, २२½ वर्ष बाद और ३० वर्ष बाद शनि कष्ट देता है। २९½वे या ३०वें वर्ष बाद तो शनि फिर घूमकर उसी बिन्दु पर आ जाता है। इस कारण अनिष्ट फल कहते समय या पीडा का काल-निर्देश करते समय अक ज्योतिष का, शनिश्चर की परिक्रमा काल से सामञ्जस्य कर लेना उचित है।

एक कारण और है जिसके कारण प्रति ७वाँ वर्ष एक-सा जाता है। इस सम्बन्ध मे चन्द्रमा के परिभ्रमण को 'सकेत निधि'[1] के निर्माता श्री रामदयालु जी ने महत्व दिया है और अगरेज़ी ज्योतिष मे तो चन्द्रमा के भ्रमण को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म-स्थानीय चन्द्रमा २८ दिन मे १२ राशियो का घेरा पार कर अपने स्थान पर आ जाता है। मार्ग मे जब वह अशुभ ग्रहो मे सम्बन्ध करता है तो अशुभ फल देता है। शुभ ग्रहो से सम्बन्ध करता है तो शुभ फल देता है। अब मान लीजिए किसी स्थान पर उसने अशुभ फल किया तो ९० अश चलने पर उस स्थान से चतुर्थ आ जावेगा। जिस प्रकार ताजिक मे चतुर्थ, सप्तम, दशम अशुभ दृष्टि समझी जाती है उसी प्रकार अगरेज़ी ज्योतिष मे नियम है। इस पद्धति मे चन्द्रमा के प्रथम दिन के परिभ्रमण का प्रभाव जीवन के पहिले वर्ष मे होता है। दूसरे दिन के भ्रमण का प्रभाव जीवन

१ देखिए सकेत निधि—सकेत ७ श्लोक १०-११।

के दूसरे वर्ष पर। यह बहुत लम्बा और गहन विषय है; जिनको इसमे विशेप दिलचस्पी हो उन्हे अगरेजी ज्योतिष की पुस्तकें पढनी चाहिए। यहाँ केवल यह निष्कर्ष दिया जाता है कि —

१. जो वर्ष अशुभ गया है उसके ७-७ वर्ष के वाद का काल अशुभ जायगा। उदाहरण के लिए तीसरा वर्ष पीडा-कारक है तो ३रा, १०वॉ, १७वाँ, २४वॉ, ३१वॉ, ३८वॉ, ४५वॉ, ५२वाँ, ५९वॉ आदि वर्ष अशुभ जावेगे।

२ जो वर्ष शुभ गया है उससे नवाँ शुभ जावेगा। यदि पहला वर्ष शुभ है तो १०वाँ, १९वॉ, २८वॉ, ३७वॉ, ४६वॉ—इस प्रकार प्रत्येक नवॉ वर्ष शुभ जावेगा।

राहु और केतु

राहु और केतु १८ वर्ष में पूरा परिभ्रमण कर लेते है। इसलिए जहॉ पर इन्होने गोचर द्वारा शुभ फल दिया हो उससे १८वे वर्ष में यदि उसी प्रकार के फल का अनुभव तो उस आधार पर निश्चय किया जा सकता है कि भविष्य के १८वे वर्ष मे भी उसी प्रकार का अनुभव होगा।

३६ वर्ष का परिभ्रमण—ऊपर कई मतो से वताया जा चुका है कि प्रत्येक १२वॉ तथा प्रत्येक ९वा वर्ष एक-सा जाता है। १२ और ९ का लघुतम ३६ होता है इस कारण प्रत्येक ३६ वर्ष के बाद के वर्षों में समानता होनी चाहिए।

१ ला, ३७वॉ ७३वाँ एक सा
२ रा, ३८वॉ, ७४वॉ ,, ,,
३ रा, ३९वाँ, ७५वॉ ,, ,,
४ था, ४०वॉ, ७६वॉ ,, ,, इत्यादि

यदि किसी व्यक्ति की हम कुण्डली, केतु-कुण्डली तथा बृहस्पति कुण्डली बनावे तो उस वर्ष का शुभाशुभ निकल सकता है। पाप-सयोग होने से उस वर्ष वहुत कष्ट होता है। लिखा है—

"पताकी कुण्डली केतोः कुण्डली च बृहस्पते ।
सर्वत्र पापसयोगे संशयो जायते महान् ॥[१]

इसके अनुसार ३६ वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति का भविष्य निश्चित करना हो तो ३६ वर्ष पहले कैसा समय बीता था इसका अन्वेषण करना चाहिए। उदाहरण के लिए एक मनुष्य की जन्म-तारीख, जन्म-महीना आदि कुछ भी मालूम नही है। उसके जीवन का ४८वाँ वर्ष जा रहा है, वह बडे कष्ट मे है, भविष्य जानना चाहता है। आप उससे पूछते है कि ४८—३६=१२, उसके जीवन का १२वाँ वर्ष कैसा गया है ? वह कहता है कि १२वाँ वर्ष तो बडे कष्ट का बीता किन्तु १३वे वर्ष मे सब कष्ट दूर हो गए और भाग्योदय हो गया, तो आप विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ४९वाँ वर्ष अच्छा जावेगा।

ताजिक द्वारा वर्षफल तथा अंक-ज्योतिष का सामञ्जस्य

यदि किसी का वर्ष प्रवेश जून या जुलाई मे होता है तो 'वर्ष प्रवेश कुण्डली' का फल आगामी जून या जुलाई तक रहेगा। किन्तु अंक-विद्या के सामञ्जस्य से यह निश्चय किया जा सकता है कि १९५७ अच्छा होगा या १९५८ ?

ऊपर जो अनेक प्रकार से ग्रह-ज्योतिष और अक-ज्योतिष का सामञ्जस्य बताया गया है इससे ज्योतिष के विद्वान् तो विशेष लाभ उठावेंगे ही किन्तु साधारण पाठक भी अपने गत जीवन की घटनाओ के आधार पर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

---

१. जन्म पत्रिका विधान—पृष्ठ १८८।

९वाँ प्रकरण

'अंकों' से प्रश्न विचार

भारतीय मत

प्रश्न के विषय में यद्यपि ज्यौतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथ हैं[१] तथापि 'अंकों' या 'संख्या' से प्रश्न विचार, केरल देश मे अधिक प्रचलित होने के कारण, इस शास्त्र को 'केरलीय' भी कहते हैं।

केरल प्रश्न संग्रह में लिखा है कि प्रश्न सम्बन्धी जिस वाक्य का प्रश्नकर्त्ता उच्चारण करे—उस वाक्य मे जो-जो अक्षर आवे उनकी सख्या को जोडले। किन्तु यदि वाक्य बहुत लम्बा हो अथवा अस्पष्ट हो तो प्रश्नकर्त्ता यदि ब्राह्मण हो तो उससे किसी पुष्प का नाम, क्षत्रिय हो तो किसी नदी का नाम, वैश्य हो तो किसी देवता का नाम और यदि शूद्र हो तो उससे किसी 'फल' का नाम लेने को कहे। किन्तु 'प्रश्न चूडामणि' में लिखा है कि कोई भी प्रातः काल प्रश्न करे तो किसी बालक से कहे कि किसी 'वृक्ष' का नाम लो। यदि मध्याह्न काल हो तो किसी युवा पुरुष से किसी 'पुष्प' का नाम ग्रहण करने को कहे। यदि तीसरे पहर कोई प्रश्न करे तो किसी वृद्ध से किसी 'फल' का नाम लेने को कहे। अस्तु। हमारे विचार से प्रश्नकर्त्ता से ही कहना चाहिये कि अपना प्रश्न हिन्दी मे थोड़े अक्षरो मे लिख दीजिये या किसी पुष्प या फल का नाम लिख

---

१. केरल प्रश्न सग्रह, केरलीय प्रश्नरत्न, प्रश्न चूड़ा मणि। आदि।

दीजिये। जिन अक्षरो को प्रश्नकर्त्ता लिखे उनकी सख्या निम्नलिखित नियमानुसार बनाना चाहिये :

अ	१२	ए	१८
आ	२१	ऐ	३२
इ	११	ओ	२५
ई	१८	औ	१६
उ	१५	अ	२५
ऊ	२२		

यह तो स्वरो की सख्या हुई। यदि 'ऋ' का प्रयोग करे तो उसे 'रि' की भाँति (र्+इ) माने। लृ लृ तथा अ का प्रयोग भाषा मे नही होना इस कारण उन अंक्षरो की सख्या नही लिखी गई है। अब व्यजनो की सख्या लिखी जाती है —

क्	१३	ट्	१०	प्	२७	ष्	३५
ख्	११	ठ्	१३	फ्	१८	स्	३५
ग्	२१	ड्	२२	ब्	२६	ह्	१२
घ्	३०	ढ्	३५	भ्	२७		
ङ्	१०	ण्	४५	म्	८६		
च्	१५	त्	१४	य्	१६		
छ्	२१	थ्	१८	र्	१३		
ज्	२३	द्	१७	ल्	१३		
झ्	२६	ध्	१३	व्	३५		
ञ्	२६	न्	३५	श्	२६		

मान लीजिये किसी ने लिखा 'गुलाब', तो पहिले इस शब्द के स्वर और व्यञ्जन अलग-अलग कर लिखे।

टिप्पणी : एक मतानसार 'प' की संख्या २८ है।

ग्+उ+ल्+आ+ब्+अ

२१+१५+१३+२१+२६+१२=१०८

इन प्रत्येक स्वर तथा व्यञ्जन के नीचे उस स्वर या व्यञ्जन की जो सख्या दी गई है वह लिखनी चाहिये और सब संख्याओं को जोडकर उस शब्द (यथा 'गुलाब') का पिड बनाना चाहिये। ऊपर सब सख्याओं का योग १०८ आया। अब इस सख्या पिड से प्रश्न का उत्तर कैसे देना यह बताया जाता है।

शास्त्रकारो ने प्रश्नों को अनेक भागों में विभाजित किया है। यहाँ केवल मुख्य-मुख्य विपय के प्रश्नो के सम्बन्ध में कुछ नियम बताये जाते हैं।

(१) लाभ-अलाभ प्रश्न (द्रव्य का लाभ या हानि)

(२) जय-पराजय प्रश्न (हार या जीत)

(३) सुख दु.ख प्रश्न

(४) गमन प्रश्न (जाने के विषय मे प्रश्न)

(५) जीवन मरण प्रश्न

(६) गर्भ विचार (गर्भ है या नही)

(७) तेजी-मन्दी प्रश्न

(८) विवाह प्रश्न

(९) पुत्र कन्या जन्म प्रश्न

अब क्रमश इनका उत्तर देने की विधि बतलाई जाती है। हम नीचे उदाहरणो में 'गुलाब' का उदाहरण दे रहे हैं।[1]

---

१. वास्तव में जब प्रश्न कर्त्ता प्रश्न करे तब प्रश्न के अक्षरों का जो संख्या पिड आवे या जिस फल या पुष्प का नाम ले उसका जो संख्या-पिड आवे— उसके आधार पर उत्तर कहना चाहिये।

(१) मान लीजिये किसी ने लाभ या हानि सम्बन्धी प्रश्न किया और 'गुलाब' का नाम लिखा। तो, १०८ प्रश्न का सख्या-पिंड हुआ। इसमें ४२ जोड कर ३ से भाग देना चाहिये। यदि १ बचे तो लाभ, २ बचे तो थोडा लाभ। यदि शून्य बचे तो हानि।

उपर्युक्त 'गुलाब' के उदाहरण मे १०८ में ४२ जोड़े तो हुए १५०। तीन भाग देने से शेष ० बचा। इसलिये उत्तर देना चाहिये कि इस कार्य मे लाभ नही होगा बल्कि हानि होगी।

(२) यदि कोई हार-जीत सम्बन्धी प्रश्न करे तो प्रश्न का जो सख्यापिंड हो उसमे ३४ जोड कर ३ का भाग देना चाहिये। यदि १ शेष बचे तो 'जय'। यदि २ शेष बचे तो सधि। यदि ० शेष बचे तो पराजय।

उदाहरण के लिये प्रश्नपिंड १०८ है। इसमे ३४ जोडने से १४२ हुए। इसमे ३ का भाग दिया तो १ शेष बचा। इसलिये उत्तर हुआ 'जीत' होगी।

(३) यदि सुख-दु ख-विषयक प्रश्न हो तो प्रश्न का जो संख्या-पिंड हो उसमे ३८ जोडकर २ से भाग देना चाहिये। यदि शेष १ बचे तो सुख। यदि ० बचे तो दु ख।

उदाहरण—प्रश्नकर्त्ता यह जानना चाहता है कि उसके जीवन के आगे के २ वर्ष दु खमय जावेगे या सुखमय। उससे किसी पुष्प का नाम लेने को कहिये। उसने कहा 'चमेली'। अब 'चमेली' का सख्या-पिंड बनाया—

च्+अ+म्+ए+ल्+ई

१५+१२+८६+१८+१३+१८=१६२

इस '१६२' के सख्या-पिंड मे ३८ जोडने से २०० हुए। इस

२०० में २ का भाग दिया तो शेष ० बचा। इस कारण उत्तर देना चाहिये कि अग्रिम २ वर्ष दुःखमय बीतेंगे।

(४) यदि गमन (जाऊंगा या नही ?) प्रश्न हो तो प्रश्न-पिंड में ३३ जोड़कर ३ से भाग देना चाहिये। १ शेष बचे तो 'जाना' होगा। २ शेष हो तो 'जाना' नही होगा। ० शेष हो तो यात्रा तो होगी परन्तु बीच से ही लौट आना होगा।

उदाहरण : किसी का प्रश्न है कि कलकत्ता जावेगा या नहीं ? उससे किसी पुष्प का नाम लेने को कहिये। उसने कहा 'चमेली'। ऊपर बताया जा चुका है कि 'चमेली के अक्षरों का संख्या-पिड १६२ होता है। इसमे ३३ जोड़े तो १९५ हुए। इसमे ३ का भाग दिया तो ० शेष बचा। इस कारण उत्तर देना चाहिये कि असफलयात्राहोगी

(५) यदि कोई व्यक्ति बीमार हो या मृत्यु की सम्भावना हो और प्रश्न किया जावे कि जीवन रहेगा या नही तो प्रश्न पिंड में ४० जोड़कर उसे भाग देना चाहुिये। शेष १ बचे तो जीवन रहेगा। २ शेष रहे तो कष्टसाध्य जीवन रहेगा—अर्थात् बहुत कष्ट होगा किंतु जीवन बच जावेगा। यदि ० शेष रहे तो मृत्यु हो जावेगी। उदाहरण के लिये यदि जीवन-मरण सम्बन्धी प्रश्न हो और किसी पुष्प का नाम लेने के लिये कहा तो उसने कहा 'चम्पा'। 'चम्पा' के अक्षरों का संख्या-पिंड निम्नलिखित प्रकार से बनाया तो सख्या पिंड १६१ हुआ।

च्+अ+म्+प्+आ

१५+१२+८६+२७+२१=१६१

इसमें ४० जोड़ने से २०१ की सख्या हुई। ३ से भाग दने से ० शेष रहा। इस कारण उत्तर देना चाहिए कि जीवित रहने की

बहुत कम आशा है। वास्तव मे ० शेष रहने से उत्तर तो मृत्यु हुआ। परन्तु ज्योतिषी को उचित है कि अशुभ वाणी न निकाले। प्रकारान्तर से उत्तर दे।

(६) गर्भसम्बन्धी प्रश्न हो कि गर्भ है या नही तो किसी फल या पुष्प का नाम लेने को कहे। उसका जो सख्यापिंड हो उसमे २६ जोडकर ३ से भाग दे। १ शेप रहे तो गर्भ है। २ शेष रहे तो सन्देह है—ऐसा कहे। तीन शेप रहे तो गर्भ नही है यह कहना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी ने कहा 'चम्पा'। चम्पा का संख्यापिंड १६१ है। इसमे २६ जोडने से १८७ हुए। ३ का भाग देने से १ शेप रहा। इस कारण उत्तर हुआ कि गर्भ है।

यहाँ पर शका हो सकती है कि चम्पा की सख्यापिंड बनाते समय यदि,

च्+अ+म्+प्+आ इस प्रकार लिखते हैं तो

सख्या पिंड १६१ होता है किन्तु यदि,

च्+अं+प्+आ

१५+२५+२७+२१=८८

इस प्रकार लिखा जावे तो सख्यापिंड ८८ ही हुआ। तब किस प्रकार सख्यापिड बनाना उचित है। इसका समाधान यही है कि प्रश्नकर्ता से कहे कि कागज़ पर वह लिख दे। 'चपा' या 'चम्पा' जैसा वह लिखे उसी के आधार पर प्रश्नपिंड बनाना उचित है।

(७) यदि तेज़ी-मन्दो सम्बन्धी प्रश्न हो तो किसी फल या पुष्प का नाम लेने को कहे। उसके वाद उपर्युक्त नियमानुसार प्रश्नकर्ता के कहे हुए पुष्प या फल का सख्यापिंड बनावे। उस संख्यापिंड मे ३ का भाग दे। १ बचे तो मन्दी (माल सस्ता होगा

दाम गिरेंगे)। २ शेष बचे तो भाव करीब-करीब उतने ही रहेंगे। यदि ० शेष बचे तो तेजी अर्थात बाज़ार ऊँचा जावेगा—दाम बढेंगे। उदाहरण के लिए प्रश्नकर्ता ने कहा 'गुलाब'। 'गुलाब' का संख्या-पिंड १०८ होता है, यह ऊपर वताया जा चुका है। इस १०८ में ३ का भाग देने से ० शेष रहा। इस कारण उत्तर देना चाहिए कि तेजी होगी—बाज़ार ऊँचा जावेगा।

(८) यदि पुत्र होगा या कन्या—इस विपय का प्रश्न हो तो प्रश्न पिंड मे ३ का भाग देना। शेष १ बचे तो पुत्र। २ शेष बचे तो कन्या। ० बचे तो गर्भस्राव होगा।

उदाहरण के लिए किसी ने इस विपय का प्रश्न किया। उससे कहा कि 'आप किसी पुष्प का नाम लिखिए तो उसने लिखा 'चपा'—ऊपर वताया जा चुका है कि 'चपा' का संख्या पिंड ८८ हुआ। इसमें तीन का भाग देने से १ शेप वचा। इस कारण उत्तर हुआ—'पुत्र' होगा।

(९) अक्षरों से सख्यापिड बनाना एक प्रकार है। दूसरा प्रकार है कि किसी कागज पर संख्या ही लिखवा लीजावे और उसी संख्या-पिंड से विचार किया जावे। विशेष जिज्ञासु पाठकों को इस विपय के विस्तृत ग्रंथ केरलीय प्रश्न रत्न आदि देखने चाहिए[1]।

पाश्चात्य मत

वैसे तो पाश्चात्य मत बहुत प्रकार के हैं और मूक प्रश्न आदि के नियम आगे पृथक् दिये गये है किन्तु साधारण नियम यह है कि प्रश्न-कर्ता से कहे कि वह कोई एक शब्द कागज़ पर लिख दे। उस शब्द से जो अंगरेज़ी वर्णमाला के अक्षर आवे उनका

१. केरलीय प्रश्नरत्नम् पृष्ठ ४५-१३८

'सयुक्ताक' बनाले। जैसे नाम का सयुक्ताक बनाने की पद्धति ५वे प्रकरण मे दी गई है उसी प्रकार जो शब्द प्रश्नकर्ता लिखे उस शब्द का सयुक्ताक बनाले और जो शब्दपिंड (सख्या) आवे उसके शुभाशुभ फलानुसार (देखिए ५वाँ प्रकरण जहाँ १० से लेकर ७० तक के सख्यापिंड का विवरण दिया गया है) उत्तर दे।

अंकों से मूक प्रश्न ज्ञान

"सेफेरियल" नामक प्रसिद्ध अगरेज़ ज्यौतिषी ने अपनी अंक ज्योतिष की पुस्तक[1] मे अको से मूक प्रश्न बनाने का जिक्र किया है और जिस दसवे प्रकरण मे इसका विवेचन किया है, उस प्रकरण का नाम रक्खा है "अक विद्या से मूक प्रश्न बताना—हिन्दू शास्त्रानुसार।" स्वभावत हमे जिज्ञासा हुई कि 'सेफेरियल' ने हिन्दू-ज्योतिष के किस ग्रंथ मे से उपर्युक्त विषय लिया है। किन्तु बहुत अनुसधान करने पर भी हमे अपने सस्कृत साहित्य मे उस ग्रन्थ रत्न का पता न लग सका। विदेशियो के निरन्तर आक्रमणो से हमारी सस्कृति जर्जरित हो गई और हमारे कितने ही अमूल्य ग्रथ सर्वदा को काल कवलित हो गये। अब भी जर्मन और इगलैण्ड के सग्रहालयो मे तथा नैपाल और तिब्बत मे प्राचीन भारतीय सस्कृति और विद्या समृद्धि के परिचायक कितने ही ऐसे ग्रथ मिलते है—जो भारत मे उपलब्ध नही। अत पाठको के लाभार्थ अक-ज्यौतिप द्वारा मूक प्रश्न बताने की विधि दी जाती है।

परन्तु "मूक प्रश्न" के सम्बन्ध मे एक विशेष बात ध्यान मे

---

१. The Kabala of Numbers by Scpharial Published by Rider & Co. London.

रखनी चाहिए। मूक प्रश्न एक प्रकार से दूसरे के विचार को जान लेना है। इसके लिए स्वय अपनी मानसिक शक्ति और आत्मिक शक्ति बहुत प्रबल होना आवश्यक है। सूई से कपडा सिलता है। परन्तु सीना भी तो आना चाहिए। अग्नि से भोजन बनता है। किन्तु जो भोजन बनाने की कला से अनभिज्ञ है वह क्या करेगा? प्रश्न मे—मानसिक शक्ति की तीव्रता और चित्त की सात्विकता—यह दो गुण परमावश्यक है। जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अच्छा गायक नही हो सकता——वाणी का सौष्ठव और गले की मिठास ईश्वरीय देन होते है उसी प्रकार मूक-प्रश्न आदि विद्या में सब सफल नही हो सकते। जिनमे 'अतीन्द्रिय ज्ञान' विशेष मात्रा मे होता है वे ही मूक प्रश्न बताने मे सफल हो सकते हैं।

प्रश्न करने वाले से कहिये कि नौ अंक लिख दे। इनको जोड़िये और योग मे सदैव ३ जोड़ दीजिये।

उदाहरण के लिए प्रश्नकर्ता ने लिखा—

९८५६२७१४२=४४
सदैव जोड़िए ३
योग— ४७

इस '४७' संख्या के अनुसार नीचे जो उत्तर आवेगा—मूक प्रश्न का उत्तर होगा। यदि कोई ९ बार केवल ० लिखे तो

०००००००००=०
सदैव जोडिए= ३
योग ३

योग ३ होगा। सबसे बड़ी सख्या तब बनेगी जब कोई ९ बार ९ लिखदे।

९९९९९९९९९=८१
सदैव जोडिए ३
योग ८४

इसलिए सबसे बडी सख्या ८४ होगी। इसलिए ३ से लेकर ८४ तक की सख्याओ का फल नीचे दिया जाता है।

(३) आप किसी बीमारी, बुख़ार, रोग या क्रोध की व्यक्तिगत बात सोच रहे हैं।

(४) किसी कौटुम्बिक विषय मे—प्रेम या आनन्ददायक विषय मे जिससे हृदय का बहुत सम्बन्ध है—या जिसकी तीव्र इच्छा आपके मन मे हैं।

(५) विवाह के विषय मे—या किसी इकरारनामे या साझेदारी के विषय मे या किन्ही दो वस्तुओ या व्यक्तियो के मिलने के विषय मे।

(६) किसी समाचार या ख़बर के विषय मे, यात्रा भाई या किसी सवारी या डाक से आने वाली वस्तु के विषय मे।

(७) मकान या ज़मीन के विषय मे या भूमि के नीचे की वस्तु के विषय मे, समुद्र, जलराशि, परिवर्तन या स्थानपरिवर्तन आदि के विषय मे।

(८) विदेशी या प्राचीन वस्तु के विषय मे।

(९) मृत्यु से सम्बन्धित या घाटे के विषय मे। कोई गलत इकरार नामा हो गया है और वह कैसे ठीक हो ?

(१०) कोई कष्टदायक सम्बन्ध हो गया है या कोई ऐसा इकरार नामा जिससे हानि की सभावना है या झगड़े के विषय मे।

(११) किसी खान, जायदाद या उसके मूल्य के विषय में।

(१२) खुशनुमा वातावरण, कोई जलसा या उत्सव, आराम की चीज़ें बढ़िया कपड़े।

(१३) द्रव्य के सम्बन्ध में, सट्टे या लाभ के विषय मे।

(१४) किसी स्त्री-सम्बन्धी के विषय मे (लड़की, बहिन आदि) नदी या समुद्र के उस पार से जाने वाले किसी संवाद के विषय में या किसी यात्रा के विपय मे।

(१५) किसी मृत्यु या दु:खदायी समाचार के सम्बन्ध में या किसी अन्य कष्ट के समाचार या घाटे के विषय मे।

(१६) किसी अच्छे या शुभ समाचार के विपय में, किसी लाभदायक सम्पर्क, पत्नी या किसी अच्छे इकरारनामे या वातचीत के विषय मे।

(१७) किसी रोग, तकलीफ़ या नौकर या अपने समीप की किसी वस्तु के विषय में।

(१८) किसी हर्षदायक यात्रा के विषय में, प्रेम, हर्ष, भाई या इच्छित सन्देश प्राप्ति किंवा सुवर्ण या कौटुम्बिक बात के विषय मे।

(१९) किसी चीज की रुकावट, जेल, एकान्तवास, अस्पताल मे रहना अथवा बच्चे के विषय में।

(२०) किसी यात्रा या पत्र के विषय मे, किसी से पत्र-व्यवहार या वस्तु के लाने-ले जाने के विपय मे—रास्ते से सम्बन्धित प्रश्न।

(२१) लाभ के विषय मे—कुछ आर्थिक लाभ, जो वस्तु कब्जे मे हो सफ़ेद या चाँदी की चीज।

(२२) किसी ऐसे विवाह के विषय मे जो इच्छा के प्रतिकूल या दुष्परिणामयुक्त हो—किसी बीमार साझीदार या पति या

पत्नी के विषय मे—किसी शत्रु या प्रतियोगी की बाबत अथवा कठिनाइयो या प्रतिकूल इकरारनामे के सम्बन्ध मे ।

(२३) सुसम्पन्न स्थिति में रहने के विषय मे, अच्छे कपडे, उत्तम भोजन, स्वामिभक्त नौकरो के विषय मे, अच्छे पद, स्वास्थ्य तथा आराम के सम्बन्ध मे ।

(२४) किसी स्थिति की डाँवाडोल हालत के विषय मे—किसी कौटुम्बिक कलह की बाबत—किसी ऐसे नवीन कार्य की आयोजना के विषय में जिसमे बहुत कठिनाइयाँ तथा विषमता उपस्थित हो रही हो—बच्चो के विषय में या गुप्त प्रेम के सम्बन्ध मे ।

(२५) बहुत लाभ के विषय में, बहुत धन, सोना, सूर्य या किसी चमकीली वस्तु की बाबत ।

(२६) शान्तिपूर्ण अधिकार के विषय मे, अच्छी जायदाद, मकान, बुनियाद या समतल भूमि की बाबत ।

(२७) किसी बन्द कमरे या जगह की बाबत—नाव द्वारा छोटी यात्रा । भाई या किसी सम्बन्धी के विषय में, किसी पत्र या सन्देशा लाने वाले की बाबत ।

(२८) अपनी कल्पना के विषय मे—सफेद कपडा, प्याला या चाँदी की चीज—नवीन (शुक्लपक्ष की प्रारम्भिक तिथियो के) चन्द्रमा के विषय मे ।

(२९) अस्वास्थ्य के विषय मे—गरीबी और कठिनाइयो की परिस्थिति के विषय मे, खून फसाद या बीमारी की बाबत ।

(३०) प्रसन्न बच्चो के विषय में, आनन्ददायक अनुभव, सयोग, किसी विरासत या दहेज़ द्वारा प्राप्त धन के विषय में ।

(३१) जमीन के नीचे (भूगर्भ में स्थिति) वस्तु के विषय मे, मकान में स्थित सर्प, बिच्छू या अन्य जानवर या विदेश की बाबत।

(३२) किसी बादशाह या सरकार या सुवर्ण सम्बन्धित या अपने स्वयं के व्यक्तित्व या कार्य के बारे मे ।

(३३) एक प्रसन्न दायक समाचार के विषय मे, अच्छा पद या स्थिति भाई या किसी अन्य विशिष्ट उपलब्धि की बाबत ।

(३४) आर्थिक लाभ से सम्बन्धित, भोजन या अन्य आवश्यक पदार्थ, अन्न या अन्य लाभ।

(३५) किसी स्त्री के विषय मे, जन्म की बाबत —किसी गुप्तयोजना या कार्यवाही से सम्बन्धित—अपनी किसी गुप्त बात की या एकान्तवास की बाबत ।

(३६) सट्टे या रोज़गार मे हानि, बीमार· बच्चा, दु खदायक कौटुम्बिक स्थिति दुःख और कष्ट की बाबत ।

(३७) किसी ऐसे इकरारनामे के विषय मे जिसका परिणाम अच्छा न हुआ हो—किसी विवाह के विषय मे जिससे खुशी हासिल न हुई हो—मकान, जायदाद या अस्तबल की बाबत ।

(३८) बुख़ार—मलेरिया या मोतीभरा से सम्बन्धित शारीरिक कष्ट या मृत्यु—यात्रा अथवा सवाद—किसी समीप के तालाब या जलाशय की बाबत, बहिन के विषय मे ।

(३९) किसी बन्द जगह या मन्दिर के विषय मे—राजभवन या चमकीले मकान (सिनेमा) आदि से सम्बन्धित किंवा बाहर जाने—निष्कासन आदि के विषय मे ।

(४०) अन्न के मूल्य,बहुमूल्य वस्तु, जवाहरात, ज़ेवर, पहिनने के वस्त्र या द्रव्य विषयक ।

अपने स्वय के या अपनी पोशाक, भोजन, स्थिति, नेकनामी, बदनामी, साख या प्रतिष्ठा के बारे मे।

(४२) किसी मित्र या उच्च पद की स्त्री के विषय में, किसी उच्च पदाधिकारिणी की कृपा के सम्बन्ध मे—किसी जन समूह की बाबत।

(४३) मौरूसी जायदाद के विषय मे, पुरानी इमारत, श्मशान, खान की वस्तुओ की बाबत या किसी वृद्ध के विषय मे।

(४४) भाई के विषय मे, स्वास्थ्य, आराम की वस्तु, शौकीनी, धार्मिक ग्रथ, शास्त्र सम्बन्धी या समुद्र पार अथवा दूर से आने वाले पत्र के विषय मे।

(४५) विवाह के विषय मे—लाभ या हानि सम्बन्धी प्रश्न। धोखा, पक्षपात, असमानता या किसी छोटे मूल्य की वस्तु के विषय में।

(४६) किसी मित्र या उच्च पदाधिकारी के विषय मे—सोने की वस्तु, अगूठी, जवाहरात या बहुमूल्य वस्तु के विषय मे।

(४७) स्वय के विषय मे न्याय-इन्साफ-मुकदमें के बारे मे, नाप तोल, सतोष, आराम, शाति, मृत्यु के विषय मे।

(४८) पोशाक-गृह, मकान की किसी अन्दरूनी जगह की बाबत। किसी छिपे हुए नौकर के विषय में—किसी स्त्री के स्वास्थ्य के विषय मे या दूर से आने वाले संवाद के विषय मे।

(४९) पद-परिवर्तन के विषय में, अपनी माता या किसी विशिष्ट वस्तु की बाबत—किसी रानी या उच्च पदाधिकारिणी महिला के विषय मे।

(५०) किसी कष्टदायक यात्रा के विषय में—कष्ट में पड़ी हुई किसी

बहिन के विषय में—किसी बुलाहट या दुःखद समाचार के विषय मे।

(५१) लाभ या आर्थिक प्रचुरता के विषय मे। किसी शर्त, सट्टा, लॉटरी, किसी रोजगार, बच्चों, या दूर से आने वाले द्रव्य के विषय में।

(५२) शारीरिक रोग या मृत्यु के विषय मे—खोई हुई, छिपी हुई वस्तु की बाबत, नौकर, लाल कपड़ा, गरम भोजन, डाक्टर वैद्य 'यमराज' या सर्प विषयक प्रश्न।

(५३) किसी उच्च पद के विषय मे—राजा या तत्सदृश पदाधिकारी, मृत सिंह या खोये हुए सोने के विषय में।

(५४) सांघातिक भयानक रोग के विषय मे, कष्ट की परिस्थिति मे, किसी स्त्री के विषय मे—पत्नी, कन्या, किसी वादे या इकरार नामे की बाबत—चहारदीवारी सम्बन्धी प्रश्न।

(५५) मृत्यु के विषय मे, किसी खोये हुए कागज या गलत जगह पहुँचे हुए सन्देश के विषय मे—किसी नयी उम्र की लड़की, जन समूह या मित्र के विषय मे।

(५६) समुद्र पार विदेश सम्बन्धी-समुद्र यात्रा के विषय में, धार्मिक सम्मेलन, प्रकाशन, जहाज़ या भूत के विषय मे।

(५७) किसी खज़ाने, भडार या प्राप्त धन-राशि के विषय में किसी विरासत, पेशन या पुरुष-सम्बन्धी की बाबत।

(५८) वकील, जज, गुरु, पुरोहित, शास्त्र, वेद, ब्राह्मण, व्यक्तिगत जायदाद, व्यक्तिगत प्रभाव या प्राप्ति के विषय मे।

(५९) मृत्यु-गृह, अस्पताल, रोगी का कमरा, बच्चा, घर मे जलती हुई अग्नि—किसी साहस या उद्योग सम्बन्धी प्रश्न।

०) किसी पारसी के विषय मे, धार्मिक सस्कार–विदेशी नृप, ऋषि, समाधि, ब्रह्म, आकाशस्थित सूर्य, ईश्वर तथा काल विषयक प्रश्न ।

((६१) भोजन या खाद्य विषयक प्रश्न, व्यापार, उत्तम वस्त्र, पुरुष-मित्र, व्यापार स्थान या बाज़ार नौकर या वैष्णव ब्राह्मण विषयक प्रश्न ।

(६२) किसी लेख या इकरारनामे के सम्बन्ध मे—किसी वादे कार्य भार या माहिदे की बाबत-कानूनी कार्यवाही, पद, मिल्कियत या पिता विषयक प्रश्न ।

(६३) मृत स्त्री से सम्बन्धित-खोई हुई जायदाद या वस्तु के बारे मे । कफन का वस्त्र—क्षीणचन्द्र—स्त्री का दहेज (स्त्रीधन), स्नान सम्बन्धी प्रश्न ।

(६४) अपनी पद—स्थिति सम्बन्धी प्रश्न । प्राप्त जायदाद के विषय मे, विरासत, वृद्ध मनुष्य, सौदा या वस्तु-परिवर्तन, समय की अवधि सम्बन्धी प्रश्न ।

(६५) छोटी यात्रा और उससे लौट आने के विषय का प्रश्न—जाना और आना—पैदल यात्रा—बन्दकमरा—सुखद कमरे मे रहना बहिन, अथवा मत्र के विषय मे ।

(६६) श्मशान—पर्वतीय स्थल या स्थान—खनिज पदार्थ, वैद्य, मृत मित्र, जलता हुआ घर, सूखी भूमि या रेत विषयक प्रश्न ।

टिप्पणी 'सेफेरियल' ने मत्र, ईश्वर, ऋषि, ब्रह्म, वैष्णव ब्राह्मण, समाधि, गुरु, पुरोहित, यम, वेद, शास्त्र आदि शब्दों का प्रयोग किया है—जिस से यह निस्सन्देह प्रमाणित होता है कि इस प्रकरण का विषय शुद्ध संस्कृत शास्त्रों से संकलित है ।

(६७) मृत राजा, खोया हुआ सोना, स्त्री का दहेज, करधनी, बीमार बच्चे से सम्बन्धित प्रश्न।

(६८) छोटी (कम उम्र की) कन्या के सम्बन्ध मे—कुटुम्ब सम्बन्धी, विश्वास योग्य पद या जमानत सम्बन्धी प्रश्न।

(६९) वस्त्र, नौका, जहाज सौदागरी का सामान, भोजन की वस्तुएँ, व्यापार, वेदाग या व्यापार सम्बन्धी।

(७०) पत्नी सम्बन्धी प्रश्न, इकरारनामा, जनता के एकत्रित होने का स्थान, पूर्णचन्द्र सम्बन्धी प्रश्न।

(७१) जलपात्र या 'कुम्भ' विषयक प्रश्न। किसी पुराने परिचित जन या स्थान, या मित्र के सम्बन्ध मे। अन्य लोगो से अपने सम्पर्क के विषय में।

(७२) धन के विषय मे—किसी रईस मित्र, ब्राह्मण, धार्मिक सम्मेलन खडाऊँ या अन्य जोड़े (दो वस्तु मिलाकर पूर्ण होने) वाले पदार्थ के विषय में।

(७३) भाई, पद, किसी शासक की मृत्यु, शीघ्रयात्रा, क्रोधयुक्त सन्देश सम्मान-प्रतिष्ठा, उत्तराधिकार अथवा लिखने के विषय मे।

(७४) चमकते हुए सूर्य के विषय में, गर्विता पत्नी, शक्ति सम्पन्न शत्रु, आखेट, नेत्र ज्योति, या किसी चमकीले पदार्थ के विषय मे।

(७५) खुशनुमा स्थान, सम्पन्न जमीदारी, मोक्ष, दफ़ीना (पृथ्वी के अन्दर द्रव्य राशि), गाय-भैस आदि जानवरों के विषय मे।

(७६) पुत्र, विद्यास्थान, पाठशाला स्कूल, नव परिणीता वधू या

सेफ़ेरियल ने 'वेदांग' 'कुंभ, मोक्ष, ब्रह्मचारी, धोती आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

ब्रह्मचारी विषयक प्रश्न।

(७७) सफेद पगडी या साफा, नौकरानी, औषधि, जल या पीने के सम्बन्ध में।

(७८) किसी वृद्ध मित्र, सस्था, प्रचीन सम्बन्ध, अस्पताल या कारागार स्थित मनुष्य के विषय मे।

(७९) अपने विषय मे—वृद्धि और समृद्धि विषयक प्रश्न—पद, शक्ति पैर, खडाऊँ। किसी वस्तु को अति सीमा विषयक या जज, वकील या समझ के विषय मे।

(८०) लाभ, हानि की आशका, अग्नि से हानि, विदेश की भूमि—दूर स्थान से मृत्यु, प्रलय,[१] यात्रा सम्बन्धी प्रश्न।

(८१) किसी धनिक सम्बन्धी के विषय मे, उत्तम वस्त्र, सुनहरी आभूषण, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पके फल के सम्बन्ध मे।

(८२) शातिमय मृत्यु, बहुमूल्य दहेज, हर्ष समाचार, हाथी की सवारी, लाभ के लिये यात्रा या वहिन के विषय मे।

(८३) व्यापार सम्बन्धी। सन्धि या इकरारनामा सम्बन्धी प्रश्न, जायदाद का ठेका या किराये पर देना—रास्ता या फाटक, नव विवाहित वधू या सगाई के सम्बन्ध मे।

(८४) कन्या के विषय मे। तालाब या स्नान स्थान, जनमहोत्सव, दुर्गा, छुट्टी, साफ वस्त्र, प्रिय पात्र के विषय मे।

नाम के अक्षरों से जय—पराजय ज्ञान

प्रत्येक नाम की सख्या वनाकर यह निश्चित करना कि दो व्यक्तियो मे से किसकी हार और किसकी जीत होगी—इस विषय

१. सेफेरियल ने 'प्रलय' 'दुर्गा' आदि संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है The Kabala of Numbers पृ० १४६

में कई प्राचीन विद्वानों ने नाम के अक्षरों से जय-पराजय चक्र बनाने का प्रकार बताया है। "समरसार" नामक संस्कृत ग्रंथ के आधार पर कुछ चक्र नीचे दिये जाते हैं।

१. जय पराजय चक्र

५	५	३	३	३	६	६	८	८	८	९
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०

जिन दो व्यक्तियों के विषय मे विचार करना है—उनके नामाक्षरों की संख्या बनानी चाहिए।

(क) उदाहरण के लिए—

राम=र्+आ+म्+अ=३+५+५+५=१८

रावण=र्+आ+व्+अ्+ण्+अ=३+५+३+५+५+५=२६

इस प्रकार दोनों नामों की संख्या बना लेने पर २ से भाग देना। यदि दो का भाग देने पर दोनों में ० शेष आवे—अर्थात् कुछ नही बचे तो या दोनों में '१' एक शेष आवे तो समझना कि दोनों पक्ष प्रायः समान बली है। अन्तिम विजय किसकी होगी यह विचार करने के लिए अन्य प्रकार बताए जावेगे। यदि २ का भाग देने से एक नाम के अक्षर की सख्या में १ बचे और दूसरे नाम की संख्या में ० बचे तो 'जिसके नामाक्षर—संख्या में '१' बचे उसकी विजय (जीत) होगी।

उपर्युक्त उदाहरण मे संख्या १८ तथा २६ आई है। २ से भाग

देने से दोनों मे ही ० बचा। इस कारण दोनों पक्ष बली हैं। काफी लम्बी लडाई होगी, यह निष्कर्ष निकालना चाहिए।

(ख) जब इस प्रकार से कोई निर्णय न हो सके तो दोनों सख्याओ मे ८ का भाग दे। जिस सख्या मे अधिक शेष बचे उस सख्या वाले व्यक्ति की विजय होगी।

उदाहरण के लिए १८ तथा २६ इन दोनो मे ८ का भाग दिया दोनों मे '२' शेष बचा। इस प्रकार से भी यही निर्णय आया कि दोनो पक्ष समान बली है। अन्तिम विजय के निर्णय के लिए आगे के चक्रो से सहायता लेनी चाहिए।

२. जय पराजय चक्र

६	३	२	४	८	६	९	४	३	०	१
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०

सर्व प्रथम न० १ के चक्र से जय—पराजय का विचार करना चाहिए। उससे कोई निर्णय स्पष्ट न आवे तब इस द्वितीय चक्र की सहायता लेना उचित है।

राम = र् + आ + म् + अ = २ + ३ + ६ + ६ = १७

रावण = र् + आ + व् + अ + ण् + अ = २ + ३ + ८ + ६ + ३ + ६ = २८

यदि दोनो संख्या १२ से अधिक हो तो दोनो में से बारह बारह घटावे और शेष मे आठ का भाग दे। जिसका शेष अधिक हो उसी की विजय होती है। उपर्युक्त उदाहरण मे राम की संख्या

बनी १७ और रावण की २८। दोनो मे १२ घटाये तो संख्या रही ५ तथा १६। इनमे पृथक् पृथक् ८ का भाग दिया तो शेष रहा ५ तथा ०। राम की सख्या में शेष '५' रावण की सख्या मे शेष ० से अधिक है, इस कारण राम की विजय हुई।

३. जय पराजय चक्र

८	४	६	५	७	१	३	२
अ आ इ ई	क	च	ट	त	प	य	श
उ ऊ ऋ ॠ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
ऌ ॡ ए ऐ	ग	ज	०	द	ब	ल	स
ओ औ अं	घ	झ	०	ध	भ	व	ह
अः	ङ	ञ	ण	न	म	०	०

यदि उपर्युक्त प्रथम तथा द्वितीय चक्रों मे वर्णित प्रकारो से कोई निर्णयात्मक उत्तर न आवे तो इस तृतीय चक्र से विचार करना चाहिए।

दोनो नामों मे अक्षरो की संख्या बनाकर पृथक् पृथक् ७ का भाग देना चाहिए। जिसके नाम की संख्या मे शेष अधिक रहे उसी की विजय होगी।

उदाहरण के लिए राम=र्+आ+म्+अ
=३+८+१+८=२०
रावण =र्+आ+व्+अ+ण्+अ
=३+८+३+८+४+८=३४

दोनो मे ७ का भाग दिया। शेष दोनों मे ही ६ बचा। इसका अर्थ है कि दोनो मे युद्ध-बल बराबर है।

इस प्रकरण मे राम और रावण दो प्रसिद्ध योद्धाओ के नाम उदाहरण के लिए ले लिये गए है। प्राचीन ऐतिहासिक [illegible]

जब कोई समस्या सामने हो तब शुद्ध और निर्मल चित्त से निर्णय के लिए इन चक्रो का प्रयोग उचित ह ।

यदि प्रश्न करने वाला शुद्ध चित्त से ज्योतिषी के पास जाकर आदरपूर्वक प्रश्न करे कि "अमुक स्त्री के पुत्र होगा या कन्या होगी" तब तो प्रश्न का फल मिलेगा। यदि किसी ६० वर्ष की वृद्धा स्त्री का नाम लिखकर पूछे 'इसे' कन्या होगी या पुत्र तो फलादेश नही मिलेगा। किसी भी प्रश्न के लिए नक्ष नाम, राशि या कुण्डली का विचार हो या सख्या या अक-ज्योतिष से विचार करना हो, तो मन मे आस्तिक बुद्धि आवश्यक है। भूतकाल के, उपहास (हँसी मजाक) या परीक्षा के लिए किए हुए प्रश्न ठीक नही बैठते। केवल भविष्यविषयक प्रश्नो के लिए ही उपर्युक्त चक्र काम मे लाने चाहिए।

टिप्पणी—सेफेरियल नामक अंग्रेज ज्योतिषी ने अपनी पुस्तक (The Kabala of Numbers) के पृष्ठ १४८—१५३ में खोयी हुई वस्तुओ का पता लगाने के लिये १ से ८४ तक के अंकों का फलादेश दिया है।

प्रश्नविषयक विशेष ज्ञान के लिए निम्नलिखित ग्रंथ देखने चाहिए : १. प्रश्न वैष्णव २. प्रश्न भैरव ३. केरल प्रश्न सग्रह ४. केरलीय प्रश्न रत्नम् ५. प्रश्न पयोनिधि ६. प्रश्न भूषण ७. प्रश्न कौमुदी ८. ताजिक नीलकठी (प्रश्न तत्र) ९. प्रश्न चूड़ामणि। १०. केवल ज्ञान प्रश्न चूडामणि : ११. प्रश्न मार्ग, १२. प्रश्न चडेश्वर, १३. षट् पचाशिका, १४. भुवनदीपक, १५. उत्तर कालामृत आदि।

अक-ज्योतिष विज्ञान का सार वहुत-से ग्रन्थो से लेकर ऊपर दिया गया है। जो शुद्ध ज्योतिष का विषय है वह इन ग्रथो के अवलोकन से ज्योतिषियो को विशेष उपयोगी होगा।

No. D—2635/50

20 Akbar Road,
New Delhi, the Ist August, 1950

Dear Mr. Ojha.

*   *   *   *

I have jotted such important events as may help you in your astrological research You will note that the most important events of my life have occurred in the months of February or March, and also in the month of November.

Thanking you.

Yours sincerely.
(G. V. Mavalankar).

To
Shri Gopesh Kumar Ojha, M.A., LL. B.,

उपर्युक्त पत्र मे ४३ से अधिक पंक्तियाँ हैं। केवल अंतिम ४ पंक्ति यहाँ दी गई हैं। (देखिये पृष्ठ १५६)

स्वर्गीय षण्मुखम चेटी (फाइनेंस मिनिस्टर गवर्नमेण्ट आफ इंडिया) के पत्र का एक अश नीचे दिया जाता है।

5 QUEEN VICTORIA ROAD
NEW DELHI
7th October 1947

*   *   *   *

I must thank you for the interest that you have taken in my career

Yours Sincerely.
(R. K. Shanmukham Chetty)

Mr. Gopesh Kumar Ojha

उपर्युक्त पत्र लम्बा है। केवल अतिम अंश दिया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट पुरुषो की जीवनी का उल्लेख किया जा सकता है। परन्तु बहुत से सज्जन नही चाहते कि उनके जीवन की घटनाओ पर, मुद्रित पुस्तक मे प्रकाश डाला जावे।